

रुकीहे स्लाम, जानशेने मुफ्ती आजम हिन्द ताजुशरीया
हजरत अल्लामा अल्हाज अल्शाह

मुफ्ती मोहम्मद अख्तर रज़ा खां कादरी
अज़हरी के हालाते ज़िंदगी पर मुशतमिल



ला जवाब किताब

हयाते ताजुशरीया

जदीद
इज़ाफ़ा

मुसन्नीफ़

मौलाना मोहम्मद शहाबुद्दीन रज़वी

प्रकाशक

स्लामिक रिसर्च सेन्टर

58, कसगिरान, सौदागिरान, बरेली शरीफ यू०पी०

तकसीमुकार: **ग़रीब नवाज़ अक़ेडमी**, आनंद विहार, देहली रोड, बरेली शरीफ

Mobile: 9927506409, 9837207863, 9868436228

1
हालात ज़िन्दगी जानशीन-ए-हुज़ूर मुफ्ती आजम
ताजुशरीआ इज़रत अल्लामा
मुफ्ती अख्तर रज़ा ख़ॉं अज़हरी
दामत बरकातोहुमुलआलिया

हायात ताजुशरीआ

मुसन्निफ
मौलाना मुहम्मद शहाबुद्दीन रज़वी

کتاب کی تصنیف

ناشر

इस्लामिक रिसर्च सेन्टर

58-कसगरान,सौदागरान बरेली शरीफ

जुमला हुक्क बहक्के नाशिर महफूज हैं

नाम किताब : हयात ताजुशरीआ (अल्लाम अखतर रज़ा ख़ाँ अज़हरी)

मुसन्निफ : मौलाना मुहम्मद शाहाबुद्दी रज़वी

तर्जमा व कोम्पोजिंग : मौलाना मुहम्मद शफीकुल हक रज़वी

मुबाइल न.9997662550

तहरीक : मौलाना आलहाज़ मुहम्मद सईद नूरी, रज़ा एकेडमी मुम्बई

बएहतिमाम : हाफिज़ गुलाम मुहयुद्दीन रज़वी हश्मती

साले इशाअत : अब्बल फरवरी 2008 / सफरुलमुजफ़र 1429 हिजरी

इशाअत दोम: दिसम्बर 2013 सफरुलमुजफ़र 1434 हिजरी

नाशिर: अब्दुल हफीज़ नूरी, हाफिज़ आमिर रज़ा कादरी

सफ़हात 232

कीमत : 130 / रुपये

मिलने का पता

इस्लामिक रिसर्च सेन्टर

58-कसगरान, सौदाशिन बरेली शरीफ यूपी

E-mail: mrazvi.razvi@gmail.com

www.alahazratbooks.com

Mob: 09897385339, 08923721109

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हर्फ़ आगाज़

काम वह ले लीजये तुम को जो राजी करे

ठीक हो नामे रज़ा तुम पे करोड़ो दुरुद

राकिमुस्सुतूर को पीरे तरीकत मुरशिदे बर हक

आरिफ़ बिल्लाहि ताजुशरीआ फकीह-ए-इस्लाम

जानशीन-ए-हुज़ूर मुपती-ए-आज़म काजियुक्कुज़ात

फिलहिन्द नबीरा-ए-आला हज़रत अल्लामा मौलाना

अलहाज़ अश्शाह मुपती कारी मुहम्मद इस्माईल रज़ा उर्फ़

मुहम्मद अख़रत रज़ा ख़ाँ कादरी अज़हरी दामत बरकातोहुमुल

आलिया की सब से पहले जियारत का शर्फ़ उर्स रज़वी

25 / सफरुलमुजफ़र 1402 हिजरी 1981 ई. के मौका पर

हासिल हुआ। मैं अम्मे मोहतरम मौलाना हाफिज़ बशारत

अली रज़वी इमाम व खतीब जामेअ मस्जिद चन्दरपुर के

हमराह बरेली शरीफ हाज़िर हुआ था। उसी मौके पर मुझे

हज़रत से बैत व इरादत का शर्फ़ भी हासिल हो गया।

हज़रत ने शज़रा मुबारका पर अपने दस्ते मुक़द्दस से तीन

जगह नाम तहरीर फरमा कर अता फरमाया था।

हज़रत कियला की शख़्सियत कोई मोहताजे तआरुफ़

व बयान नहीं, अल्लाह तआला ने आप की जाते बा बरकत

को बैनलअक्वामी सतह पर गरज-ए-ख़लाइक बना दिया

है, तिशनिगाने उलूम व मअरफ़त आप से आ कर इक्तिसादे

फ़ैज़ हासिल करते हैं। आप की जाते गिरामी उन नुफ़से

कुदसिया में से है जिन की इलमी शौकत व जलालत अजमत व बुजुर्गी, तक्वा व तहारत, मुसल्मिस्सुबूत के दर्जा पर फाइज है। आप के फजाइल व कमालात, उलूम व फुनून खिदमात व कारनामे और जोहद व तक्वा का डंका शश जिहालते आलम में बज रहा है।

अलहम्दु लिल्लाह मेरी जिन्दगी के इन्तिहाई मुबारक व मसऊद अय्याम हैं कि उस हकीर को अपने मुरशिदे गिरामी की मुईत में सफर व हजर और शब व रोज रहना नसीब हुआ है। और बहुत करीब से आप के मामूलात व मशगूलात देखने और इरशादात सुनने का मौका हर रोज मिलता है। बिला शुबह आप की पूरी जिन्दगी शरीअत व तरीकत और सुन्नत नबविया (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के सांचे में ढली हुई है। मैंने अपनी 35/साला जिन्दगी में जिन अस्ताफ की जियारत की, और उनके साथ कुछ लमहात गुजारने का मौका मिला, और जिन की विलायत व बुजुर्गी, तक्वा व परहेजगारी की कस्म खाई जा सकती है। इस मुबारक जमाअत औलिया, उलमा व मशाइख के सरखील व सरदार ताजुशरीआ अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद अखतर रजा कादरी अजहरी बरेलवी हैं। मैंने हजरत से सूरए फातिहा की तफसीर, अलकयूबी, अलअशबाह वन्नाजाइर, दलाइलुलखैरात शरीफ, कसीदा बुर्दा शरीफ, और बुखारी शरीफ वगैरा कुतुब भी पढ़ी हैं। मेरे लिए काबिले फख की बात यह है कि मेरे साथ हजरत किब्ला और हुजूर पीरानी अम्मा साहिबा की बेकरी शफकत व मोहब्बत और उलफत

व मुरव्वत रहती है। हजरत के साहबजादे गिरामी मेरे हमदर्स रफीक और पीर जादे हजरत मौलाना अस्जद रजा खॉ कादरी और आप की शरीके हयात मोहतर्मा राशिदा नूरी साहिबा (भाबी जान साहिबा) की सरपरस्ती व दुआयें हमारे वक्त मुझे हासिल हैं। जो कुछ भी मैं दीन-ए-इस्लाम की खिदमत अन्जाम दे रहा हूँ यह सब इन हजरात बाबरकात की दुआये सहरगाही और सरपरस्ती का नतीजा है। अल्लाह तआला इस खानवादे को हजारों हजार साल सलामत रखे, और मुआनिदीन व हासिदीन से महफूज व मामून रखे (अमीन) जिन्होंने आज के तरक्की याफता दौर में खुर्दनवाजी की एक बेहतरीन मिसाल काइम की है।

राकिमुस्सुतूर ने 1989 ई. में हजरत किबला से वक्तन फौकतन हालात दरयाफत किए थे, वह इस वक्त तरतीब दे कर अपनी किताब 'मुफ्ती-ए-आजम और उन के खुलफ' जिल्द अख्ल (मतबूआ रजा एकेडली मुम्बई 1990ई.) में शामिल कर दिए थे। मगर चन्द सालों से अकसर यह दिल में उमंग उठती थी कि हजरत के तफसीली हालात मुरत्तब करूँ, मगर कौमी व मिल्ली मसरूफियात और जिम्मादारियाँ की वजह से वक्त नहीं निकाल पाता था। अल्लाह भला करे आली जनाब अल हाज अब्दुर्रहमान ताबानी व जनाब अब्दुल्लतीफ रजवी (ओहदेदारान आलइन्डिया जमाअत-ए-रजा-ए मुस्तफा शाख मालीगों जिला नासिक) का, उन्होंने फौन पर फौन कर

के मुझे लिखने पर मजबूर कर दिया। अलहम्दु लिल्लाह यह जेरे नजर किताब सिर्फ एक हफ्ता की मेहनत में तैयार हो कर आप के हाथों में है। अब कारनामों और खुलफा व तलामिजा पर मबसूत अन्दाज़ में लिखूंगा। कारेईन से दुआ की दरखास्त है।

आखिर में उस्ताज़ गिरामी मुहविक अज़ हज़रत अल्लामा मुफ्ती सय्यद शाहिद अली रज़वी मददजुल्लाहुल आली(काज़ि-ए-शरअ व मुफ्ती शहर रामपुर)का ममनून हूँ कि आप ने नजरे सानी के साथ बहुत जगह इस्लाह फरमाकर हौसला अफजाई फरमाई। हमदर्द कौम व मिल्लत हज़रत मौलाना अलहाज़ मुहम्मद सईद नूरी का भी मशकूर हूँ, और मौलाना अमीनुलकादरी कि उन्होंने तस्हीह की जिम्मेदारी बखुबी निभाई। अल्लाह तआला सभी को खिदमत दीन-ए-इस्लाम और मसलक अहले सुन्नत की मजीद तौफीक अता फरमाये और बारगाहे मुरशिद में यह हकीर सा नज़राना अकीदत व मोहब्बत कबूलियत से सरफराज़ हो जाये। (आमीन)

सगे आस्ताना-ए-रज़विया

मुहम्मद शहाबुद्दीन रज़वी

(14/शअबानुल मुअज़्ज़म 1428 हिजरी/28अगस्त2007ई)

डाइरेक्टर इस्लामिक रीसर्च सेंटर

कौमी जन्वल सिक्रेट्री

अलइन्डिया जमाअत-ए-रज़ा-ए-मुस्तफा

तकदीम

अज़: मुहविक अज़ हज़रत अल्लामा मुफ्ती सय्यद शाहिद अली हसनी रज़वी मुहदिदस रामपुरी

मर्कज़ी इल्म व इरफान बरेली शरीफ और खानवादा

—ए-रज़विया तैरहवी सदी हिजरी में मुजाहिद जंग आजादी इमामुलउलमा मुफ्ती मुहम्मद रज़ा अली खाँ नवशबन्दी बरेलवी (1286 हिजरी)उनके फरज़न्द सईद इमामुल मुतकल्लिमीन मुफ्ती मुहम्मद नकी अली खाँ कादरी बरेलवी(1297हिजरी)चौदहवी सदी हिजरी में इमामुलउलमा के पोते और इमामुलमुतकल्लिमीन के नूरे नज़र लखते जिगर, फरज़न्द सईद,इस्लाम के बतले जलील,हुज्जतुल अख़, फरीदुदहर,यगाना-ए-अज़,आशिके रसूल,चौदहवी सदी हिजरी के मुजदिददे आजम, आला हज़रत,इमाम अहमद रज़ा खाँ कादरी बरेलवी कुददुस सिरुहुम(1921ई/1340)की इल्मी,दीनी,इशकी और फिक्री अबकरियत,तजदीदी कारनामों और लाज़वाल खिदमत मकबूला के सबब पूरे आलम-ए-इस्लाम में मशहूर व मअरुफ है। गैर मुन्कसिम हिन्दुस्तान में अपनी इल्मी व रुहानी खिदमत,दीनी कियादत और मुतावातिर फिक्री वरासत की हिफाज़त और तब्लीगी व इशाअती लिहाज़ से देहली के मशहूर खानदान वलियुल्लाह से भी ज्यादा नुमायाँ और महबूब व मकबूल खानवादा है। इन दोनों खानवादों की खिदमत जलीला बरें सगीर की इस्लामी तारीख का निहायत अहम लाइक कद व मन्ज़िलत

और शान्दार व ताबनाक हिस्सा हैं। दोनों खान्दानों ने बरें सगीर ही नहीं बल्कि पूरी इस्लामी दुनिया के मुसलमानों और अहले ईमान को मुतास्सिर किया है। दोनों खान्दानों में कई नसलों और पुशतों पर मुहीत इल्मी व दीनी खिदमात का एक ऐसा तसलासुल मौजूद है जो दूसरे खान्वादों में बहुत कम पाया जाता है।

खान्दाने वलियुल्लाह जिस के खियालात व नजरियात को "फिक्र वलियुल्लाही" के नाम से याद किया जाता है। यह खान्दान इमाम आजम अबूहनीफा का मुकल्लिद था, तसव्वुफ का इल्मबरदार था, अस्लाफे किराम की इकदार व रिवायात का वारिस व अमीन था। इस खान्दान के साहबजादगान, नबीरगान उनके सच्चे वारिस थे जो सब के सब सवादे आजम अहले सुन्नत के अकाबिर उलमा व मशाइख और सुफिया किराम की उसी रोश पुर काइम व दाइम रहे जो उन्हें बतौर वरासत मिली थी। सिवा-ए-मौलवी इस्माईल देहलवी के कि यह खान्दान वलियुल्लाह का बदनाम जमाना एक फर्द था। हजरत शाह वलियुल्लाह मुहदिदस देहलवी (1172 हिजरी 1762 ई) के नाफरमान व नालाइक पोते शाह मुहम्मद इस्माईल देहलवी (1246 हिजरी 1831 ई) फिक्री व ऐतिकादी या जमहूरे उम्मत के मुतवारिसात व राइज इस्लामी अकाइद से मुतासादिम बहुत से अफकार व खियालात के सबब इस खान्दान के इल्मी व दीनी वकार और मकबूलियत को बड़ा नुकसान पहुँचा और इस नंगे खान्दान शख्स ने अपने ही

बुजुर्गों से खुली बगावत कर दी, जिस से इस खान्दान की इज्जत व अजमत दागदार हो गई। फिर इस्माईल देहलवी के मानने वालों ने यह सितम भी किया कि हजरत शाह वलियुल्लाह मुहदिदस देहलवी उन के साहबजादगान और नबीरगान की तसानीफ व तालीफात में तहरीफ कर के उन के असल अकाइद व नजरियात और मामूलात को मसख कर दिया। और अपने नये नजरियात के मुताबिक बनाने की कोशिश की और "फिक्रे वलियुल्लाह" को "फिक्र इब्ने तैमीया" से जोड़ दिया फिर उस खान्दान में कोई ऐसा नुमाया आलिमे दीन भी पैदा न हुआ जो तहरीफात को असल अकाइद व नजरियात और मामूलात से अलग कर के "फिक्र वलियुल्लाह" को मुमताज और ताबनाक करता और असल "फिक्र वलियुल्लाह" को आगे बढ़ाता। लिहाजा रोज बरोज खान्दाने वलियुल्लाह की मकबूलियत और इन्फिरादियत गहनाती चली गई। और उस ने एक अलाहीदा रुख तै कर लिया।

जकि खानवादा-ए-रजविया में इमामुलउलमा के विसाल के बाद उन के फर्जन्द गिरामी इमामुलमुतकलिमीन मौलाना नकी अली खॉ कादरी बरेलवी और मौलाना हादी अली खॉ कादरी बरेलवी और उन के पोते आला हजरत इमाम अहमद रजा फाजिले बरेलवी कुददुस सिर्रहु दूसरे पोते उस्ताजे जमन अल्लामा हसन रजा खॉ कादरी बरेलवी और तीसरे पोते माहिर इल्म मीरास अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद रजा खॉ कादरी बरेलवी अलैहिमुर्रिजवान ने इस सिलसिला

को काइम रखा और उस में आला हजरत फाजिले बरेलवी ने मजीद वुस्अत अता कर के शोहरा-ए-आफाक और आलमगीर बनाया। आला हजरत के विसाल के बाद भी यह सिलसिला तसलसुल के साथ बिला इन्किताअ नुमाया इल्मी व दीनी शख्सियात का एक ऐसा आ दूट जरी सिलसिला है जो ता हाल वसीअ तर देराज है। उन शख्सियतों में (1) हुज्जतुल इस्लाम मौलाना मुफती मुहम्मद हामिद रजा खों कादरी बरेलवी(शहजादा-ए-अकबर आला हजरत, 1362 हिजरी 1943 ई।)(2) मुफती आजम मौलाना मुहम्मद मुस्तफा रजा खों कादरी बरेलवी(शहजादा-ए-असगर आला हजरत 1402 हिजरी 1981 ई।)(3) मुफस्सिर आजम अल्लामा इब्राहीम रजा कादरी खों कादरी बरेलवी(पोते आला हजरत 1385 हिजरी 1965 ई।) (4) अल्लामा हम्माद रजा खों रजवी बरेलवी(पर पोता आला हजरत म. 1375 हिजरी 1965 ई।) (5) रैहाने मिल्लत अल्लामा मुहम्मद रैहान रजा खों कादरी बरेलवी(पर पोता आला हजरत म. 1405 हिजरी 1985 ई।) (6) ताजुशरीआ, फकीहे इस्लाम अल्लामा मुफती मुहम्मद इस्माईल रजा खों अलमअरुफ ब मुफती मुहम्मद अखरत रजा खों कादरी बरेलवी अजहरी मद जुल्लाहुल आली (7) उस्ताजुल उलमा अल्लामा हसनैन रजा खों कादरी बरेलवी(दामाद व भतीजे आला हजरत, 1401 हिजरी 1981 ई।) (8) अमीन शरीअत अल्लामा सिबतैन रजा खों कादरी बरेलवी(पर पोते उस्ताजे जमन मद जुल्लाहुल आली) (9) सदरुल उलमा मुफती मुहम्मद तहसीन रजा खों कादरी

बरेलवी(उस्ताज जमन के पोते म 1428 हिजरी 2007 ई।) (10) अल्लामा मुफती मुहम्मद तकदुस अली खों कादरी बरेलवी, इब्ने मौलाना सरदार वली खों इब्ने मौलाना हादी अली खों इब्ने मौलाना रजा अली खों नवशबन्दी बरेलवी(पर पोते इमामुलउलमा 1408 हिजरी 1988 ई।) (11) मुफती ऐजाज वली खों रजवी बरेलवी इब्ने मौलाना सरदार वली खों(पर पोते इमामुलउलमा, म 1393 हिजरी 1973 ई।) अलैहिमुर्रहमा वरिजवान नुमाया नजर आते हैं।

फकीहे इस्लाम अल्लामा मुफती मुहम्मद इस्माईल रजा खों मारुफ ब ताजुशरीआ मुफती मुहम्मद अखरत रजा खों अजहरी कादरी बरेलवी इब्ने मुफस्सिर आजम अल्लामा मुहम्मद इब्राहीम रजा खों(हुज्जतुल इस्लाम के पोते, आला हजरत के पर पोते और मुफती आजम के नवासे) दामत बरकातुहुमल कुदसिया वलआलिया, मतउल्लाहुल मुस्लिमीन बतौल बका-इही-खास तौर से मुमताज हैसियत के मालिक हैं। इल्मी व रुहानी दुनिया में मुशारुन इलाहै व मोअतमिद और मुस्तनद मरजा अलमा व फुक्हा और मशाइख व सूफिया हैं। उन मजकूर बाला उलमा व मशाइख किराम ने खानवादा-ए-रजविया की पाकीजा और मुकद्दस रिवायात अकाइद व नजरियात और अफकार को जिन्दा व ताबन्दा रखा। दर्से रजा, फिक्हे रजा, इशके रेजा फिक्र रजा और अमले रजा से कौम को रोशनास किया और उन सब की तब्लीग व इशाअत में नुमाया किरदार अदा किया और खान्दाने रजा के इल्मी व दीनी पलैट फार्म से अपने अपने

आहेद में कौम व मिल्लत की भरपुर नुमाइन्दगी की और अपनी जर्री खिदमात से और ऐसी गैर मामूली शोहरत व मकबूलियत हासिल की जिस की नज़ीर आज की दुनिया में नहीं मिलती।

असे हाज़िर में आला हज़रत के उलूम व फनून के सच्चे वारिस, हुज्जतुलइस्लाम और मुफती-ए-आज़म के सही जानशीन, रुहानियत के ताजदार, मसन्द बरकातियत के रमजसनास, रजवियत के अमीन, ताजुशरीआ, फकीहे इस्लाम, काजियुलकुज्जात फिल हिन्द अल्लामा मुफती मुहम्मद अख़ारत रज़ा खाँ कादरी अज़हरी दामतबरकातुहुमुल कुदसिया हैं जो अहले सुन्नत व जमाअत की आलमी सतह पर इल्मी व दीनी, ऐअतिकादी व फिक्री कियादत व रहबरी फरमा रहे हैं। जिन के आफतावे शोहरत व इकबाल की किरनें सारे आलम को रोशन व मुनव्वर कर रही हैं। खान्दाने रज़ा के यह तमाम मुतक़दिदमीन व मुताअख़िरीन उलामा व मशाइख़ तीन औसाफ़ में इम्तियाज़ी मक़ाम रखते हैं। (1) इश्क़े रिसालत (2) तहफ़फ़ुज व इशाअत इस्लाम व सुन्नियत (3) और फ़िक्ह व इफ़ता के जरीआ खिदमत। यह तीन ऐसे औसाफ़ हैं जो खान्दाने रज़ा के अफ़ाराद में क़दे मुश्तरक की हैसियत रखते हैं।

फकीर नूरी के मुरशिद व मुरब्बी शरीअत व तरीक़त और उस्ताज़ गिरामी वकार हज़रत ताजुशरीआ मद् जुल्लाहुल आली में यह तीनों खान्दानी औसाफ़ व दर्जा-ए-अतम मौजूद हैं और इस वक़्त आप ही इस खान्दान की

इल्मी व रुहानी वरासत को आगे बढ़ा रहे हैं। सन्ने ईसवी के लिहाज़ से आप अपनी उम्र मुबारक की (72) बहत्तरवी मन्ज़िल तै कर रहे हैं।

हज़रत ताजुशरीआ मद् जुल्लाहुल आली ने एक ऐसे इल्मी, रुहानी और मजहबी घराने में आँखें खोलीं कि जिस में कई पुश्तों से इल्म व इरफ़ान और रुशद व हिदायत का सिलसिला काइम व जारी था। उन अस्ताफ़े किराम के उलूमे नाफ़िआ और आमाले सालिहा का पाक वर्सा यक़े बाद दीगरे मुन्तक़िल होता रहा जिन की हक़ गोई, हक़ शनासी, ज़ुरअत व बेबाकी और इश्क़े रसूल में सरशारी व जानिसारी, मग़रूराने तख़्त व ताज और बन्दगाने माल व जाह के मुकाबिले में इस्तिग़ना व बे नियाज़ी उन्हें अपने इस्लाफ़ के वर्सा में मिली थी। आप की विलादत के वक़्त पर दादा आला हज़रत और जदे अमजद हज़रत हुज्जतुलइस्लाम विसाल फरमा चुके थे। वालिद माजिद मुफ़स्सिरे आज़म की उम्र का 36वाँ साल था जिन की दर्स व तदरीस का चढ़ता सूरज पूरे शबाब पर था। दूर-दूर से तिशनिगाने इल्म व फज़ल परवाना वार हाज़िर हो कर दर्स मुफ़स्सि-ए-आज़म में शरीक हो रहे थे।

नाना जान हज़रत मुफ़ती आज़म जो अपने वक़्त के फ़र्दे फ़रीद, उलूमे नक्विलया के ताजदार, उलूमे अक्विलया के ग़व्वास, मैदाने फ़काहत के शहसवार और मैदाने सियासत के इल्मबरदार थे, अर्ब व अज़म में उनकी धूम थी, सारे ज़हान में उन का चर्चा था, इल्म व फज़ल का आफताब रोशन था, यह

इल्म व इरफान के बहर नापैदा किनारे थे, जिन की न जाने कितनी मौजें थीं, वह एक कारखाना थे, जहाँ पुर्जे नहीं ढलते, शख्सियत साजी होती थी, उस रौशन और शख्सियत साज माहोल में हजरत ताजुशरीआ का अहदे तिफली शुरू हुआ। हजरत ताजुशरीआ को पीरे मजाज जुबदतुस्सादात अहसनुलउलमा हजरत अल्लामा सैद हैदर हुस्न कादरी बरकाती नूरी (1995 ई) का ईकान और नामूर नाना जान हजरत मुफती आजम का शोहरा आफाक ईमान मयस्सर आया। होश की आँखें खुली तो हर तरफ कुरआन व सुन्नत की हुक्मरानी नजर आई। फिकह हन्फी का सिक्का चलते देखा, दीन मतीन और अजमते रसूल की हिमायत, अल्लाह और उसके रसूल के दुश्मनों की अदावत में अपने नाना जान और वालिद माजिद को यक्ता-ए-रोजगार पाया।

हजरत ताजुशरीआ ने अपने वालिदैन, दारुलउलूम मन्जर-ए-इस्लाम और जामिआ तुलअजहर काहिरा मिस्र में मुख्तलिफ असातिजा किराम से तालीम व तरबियत पाई और सन्द व दस्तार से सर फराज हुये। जामिआ अजहर में हुसूल इल्म के दौरान ही वालिद माजिद हजरत, मुफत्सिर आजम का विसाल हो चुका था, तीन साल के बाद जामिआ अजहर मिस्र से वापस हुई। बरेली शरीफ में हजरत मुफती आजम की सर परस्ती में तारीखी इस्तिकबाल हुआ। वापसी के बाद 1967 ई में अपने मादर इल्मी, यादगार रजा, मरकज इल्म व इरफान, जामिआ रजविया, "मन्जर-ए-इस्लाम" में दर्स व तदरीस का सिलसिला शुरू फरमाया। आज दर्स व

तदरीस का तअल्लुक उन के जिस्म से नहीं बल्कि उन की रूह से है, दर्स तदरीस उन की रूहानी गिज़ा है। ग्यारह साल बाद आप के बरादरे अकबर हजरत रैहाने मिल्लत ने दारुलउलूम "मन्जर-ए-इस्लाम" के सदरुलमुदरिसीन की जिम्मेदारी आप के कांधों पर डाल दी। आप ने इस मन्सब की जिम्मेदारियों को हुस्न व खुबी के साथ निभाते हुये तालीमी व तन्जीमी एतिबार से दारुलउलूम की शोहरत और कबूलियत का पाया बहुत बलन्द फरमा दिया। मसरुफियत का दाइरा बसीअ तर होता चला गया तो बाज़ाब्ता दर्स व तदरीस का सिलसिला मुम्किन नहीं रह सका। तब आप ने अपने दौलते कदा पर मखसूस औकात में दर्स कुरआन व हदीस की महफिल सजादी। यहाँ दर्स व तदरीस की इफादियत इतनी बड़ी और मकबूल व मअरुफ व मशहूर हुई कि इस हल्का-ए-दर्स में शर्फ तिलमिज पाने और जानवे तिलमिज तह करने के लिए तीन तीन जामिआत मन्जर इस्लाम, मज़हरे इस्लाम और जामिआ नूरिया के तलबा की बड़ी तादाद जमा हो गई। खल्मे बुखारी शरीफ तदरीस की ऊँची मन्ज़िल है। आप ने यह काम भी बहुत हुस्न व खुबी से अन्जाम दिया। इफितताह बुखारी फिर खल्मे बुखारी शरीफ का सिलसिला अहले सुन्नत के मदरिस में शुरू हुआ तो बढ़ता ही चला गया। मर्कजी दर्सगाह अहले सुन्नत अलजामिअतुलइस्लामिया गंज कदीम रामपुर में सर परस्त आला की हैसियत से 33 साल के अर्से में मुतअदिद बार फकीर नूरी और इन्तिजामिया की दअवत, असातिजा व

तलबा की ख्वाहिश पर जलवा बार होकर इमि, तताहे बुखारी और खत्मे बुखारी की महफिलों को रौनक बख्शी, उलमा व तलबा और अवांम व खास के बीच इल्मी गोहर लुटाये और फौज व करम की मुसलाधार बारिश से दिलों की सुखी खेती को हरयाली बख्शी। ऐसा लगता था कि इमाम बुखारी और इमाम मुस्लिम की महफिलों को जानशीन की हैसियत से संवार रहे हैं। अपने जदे, आला आला हज़रत जदे अमजद हुज्जतुल इस्लाम, वालिद माजिद मुफर्रिसर आजम और नाना जान मुफ्ती आजम, अपने असातिजा हज़रत बहरूलउलूम दगैरहुम की तालीमी व तदरीसी यादों को ताजा कर रहे रहे हैं। जामिआ फारुकिया बनारस में "साहिब बुखारी और बुखारी" की आखरी हदीस पर ढाई घन्टा तकरीर फरमाई और दारुलउलूम "जियाउलइस्लाम" हावड़ा में खत्मे बुखारी के मौके पर अल्लामा अरशदुलकादरी, अल्लामा गुलाम आसी, अबूलउलाई अजीजे मिल्लत मौलाना अब्दुलहफीज अजीजी और दर्जनों उलमा की मौजूदगी में आखिरी हदीस पर सैर हासिनल गुप्तगु की। आप का तअल्लुक जिस अजीम खानवादा-ए-रजविया से है इस खान्दान का मा बिहीलइम्तियाज वसफ फतावा नवैसी है।

खान्दान का मूरोसी जंगी मिजाज उलूम दीनिया की तरफ मोड़ने में इमामुलउलमा मुफ्ती रज़ा अली खाँ नवशबन्दी बरेलवी ने अहम किरदार अदा किया, फन्ने सिपाह गरी के महबूब मशगला को तर्क कर के फतवा नवैसी को इख्तियार करने का सेहरा आप ही के सर बंधता

है। आप के दो फरज़न्द हुये, मुफ्ती नकी अली खाँ और मौलाना तकी अली खाँ। मुफ्ती नकी अली खा ने उलूमे दीनी में कलाम हासिल किया और फतावा नवैसी शुरू की, उसे भी कमाल तक पुँचाया। आप के तीन साहब जादे हुये, आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खाँ बरेलवी, मौलाना हसन रज़ा खा बरेलवी और मुफ्ती मुहम्मद रज़ा खाँ बरेलवी। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खाँ बरेलवी ने फिक्ह हन्फी को इस्तिहकाम अता करे के साथ साथ उम्मत मुस्लिमा को इन्ने तैमिया के फैलाये हुये जहर से आलूद दिल व दिमाग को सवादे आजम पर गामज़न करने के लिए अपनी पूरी जिन्दगी वक्फ कर दी। बरादरे औसत मौलाना हसन रज़ा खाँ बरेलवी ने खिादमत दीन और मन्ज़र-ए-इस्लाम के एहतिमाम के साथ उर्दू नअतिया शाइरी को नई रिफअतों से आशना किया। फतवा नवैसी को मशगला-ए- रोज व शब बनाकर मुफ्ती मुहम्मद रज़ा खाँ बरेलवी ने फिक्ह व इफता की खान्दानी खिदमत को मजीद बलन्दियाँ अता कीं। इमाम अहमद रज़ा के फरज़न्द अकबर हुज्जतुलइस्लाम, मौलाना हामिद रज़ा खाँ बरेलवी ने फतवा नवैसी में अपना कमाल दिखाया। आला हज़रत के फरज़न्द असगर ने उस कारे खैर का आगाज़ 1910 ई में किया जो उन के विसाल 1981 ई तक जारी रहा। नाना जान के फज़ल व कमाल के सच्चे वारिस, सच्चे जानशीन और परदादा के उलूम व फुनून के सही वारिस हज़रत ताजुशरीआ ने इस मुबारक काम का आगाज़ चौदह साल

की उम्र शरीफ में किया आप ने इस दुश्वार गुजार राह की मन्जिल को पाने की खातिर आगाज़ में नाना जान हुजूर मुफ्ती-ए-आज़म और मुफ्ती सय्यद अफज़ल हुसैन मुंगीरी के नुक़्श हाथ कदम की पैरवी की, यानी उन बाकमाल इस्तिरों की निगाहों से अपने लिखे हुये फतवा गुजारते रहे। पहला फतवा लिखा तो मुफ्ती अफज़ल हुसैन मोंगीरी को दिखाया। उन्होंने देख कर शाबाशी दी, तहसीन की और होसला बढ़ाने के लिए कहा नाना जान की अमीक निगाहों तक उसकी रसाई होनी चाहिए। नाना जान ने देखा तो फर्ते, मुसरत से चेरा-ए-अनवर खिल गया, दादे तहसीन से नवाज़ा। यह सिलसिला ज़्यादा दिनों तक नहीं चला। जल्दी ही आप के नाना जान हज़रत मुफ्ती आज़म ने यह अज़ीम जिम्मेदारी भी आप को सौंप दी। मुफ्ती-ए-आज़म के अल्फाज़ में वक़ौल मौलाना शहाबुद्दीन रज़वी: "अख़तर मियाँ अब घर में बैठने का वक़्त नहीं। यह लोग जिनकी भीड़ लगी हुई है कभी सुकून से बैठने नहीं देते। अब तुम इस (फतवा नवैसी के) काम को अन्जाम दो मैं (दारुलइफ़्ता) तुम्हारे सुपुर्द करता हूँ मौजूदा लोगों से मुखातिब हो कर हज़रत मुफ्ती-ए-आज़म ने फरमाया :

"अब आप अखातर मियाँ सल्लामहु से रज़ूअ करें, उन्हीं की मेरा काइम मकाम और जानशीन जाने।"

हज़रत ताजुशरीआ अपनी फतवा नवैसी के तअल्लुक से खुद रकम तराज हैं :

"मैं बचपन से ही हज़रत मुफ्ती-ए-आज़म से

दाखिले सिलसिला हो गया हूँ, जामिअ अज़हर से वापसी के बाद मैंने दिल चस्पी की बिनापर फतवा का काम शुरू किया। शुरू शुरू में मुफ्ती सय्यद अफज़ल हुसैन साहब अलैहिर्रहमा और दूसरे मुफ्तियाने किराम की निगरानी में यह काम करता रहा और कभी कभी हज़रत मुफ्ती-ए-आज़म की खिदमत में हाज़िर हो कर फतवा दिखाया करता था, कुछ दिनों के बाद इस काम में मेरी दिलचस्पी ज़्यादा बढ़ गई और फिर मैं मुस्तकिल हज़रत की खिदमत में हाज़िर होने लगा, हज़रत की तवज्जों से मुख़्तसर मुदत में इस काम में वह फ़ैज़ हासिल हुआ जो किसी के पास मुदतों बैठने से भी नहीं होता। मौलाना शहाबुद्दीन रज़वी के हवाले से हज़रत ताजुशरीआ के अल्फाज़ मुलाहिज़ा फरमाये :

"मैंने दारुलउलूम मन्ज़र-ए-इस्लाम में पढ़ा और पढ़ाया, जामिअ अज़हर में भी पढ़ा, शुरू से ही मुझे मुतालअ का बहुत शौक था। अपनी दर्सी किताबों के एलावा गुरुह व हवाशी और गैर मुतअल्लिक किताबों का रोज़ाना कसरत से मुताला करता और ख़ास ख़ास चीज़ों को डाइरी में नोट कर लिया करता था। इसके एलावा सब से अहम बात यह है कि मुझे जो कुछ भी मिला हुजूर मुफ्ती-ए-आज़म कुददुस सिर्रुद्दी की सोहबत व इस्तिफ़ादा सालों की मेहनत व मुश्क़त पर भारी पड़ते थे मैं आज हर जगह हुजूर मुफ्ती-ए-आज़म का इल्मी व रुहानी फ़ैज़ान पाता हूँ। आज जो मेरी हैसियत है वह उन्हें की सोहबत कीमता

असर का सदका है।

हजरत मुपती आजम कुददुस सिरुहु की हयात मुकददसा में यह काम चन्द मुपितयाने किराम के तआउन से घर से ही करते रहे। उन के विसाल के बाद 1981 ई में इस बात की शदीद जरूरत महसूस की गई कि बाजाबता तौर पर दारुलइपता का कियाम अमल लाया जाये लिहाजा उसी जरूरत की तक्मील की खातिर मर्कजी दारुलइपता की निशात सानिया के तौर पर कियाम अमल में लाया गया। आप की सर परस्ती में मुपती काजी अब्दुरहीम बस्तवी, मुपती मुहम्मद नाजिम अली कादरी और मुपती हबीब रजा खॉ बरेलवी पर मुश्तमिल काफिला तशकील दिया गया। मुपती अब्दुलवहीद खॉ बरेलवी को नक्ले फतावा का काम सोंपना गया, मौलाना अब्दुलवहीद खॉ बरेलवी के इन्तिकाल 2005 ई तक फतावा के 80 रजिस्टर तैयार हो चुके थे। मर्कजी दारुलइपता बरेली के यह रजिस्टर तबअ हो कर मन्ज़र आम पर आ जायें तो फिक्ह हन्फी का आलमी सरमाया, होंगे। बकौल मुहदिदसे कबीर मददजुल्ला-हुलआली :

जामेअ अजहर के दौरे तहसील में जब आप का अरबी कलाम अजहर के शूयूखा सुनते तो कलाम की सलासत व निजाकत और हुस्ने तरतीब पर झूम उठते और कहते थे कि यह कलाम किसी गैर अरबी का महसूस ही नहीं होता। अल्लाह तआला ने आप को कई जवानों पर मलका-ए-खास अता फरमाया है। उर्दू जवान गो आप की

घरेलू जवान है और अरबी आप की मजहबी जवान है। इन दोनों जवानों में आप को खुसूसी मलका हासिल। जिस पर आप की उर्दू व अरबी नअतिया शाइरी शाहिद आदिल हैं मजीद फरमाते हैं :

जंबाबोवे में एक मिस्त्री शैख ने एक बार हम्दिया अशआर सुने तो बहुत महजुज हुये और इस की नक्ल की फरमाईश भी कर डाली।

हजरत मुहदिदसे कबीर मदजुल्लाहुलआली फरमाते हैं :

हजरत अल्लामा अजहरी को मैंने इंगलैन्ड, अमरीका, अफरीका, साऊथ अफरीका, जम्बाबोवे वगैरा में बार जस्ता अंग्रेजी जवान में तकरीर व वअज करते देखा है और वहाँ के तालीम याफता लोगों से आप की तअरीफें भी सुनीं। और यह भी उन से सुना कि हजरत को अंग्रेजी जवान के क्लासकी उस्लूब पर उबूर हासिल है।

आप जो कुछ बोलते, लिखते हैं उस में तकलिफात का दखल नहीं होता बल्कि आप के मजामीन या तर्जमा निगारी उमूमन बजरिआ इमला ही जव्त कलम किए जाते हैं। इसलिये आप के इल्मी कारनामे बार जस्तगी से ही मुत्तिसफ होते हैं। फिर हर बात दलाइल से मुबरहन, दिक्कते मुआनी से मुश्तमिल जामइयत से लबरेज होती है। हजरत ताजुशरीआ को चालीस उलूम व फनून पर उबूर व मलका हासिल है जिन में से बहुत से उलूम व फनून पर आप की तस्नीफात व तालीफात शाहिद आदिल हैं। इल्मे तफसीर, इल्मे हदीस इल्मे फिक्ह व इपता इल्मे कलाम इल्मे

तसव्वुफ, इल्मे लोगत, इल्मे बलागत, इल्मे नूह, इल्मे अरबी अदब खास आप के मौजूआत हैं।

हजरत ताजुशरीआ मदजुल्लाहुलआली को जुमला उलूम अरबिया और फुनून अरबिया की तरह उर्दू व अदब पर भी कामिल उद्बूल हासिल है। इस लिए निहायत नफीस, आसान उस्तूब में तर्जमा फरमाने की कोशिश फरमाई है। हमारे मदारिस इस्लामिया के तलबा-ए-किराम बहुत आसानी से समझ सकते हैं और समझेंगे। मतन व हवाशी से खास बल्कि अखस्सुलखास ही मुस्तफीद हो पाते थे मगर बिहम्दिही तआला अब अवाम व खास सभी मुस्तफीज हो सकते हैं।

हजरत ताजुशरीआ इल्म व फजल, जहद व तकवा तवक्कुल व कनाअत, सन्न व इस्ति कामत और तदय्युन व तफक्कह में फरीदुददहर, वहीदुलअस और यगाना-ए-रोजगार हैं। अलवलद सरलाविया के तिहत सय्यदिना आला हजरत, हुज्जतुलइस्लाम हजरत मुफ्ती आजम के अक्स जमील हैं। चमन रजवियत के ऐसे शुगुफ्ता फुल हैं जिन के इल्म व फजल, तबहर व तफक्कुह, अखलास व लिल्लाहियत, खौफ व खशीब, फिक्ह व इफ्ता शैर व अदब, तसानीफात व तालीफात, जकावत व फतानत और दीनी बसीरत की खुशबूओं की महक से पूरी दुनिया-ए-सुन्नियत मुअत्तर व मुश्क बार है। जबान अरबी में हमा दानी मजहब अहले सुन्नत और मसलके आला हजरत के रौशन मिनारा हैं जिस की ताबिशों और जियाबाशियां से पूरी दुनिया-ए-सुन्नियत

रौशन है।

हजरत ताजुशरीआ अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद अखतर रजा खॉं कादरी बरेलवी की खिलाफत व इजाजत की तकरीब, एक हसीन और शानदार तकरीब थी। दारुल उलूम मजहर-ए-इस्लाम बरेली के रोह रोजा इजलास 6/7/8 शअबानुल मुअज्जम 1381 हिजरी 13/14/15 जनवरी 1962 ई की सदास्त और सर परस्ती ताजदार अहले सुन्नत हुजूर मुफ्ती-ए-आजम कुददुस सिरुहु ने फरमाई।

हुजूर मुफ्ती-ए-आजम कुददुस सिरुहु ने मौलाना साजिद अली खॉं बरेलवी मोहतमिम दारुलउलूम मजहर इस्लाम को हुक्म दिया कि 8 शअबानुल मुअज्जम 1381 हिजरी 15 जनवरी 1962 ई को सुबह 8 बजे घर पर महफिल मीलाद शरीफ का इन्वेकाद किया जाये। मीलाद खॉं हजरात उलमा व मशाइख और तलबा मदारिस व फारिगुल्लहसील होने वाले तलबा की दअवत शिरकत दे दी जाये। शदीद सरदी के मोसम में कई हजार लोगों ने मीलाद शरीफ की उस खुसूसी तकरीब में शिरकत की। महफिल मीलाद शरीफ के आखिर में हुजूर मुफ्ती-ए-आजम तशरीफ लाये और ताजुशरीआ अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद अखातर रजा खॉं अजहरी को बुलवाया, अपने करीब बिठाया, दोनों हाथ अपने हाथों में ले कर जमीअ सलासिल आलिया कादरिया, सहरवर्दिया, नक्शबन्दिया चिश्तिया और जमीअ सलासिल अहादीस मुसलसल विलअखिलयत की इजाजत व खिलाफत से सरफराज फरमाया। तमाम औराद

व बजाइफ, आमात व अश्गाल, दलाइलुलखैर, हजबुलबहर, तअवीजात वगैरा वगैरा की इजाजत, मरहमत फरमाय?।

मुअरिख बरेली शरीफ, मेरे फर्जन्द रुहानी मौलाना मुहम्मद शहाबुद्दीन रजवी जन्मल सिक्रेट्री आल इन्डिया जमाअत रजा-ए-मुस्तफा, मुअल्लिफ "मुपती-ए-आजम और उन के खुलफा" अपनी तालीफ लतीफ "हयाते ताजुशरीआ" जिस का पहला एडीशन 80 सफहात पर मुश्तमिल है। उसे हजफ व इजाफा और नजरे सानी के बाद 200 दो सौ से जाइद सफहात पर दूसरा एडीशन ला रहे हैं। मौसूफ की यह किताब हजरत ताजुशरीआ मद्जुल्लाहुलआली की हयात व खिदमात, अफकार व नजरियात और आलमी सतह पर कबूले खास व आम में नक्शे अब्बल और संगे मील की हैसियत रखती है। जिस की इशाआत के बाद हजरत ताजुशरीआ मद्जुल्लाहुलआली की सवानेह निगारी की रास्ते हमवार हुये और सीरत निगारी का मवाद फराहम करने के लिए राहें खुली।

मौलाना शहाबुद्दीन रजवी नौ जवान कलमकारों में जौदनवीस, पुख्ता कलम और मुतअदिद किताबों के मुसन्निफ व मुअल्लिफ हैं, मर्कज इल्म व इरफान बरेली शरीफ के अहवाल व मुआरिफ और उन के मा आखज व मराजअ और खान्दान रजा के मशहुर, अकाबिरीन की सीरत व सवानेह पर गहरी नजर रखने वाले रम्जनास शख्सियत के मालिक हैं। हयाते ताजुशरीआ के दूसरे एडीशन में मौसूफ ने जिन खारदार वादियों से गुजर कर कीमती

मालूमात फराहम की हैं वह लाइक तवज्जोह भी हैं और काबिल सद सताइश भी, इस राह की मुश्कलों और दुशवारियों को वही कुछ जानता है जो इस राह से गुजरता है। दूसरा इन लज़्जतों से वाकिफ नहीं। आज इस बात की शदीद ज़रूरत है कि हम अपने अकाबिर और बुजुर्गों के इल्मी और रुहानी हालात व कैफियात, फजाइल व कमालात, अकाइद व नजरियात, खिदमाते जलीला और जरी कारनामों से अवाम व ख्वास अहले सुन्नत को ज्यादा से ज्यादा मुतआरफ करावें। ताकि उन के इल्मी फैजान और रुहानी इकदार से ज्यादा से ज्यादा लोग फैजयाब हो सकें। आदा-ए-दीन और हासिदीन के जवान व कलम को काबू में किया जा सके।

हजरत ताजुशरीआ मद्जुल्लाहुलआली के दीनी और खान्दानी दुश्मुनों ने जहाँ अपनी दुश्मुनी में कोई कसर नहीं छोड़ी हमेशा सताते और इम्तिहान की वादियों से गुज़ारते रहे। दूसरी तरफ हासिदीन का दाइरा भी रोज बरोज बढ़ रहा है जहाँ वह रश्क व हसद की आग में खुद जल रहे हैं, भून रहे हैं। वही दुनिया-ए-सुन्नियत को भी रश्क व हसद की आग में झोंक देना चाहते हैं। मित्तलत का शीराजा बिखैर देना और इत्तिहाद व इत्तिफाक को पारा कर देना चाहते हैं।

आतिशे आग से पत्थर भी नहीं है खाली

जल गया तूर जो मूसा से हुई प्यार की बात

इन हालात के पेशे नज़र हुज़ूर ताजुशरीआ अपने

जददे आला आला हजरत इमाम अहले सुन्नत कुदुस के
इस्तिगासा को सन्न व इस्तिकामत के साथ बजवाने हाल
दोहराते हुये अर्ज गुजार हैं।

इक तरफ आदा-ए-दी एक तरफ है हासिदी

बन्दा है तन्हा शहा तुम पे करोसें दुरुद

और अपने आका व मौला सय्यदे आलम सल्लल्लाहु
तआला अलैहि वसल्लम की बारगाह बे कस पनाह में यूँ
अर्ज करते हैं:

तुझ किया फिक्र है अखतर तेरे यावर है यह यावर

बलाओ को जो तेरी खुद गिरफ्तार बला करदें

खान्दाने-रजा के उमूमन और हजरत ताजुशरीआ
के खुसूसन आदा-ए-और हासिदीन कान खोल कर सुन लें

सब इन से जलने वालों के गुल हो गये चिराग

अहमद रजा की शमअ फिरोजा है आज भी

अल्लाह तआला जल्ल मजदहु बे वसीला-ए-
सय्यदिल मुरसलीन ताहा या सीन सल्लल्लाहु तआला
अलैहि वसल्लम व बे तुफैल गौस व खाजा व बरकात व
रजा, हुज्जतुलइस्लाम, मुफती आजम और मुफस्सिरे आजम
तमाम खान्दाने रजा खुसूसन हजरत ताजुशरीआ उन के
अहले खाना खुसूसन हजरत मौलाना अस्जद रजा खों
कादरी जानशीन ताजुशरीआ उनकी आले नरबी व रुहानी
व जुमला वाबरस्तगाने सिलसिला-ए-आलिया रजविया सब
को दुशमुनों के शर, हासिदों के हसद, जुमला अमराजे
जिस्मानी व रुहानी और आसीबे रोजगार से मामून व

महफूज फरमाये और हजरत ताजुशरीआ दामत
बरकातुहुमल कुदसिया बलआलिया व मतअल्लाहुलमुस्लीमीन
बतौल बकाइही के साया आतिफत को ता देर हम सभी के
सरो पर काइम व दाइम रखे और उन के फयूजाते
अलमिया व रुहानिया से माला माल फरमाये। अमीन व मा
अलैना इल्ललबलागुलमुबीन.

दुआ गो

फकीर नूरी सय्यद शाहिद अली हस्नी रजवी जमाली
खलीफा-ए-हुजूर मुफती आजम, काजी शरह व मुफती जिला
रामपुर नाजिम आला व शैखुलहदीस मर्कजी दर्सगाह अहले
सुन्नत अलजामिअतुल इस्लामिया, गंजे कदीम, रामपुर।

मुस्तसर हालात

ताजुशरीआ अल्लामा मुहम्मद अखतर रजा अजहरी बरेलवी
जानशीन-ए-मुपती-ए-आजम
मसनदे रुशद व हिदायत आस्ताना-ए-आलिया कादरिया
बरकातिया रजविया सौदागिरान, बरेली शरीफ

بين نور الدجى عن نور طلعه كالشمس بنحاب عن اشراقها الظلم
يغضى حياء و يغضى سبابه فاما يكلم الا حين يشتم
سهل الحليقة لا يخفى بواذره بزينة ائنان حسن الخلق و التمم
مشتقة عن رسول الله بنعمته طابيت عناصره و الحيم و الشيم
كلنا يديه غياث عما نفعها تستو كفان ولا يعود هما الحرم
من معشر حسبهم دين و بغضهم كفر و قريبهم منجى و معتصم

- 1.उनकी पेशानी की चमक से जुलमते दूर होती हैं जिस तरह तुलूअ आफताब से अंधेरा छुट जाता है।
- 2.और उन की हैबत से लोगों की आँखें झुक जाती हैं।
- 3.वह नर्म खु हैं,उनकी खसलते पौशीदा नहीं हैं,खुश खल्की और खुश मिजाजी ने जीनत बख्शी है।
- 4.उनकी सिफात,सिफाते रसूलुल्लाह कि आइना दार हैं। उनकी आदते व खसलते बहुत खुब हैं।
- 5.दोनों हाथ मुसला धार बारिश की तरह फैजे रसों हैं चाहे माल हो या न हो।
- 6.वह इस मुकद्दस गिरोह के फर्द फरीद हैं,जिन की

मोहब्बत दीन है और नका कुर्ब निजात देने वाला है।

विलादत :

जानशीन मुफ्ति-ए-आजम अल्लामा मुफ्ती आलहाज
अशशाह मुहम्मद अखतर रजा अजहरी कादरी इब्ने मौलाना
मुहम्मद इब्राहीम रजा जीलानी इब्ने हुज्जतुलइस्लाम मौलाना
मुहम्मद हामिद रजा इब्ने आला हज़रत इमाम अहमद रजा
फाजिले बरेलवी 25/फरवरी 1942 ई. को महल्ला
सौदागिरान बरेली शरीफ में पैदा हुये।

खान्दानी पस मन्ज़र:

ताजुशरीआ का खान्दान अफगानिन्नसल और
कबील-ए-बढ़ेच से तअल्लुक रखता है। मुरिस आला
शहजादा सईदुल्लाह खाँ कन्दहार हुकूमत अफगानिस्तान के
वली अहद थे,खान्दानी इख्तिलाफ की वजह से कन्दहार को
तर्क वतन कर लाहूर आये। यहाँ पर गवर्नर ने आप शीश
महल में आप के कियाम का इन्तिजाम किया और दरबार
मुहम्मद शाह बादशाह देहली को इत्तिलाअ भेजवाई,दरबार
से शाही मेहमान नवाजी का हुक्म सादिर हुआ। फिर
शहजादा सईदुल्लाह खाँ ने देहली बादशाह मुहम्मद शाह से
जा कर मुलाकात की,आप को बादशह ने फौज का जन्रल
बना दिया और आप के साथियों को भी फौज में अच्छी
जगह मिल गई। रुहैल खन्ड में कुछ बगावत के आसार
नुमाया हुये तो बादशाह ने आप को रुहेलखन्ड की
दारुस्सुलतनत बरेली भेज दिया ताकि वहाँ अमन व अमान
काइम करें। आप के साहबजादे सआदत यारखाँ दरबार

देहली में वजीर-ए-मुस्लिमत थे, उनको कलैदी कलमदान मिला था, उनकी अपनी अलाहिदा महर थी। हाफिज़ काज़िम अली खाँ के आहद में मुगलिया हुकूमत का जवाल शुरू हो गया। हर तरफ़ बगावतों का शौर और आजादी व खुद मुख्तारी का जोर था। आप अवध की कमान संभालने पहुँचे। आप के फरज़न्द मौलाना शाह रज़ा अली खाँ बरेली जिन्होंने 1857 ई. में अहम किरदार अदा किया। इंग्रेज़ ने उनका सर कलम करने के लिए पाँच हजार के इन्आम का एलान किया था। आप के दो फरज़न्द मौलाना मुफ्ती नकी अली खाँ बरेलवी और दूसरे मौलाना हकीम तकी अली खाँ बरेलवी तबल्लुद हुये, जिन्होंने दरज़नों किताबें लिखे, मौलाना नकी अली खाँ बरेलवी के तीन फरज़न्द तबल्लुद हुये। (1) आला हज़रत इनाम अहमद रज़ा खाँ कादरी काज़िल बरेलवी (2) मौलाना हसन रज़ा खाँ बरेलवी (3) मौलाना मुफ्ती मुहम्मद रज़ा खाँ बरेलवी।

तस्मिया ख़वानी :

जानशीन मुफ्ति-ए-आज़म की उमर शरीफ़ जब चार साल, चार माह, चार दिन की हुई तो वालिद माजिद मुफ्ति-सरे आज़म हिन्द मौलाना मुहम्मद इब्राहीम रज़ा जीलानी ने तकरीब बिस्मिल्लाह ख़वानी मुन्अकिद की, और उस में दाक़लउलूम मन्ज़रे इस्लाम के जुमला तलबा को दअवत दी। हुज़ूर मुफ्ति-ए-आज़म कुदिवसा सिरिहू ने रस्मे बिस्मिल्लाह अदा कराई। और मुहम्मद नाम पर अक़ीका हुआ। पुकार ने का नाम "मुहम्मद इस्माईल रज़ा" और उर्फ़

मुहम्मद अख़्तर रज़ा तजवीज़ हुआ। हुज़ूर मुफ्ति-ए-आज़म की साहबज़ादी यानी जानशीने मुफ्ति-ए-आज़म की वालिदा माजिदा ने तअलीम का ख़ास ख़्याल रखा। चुकि नाना जान का सहीह जानशीन इसी नवासे को मुस्तक़बिल में बन्ना था, और सारी तबक्कुआत उन्ही से वाबस्ता थीं। इसी लिए नाना जान हुज़ूर मुफ्ति-ए-आज़म की सहर आमूज़ दुआये भी आप ही के हक़ में निकलती रहीं।

अल्काब : जानशीने मुफ्ति-ए-आज़म ने 1984 ई/1404 हिजरी में सुराष्टर का दौरा फ़रमाया, वीरावल, पुरबन्दर, ज़ामज़ौधपुर, ईलटिया, धोराजी, और जीतपूर होते हुये 15 / आगस्त 1984 ई. 1404 हिजरी को अमरीली तशरीफ़ ले गये। वहाँ हज़ारों लोग दाखिले सिलसिला हुये। रात 12 बजे से दो बजे तक जानशीन मुफ्ति-ए-आज़म की तकरीर हुई। और 18 आगस्त को जोनागढ़ में बज़म रज़ा की जानिब से एक जलसा रज़ा मस्जिद में रखा गया। जिस में अमीरे शरीअत हाजी नूर मुहम्मद रज़वी मारफ़ानी ने 'ताजुल-इस्लाम' का लक़ब दिया। जिसकी ताईद मुफ्ती गुज़रात मौलाना मुफ्ती अहमद मियाँ ने आम जलसा में की।

जानशीन मुफ्ति-ए-आज़म को संदरुलमुफ्तीन, सनदुल मुफ्तीन, और फ़कीह-ए-इस्लाम का लक़ब 1984 ई 1404 हिजरी में रामपुर के मशहूर आलिमे दीन हज़रत मौलाना सय्यद मुफ्ती शाहिद अली रज़वी शैख़ुल हदीस अलजामियातुल इस्लामिया गंज कदीम रामपुर ने एक आम जलसा में दिया।

फखरे अहले सुन्नत, फकीहे आजम और शैखुल मुहददीसिन का लकब 14/शव्वालुलमुकर्रम 1405 हिजरी 1985 ई. को मौलाना हकीम मुजफ्फर अहमद रजवी बरकाती दातागंज बदायूँ ने दिया। उस के एलावा मसलन ताजुशरीआ मरजउलउलमा वलफुजला वगैरा और बहुत से अलकाब उलमा व मशाइख ने दीए। जिसकी एक तवील फिहरिस्त है जामेअ अजहर मिस्र के शैखुलहदीस ने आप को फख अजहर का खिताब 2010 को काहिर में मुन्अकिद तकरीब में दिया।

हुसूले उलूम इस्लामिया :

जानशीने मुषित-ए-आजम ने घर पर वालिदा माजिदा से कुरआन करीम नाज़रा खत्म किया। उसी दौरान वालिद माजिद से उर्दू की किताबें पढ़ी। घर पर तअलीम हासिल करने के बाद वालिद बुजुर्गवार ने दारुलउलूम मन्जरे इस्लाम में दाखिल करा दिया। नहमीर मौजान, मुन्शइव वगैरा से हिदाया आखेरैन तक की कितवें दारुलउलूम मन्जरे इस्लाम के कुहना मशक असातिजा किराम से पढ़ी। ताजुशरीआ ने फारसी की इश्तिदाई कुतुब पहली फारसी, दूसरी फारसी, गुलजारे दबिस्ता, गुलिस्तों और बुस्तों मन्जर-ए-इस्लाम के उस्ताद हाफिज इन्आमुल्लाह खॉ तस्नीम हामिदी बरेलवी से पढ़ी। 1952 ई. में एफ आर इस्लामिया इन्टर कालेज में दाखिला लिया। जहाँ पर हिन्दी और अंग्रेजी की तालीम हासिल की।

मुफस्सरे हिन्द कुददुस सिर्रहु के मुरीद खास जनाव निसार अहमद हामिदी सुलतान पूरी मरहूम की कोशिश से

जामिआ अजहरी काहिरा(मिस्र)से अरबी अदब में महारत हासिल करने के लिए फजीलतुरशैख मौलाना अब्दुत्तवाब मिस्री की खिदमात हासिल की गई थीं। शैख साहिब दारुल उलूम मन्जरे में दर्स व तदरीस दिया करते थे। उनके खास तलामिजा में आप का शुमार होता था। आप दौराने ताल्व इल्मी मामूल था कि अलस्सुबह अरबी अखबारात उस्ताद को सुनाते और उर्दू हिन्दी के अखबारात की खबरों व इत्तिलाआत को अरबी जवान में तर्जमा कर के सुनाते। आप को शैख साहिब बडी तवज्जोह और इन्हेमाक से पढ़ाते आप की जिहानत व फतानत को देखते हुये जामिआ अजहर में दाखिला का मशवरा मौलाना इब्रहीम रज़ा खं जीललानी को दिया तो वह तैयार हो गये। ताजुशरीआ जानशीन मुषित-ए-आजम 1963 ई. में जामिया अजहर काहिरा मिस्र तशरीफ ले गये। वहाँ आप ने "कुलिया उसुलुदीन" (एम-ए-) में दाखला लिया मुसलसल तीन साल तक जामिया अजहर मिस्र में फन तफसीर व हदीस के माहिर असातिजा से इक्तिसाब इल्म किया।

ताजुशरीआ बचपन ही से जहानत व फितानत और कुध्वते हाफिजा के मालिक थे। और अरबी अदब के दिलदादा थे। जामिया अजहर मिस्र में दाखिला के बाद जब आप की जामिया के असातिजा और तलबा से गुफ्तगु हुई तो वह आप की ये तकल्फु फसीह व बलीग अरबी गुफ्तगु सुन कर महवे हैरत हो जाते थे और कहते थे कि।

एक अजामियुन्नसल हिन्दुस्तानी अरबियुन्नसल अहले इल्म हजरात

से गुप्तगु करने में कोई तकलुफ महसूस नहीं करता।
जामिया अजहर मिस्र के शौअबा-ए-कुल्लिया-
उसूलुद्दीन का सालाना इम्तिहान अगर्चे तहरीरी होता था।
मगर मालूमात अम्मा(जनरल नालेज) का इम्तिहान तकरीरी
होता था। चुनौवेह जामिया के सालाना इम्तिहान के मौका
पर जब जानशीन मुफ्ति-ए आजम का इम्तिहान हुआ तो
मुम्तहिन ने आपकी जमाअत से इल्मे कलाम के चन्द
सवालात किए, पूरी जमाअत में से कोई एक भी सवालात
के सहीह जवाब न दे सका। मुम्तहिन ने रुपये सुख्न आप
की तरफ करते हुये सवालात को दोहराया। जानशीन
मुफ्ति-ए-आजम ने उन सवालात का ऐसा शाफी व काफी
जवाब दिया कि मुम्तहिन तअज्जुब की निगाह से देखते हुये
कहने लगा कि। "आप तो हदीस व उसूले हदीस पढते हैं,
तब इल्मे कलाम में कैसे जवाब दिया"। जानशीन
मुफ्ती-ए-आजम ने जवाब में कहा "कि मैंने दारुलउलूम
मन्ज़रे इस्लाम बरेली में इल्मे कलाम पढ़ा था"।

आप के जवाब से मसरूर हो कर मुम्तहिन जामिया
ने आप को जमाअत में पहला मकाम दिया।

जामिया अजहर से फरागत,एवार्ड,और बरेली आमद :
ताजुशरीआ मुफ्ती मुहम्मद अखतर रजा अजहरी
मददजुल्लाहु 1963 ई में जामिया अजहर मिस्र तशरीफ ले
गये,और वहाँ पर तीन साल मुसलसल रह कर हुसूले इल्म
में मशगूल रहे। दूसरे साल के सालाना इम्तिहान में आप ने
शिरकत की, अल्लाह तआला ने अपने फजले अमीम से पूरे

जामिया अजहर काहिरा में इम्तिहान में आला काम्याबी अता
फरमाई। उस काम्याबी पर इडीटर माहनामा आला हज़रत
बरेली कवाइफ अस्ताना रज़विया के उनवान से रकमतराज हैं।

नबीर-ए- आला हज़रत हुज्जतुलइस्लाम अलैहिर्रहमा
और हज़रत मुफ्सिस्रे आजम के फरज़िन्द दिलबन्द मौलाना
अखतर रजा खॉ साहब ने अरबी में बी-ए-की सनद
फरागत निहायत नुमाया और मुस्ताज हैसियत से हासिल
की,मौलाना अखतर रजा खॉ साहब न सिर्फ जामिया अजहर
में बल्कि पूरे मिस्र में अब्बल नम्बरो से पास हुये। मौला
तआला उन को इस से ज्यादा बेश अज़ वेश काम्याबी अता
फरमाये। और उन्हें खिदमात का अहल बनाये, और वह
सहीह मअना में आला हज़रत इमाम अहले सुन्नत के
जानशीन कहे जायें। अल्लाहुम्मा जिद फजिद।

ताजुशरीआ1966 ई. जामेअ अजहर काहिरा से
फारिग हुये तो करनल जमाल अब्दुन्नासिर ने आप को
बतौर इन्आम जामे "अजहर ईवार्ड" पेश किया और साथ ही
साथ सनद से भी नवाजे गये।

जब आप जामेअ अजहर से बरेली शरीफ तशरीफ
लाये तो उस की कैफियत शहर के मशहूर बुजुर्ग उमीद
रजवी यूँ तहरीर फरमाते हैं, यउन्नवान आमदनत बाइस.....

गुलिस्ताने रज़वियत के महकते फूल, चमनिस्ताने
आला हज़रत के गुल खुशारंग, जनाब मौलाना मुहम्मद
अखतर रजा खॉ साहब इन्ने हज़रत मुफ्सिस्रे आजम हिन्द
रहमतुल्लाहि अलैहि एक असा दराज़ के बाद जामेअ अजहर

से फारिगुल्लतहसिल हो कर 17/नवम्बर 1966ई 1386हिजरी की सुबह को बहार अफजाये गुलशन बरेली हुये,बरेली के जंकशन स्टेशन पर मुतअल्लिकीन व मुतवस्सिलीन व अहले खान्दान, उलमा-ए-किराम व तल्बा-ए-दारुलउलूम(मन्ज़रे इस्लाम)के एलाया बेशुमार मोअतकदीन हज़रात ने(जिन में बैरुने जात खुसूसन कानपुर के अहबाब भी मौजूद थे) हज़रत मुफती आजम मदज़ुल्लाहु की सर परस्ती में परतिपाक और शान्दार इस्तिकबाल किया, और साहबजादा मौसूफ को खुशरंग फूलों के गजरों और हारों की पेशकशी से अपने वालिहाना जज़्बात व खुलूस और अकीदत का इजहार किया।

इदारा मौलाना अखातर रज़ा खाँ अजहरी और मुतवस्सिलीन को उस कामयाब वापसी पर हदया -ए-तवरिक व तहनियत पेश करता है,और दुआ करता है कि अल्लाह तआला बतुफ़ैल अपने हबीब करीम अलैहिस्सलात वत्तरस्लीम उन के आबा किराम खुसूसन आला हज़रत इमाम अहले सुन्नत मुजहिदे आजम रदियल्लाहु तआला अन्हु का सच्चा सही वारिस व जानशीन बनाये। ई दुआ अज मन व अज़ जुमला जहाँ आमीन बाद।

(मौलाना रहान रज़ा खाँ मुदीर माहानमा आला हज़रत बरेली दिसम्बर 1966 ई 1386 हिजरी)

हुज़ूर को लेने के लिए हज़रत बज़ाते खुद बनफ्स नफीस तशरीफ ले गये,और ट्रेन का बे ताबाना इन्तिज़ार फरमाते रहे,जैसे ही ट्रेन पलेट फार्म पर उतरी,सब से पहले हज़रत ने गले लगाया, पेशानी चुमी और बहुत दुआयें दी

और फरमा कि कुछ लोग गये थे मगर बदल कर आये मगर मेरे बच्चे पर जामिआ की तहज़ीब का कुछ असर नहीं हुआ,मा शाअल्लाह।"

अन्दाजे तर्बियत

हज़रत ताजुशरीआ के वालिद माजिद मुफस्सिर-ए-आजम हिन्द रहमतुल्लाहि अलैहि ने आप की नशू व नुमा बड़े नाज़ व नअम और खुसूसी एहतियाम के साथ की दौराने तालिबइल्मी आप को तकरीर व वअज़ की तरबियत देते थे। एक बार वालिद माजिद ने आप को करीब बुला कर बैठाया और फरमाया कि कल से तलबा(मन्ज़र-ए-इस्लाम)को सैफुलजब्बार(मुसन्निफा सैफुल्ला अलमसलूम अल्लामा शाह फज़ले रसूल उस्मानी बदायूनी)सुनाया करोगे। आप ने अर्ज किया कि अब्बा हुज़ूर अभी मेरी उर्दू भी अच्छी नहीं है,फरमाया कि सब ठीक हो जायेगी,यह काम तुम्हारे जिम्मा किया जाता है। आप ने दूसरे दिन से हम दर्स तलबा को जमा किया और खानकाहे आलिया रज़विया की छत पर बैठ कर "सैफुलजब्बार"का दर्स शुरू करदिया। इस तरह मुतअदिद बार सैफुलजब्बार का दर्स दिया और मुतालअ किया,वालिद माजिद के इस से कई मकासिद पौशीदा थे,एक तो यह कि उर्दू एबारत ख़ानी बेहतर हो जायेगी,दूसरी अकाइद-ए-अहले सुन्नत व जमाअत की खुब जानकारी हासिल होगी,तीसरी वजह यह थी कि तक़रीर व खिताबत करने में तकल्लुफ और झिझक ख़त्म हो जायेगी।

दौराने तालीम वालिद माजिद का इन्तिकाल:

जानशीन-ए-हुजूर मुफती-ए-आजम जब जामेअ अजहर में तालीम व तरबियत हासिल कर रहे थे। उसी दौरान आप के वालिद माजिद मुफस्सिर-ए-आजम हिन्द मौलाना इब्राहीम रजा खॉ जीलानी बरेलवी का 60 साल की उमर में 11/सफरुलमुजाफर 1385 हिजरी 12/जून 1965 ई. को इन्तिकाल हो गया। इन्तिकाल की खबर पहुंचते ही आप के कल्ब पर गहरा सदमा पहुँचा। आप के हम दर्स मौलाना शमीम अशरफ अजहरी(मारीशश) ने आप के बरादरे अकबर मौलाना रैहान रजा खॉ रहमानी मियाँ को ताजीयती मकतूब लिखा, और आप की कैफियत तहरीर की है, इस से बखूबी अन्दाज़ा होता है। जानशीन मुफती-ए-आजम ने एक तवील खत बरादरे अकबर के नाम तहरीर किया और वालिद साहब के इन्तिकाल की तफसीलात मालूम की और एक ताजीयती नज़म भी तहरीर फरमाई। यह तमाम चीज़ें राकिमुस्तुतूर के पास महफूज़ हैं।

किन्ती के गम में हाथे तबया ता है दिल ☆ और कुछ ज्यादा उमनआता है दिल

हाथ दिल का आसरा ही बल बसा ☆ टुकड़े टुकड़े अब हो जाता है दिल

अपने अकबर पर एतायत कीजिए ☆ मेरे मौला किस को बहकाता है दिल

असातिजा किराम :

आप के असातिजा में काबिल जिक्र असातिजा किराम यह हैं।

- 1- हुजूर मुफती आजम मौलाना अशशाह मुस्तफा रजा नूरी बरेलवी कुददुस सिर्रहु
- 2- बहरूलउलूम हज़रत मौलाना मुफती सैयद मुहम्मद

अफज़ल हुसैन रज़वी मोंगरी

- 3 -मुफस्सिर आजम हिन्द हज़रत मौलाना मुहम्मद इब्राहीम रज़ा जीलानी रज़वी बरेलवी
- 4 -फज़ीलतुशशैख मौलाना अल्लामा मुहम्मद समाही शैखुल हदीस वत्तफसीर जामेआ अजहर काहिरा
- 5- हज़रत अल्लामा मौलाना महमूद अब्दुलगफ़ार उस्ताजुलहदीस जामेआ अजहर काहिरा
- 6-उस्ताजुलअसातिजा मौलाना मुफती मुहम्मद अहमद उर्फ जहाँनगीर खॉ रज़वी आजमी
- 7 रैहान मिल्लत मौलाना मुहम्मद रैहान रज़ा रहमानी रज़वी बरेलवी
- 8 फज़ीलतुशशैख मौलाना अब्दुत्तवाब मिस्री उस्ताद मन्ज़र-ए-इस्लाम बरेली
- 9 मौलाना हाफिज़ इन्आमुल्लाह खॉ तस्नीम हामिदी बरेलवी।

दर्स व तदरीस : ताजुशरीआ अल्लामा मुफती मुहम्मद अखतर रज़ा अजहरी को 1967 ई में दारुलउलूम मन्ज़र इस्लाम बरेली में दर्स देने के लिए पेश कश की गई। आप ने उस दअवत को कबूलियत से सरफराज़ किया, 1967 ई. से तदरीस के मसन्द पर फाइज़ हो गये। ताजुशरीआ के बरादरे अकबर मौलाना रैहान रज़ा रहमानी बरेलवी ने 1978 ई में सदरुलमुदरिरीन के आला ओहदा पर तकर्रु किया। और उस ओहदे के साथ 'रज़वी' दारुलइफ़ता'के सदर मफ़ी भी रहे। दर्स व तदरीस का सिलसिला मुसलसल

बाराह साल तक चलता रहा।

हिन्दुस्तान गीर तब्लीगी दौरे की वजह से यह सिलसिला कुछ अय्याम के लिए मुन्कतअ हो गया। मगर कुछ ही दिनों बाद अपने दौलत कदे पर दर्स कुरआन व हदीस का सिलसिला शुरू किया। जिस में मन्जरे इस्लाम, मजहरे इस्लाम और जामिआ नूरिया रजविया के तलबा कसरत से शिरकत करते, 1407 हिजरी और 1408 हिजरी को मदरसा अलजामियातुल इस्तामिया गंजकदीम रामपुर में खत्म बुखारी शरीफ कराया। 1408 हिजरी को जामिआ फारुकिया भोजपुर जिला मुरादाबाद में बुखारी शरीफ का इफितताह किया। 1409 हिजरी को दारुलउलूम अमजदिया कराची (पाकिस्तान) में बुखारी शरीफ का इफितताह फरमाया और जिलहिज्जा 1409 हिजरी को अलजामिअतुल कादरिया रिछा बेहड़ी जिला बरेली शरीफ में शरह वकाया का तवील सबक पढ़ाया। अब तक मुत्क व बैरुने मुमालिक में न जाने कितने मदारिस वजामीआत में दर्स बुखारी दिए हैं। जामिआ फारुकिया बनारस में खत्म बुखारी के मौका पर साहिबे बुखारी और आखिरी हदीस पर डाई घन्टा तकरीर फरमाई।

खान्दान रजा की फतवा नवैसी :

खान्दान इमाम अहमद रजा कादरी फाजिले बरेलवी की मुदत फतवा नवैसी का मन्दर्जा जैल जाइजा ईमान और यकीन को रीशन करता है। हजरत मौलाना रजा अली खाँ की फतवा नवैसी का आगाज 1246 हिजरी 1831 ई अन्जाम

1282 हिजरी 1865 ई. इमाम अहमद रजा की फतवा नवैसी का आगाज 1286 हिजरी / 1869 ई अन्जाम 1340 हिजरी 1831 ई. हुज्जतुलइस्लाम मुफती मुहम्मद हामिद रजा की फतवा नवैसी का आगाज 1338 हिजरी 1910 ई. अन्जाम 1981 ई. / 1402 है।

बहम्देही तआला यह सिलसिला—ए—जररों जिसकी मुदत 1408 हिजरी 1988 ई. तक 162 साल होती है, अब भी खानकाह आलिया कादरिया बरकातिया रजविया सौदागिरान बरेली से ताजुशरीआ 1967 ई से अन्जाम दे रहे हैं। आप हुजूर मुफती आजम कुदिदसा सिर्रहु और मुफती सेयद मुहम्मद अफजल हुसैन रजवी मोंगीरी की जेरे निगरानी फतवा लिखते रहे। मुफती आजम कुदिदसा सिर्रहु के पास फतवा की कसरत की वजह से कई काम करते। मुफती आजम ने फरमाया :

अखतर मियाँ घर में बैठने का वक़्त नहीं। यह लोग जिन की भीड़ लगी हुई है कभी सुकून से बैठने नहीं देते। अब तुम उस काम को अन्जाम दो। मैं तुम्हारे सुपुर्द करता हूँ।” लोगों से मुखातब हो कर मुफती आजम ने फरमाया :

“आप लोग अब अखतर मियाँ सल्लमहु से रजुअ करे उन्हीं को मेरा काइम मक़ाम और जानशीन जानें।”

उसी दिन से लोगों का रुजहान ताजुशरीआ की तरफ हो गया। आप खुद अपने फतवा नवैसी की इब्तिदा यूँ तहरीर फरमाते हैं।

फतवा नवैसी का आगाज :

जानसीन-ए-हुजूर मुफती-ए-आजम अल्लामा मुफती मुहम्मद अखरत रजा खाँ अजहरी दामत बरकातुहुमुल आलिया को अल्लाह तआला ने वदीअत के तौर पर इल्मी व फकही सलाहियतों और जुजयात फिक्हिया पर कामिल दसर्तस, इल्मे कुरआन व हदीस पर मुकम्मल इदराक अता फरमाया। आप ने सब से पहले फतवा 1966ई/1382हिजरी में तहरीर फरमा कर मुफती सैयद अफजल हुसैन मुंगीरी सदर दारुलइफता मन्जर-ए-इस्लाम को दिखाया, आप ने फरमाया कि अब मैंने देख लिया है नाना मोहतरम को दिखा आइये फिर आप ने अपने नाना ताजदारे अहले सुन्नत हुजूर मुफती-ए-आजम कुददुस सिरुहु की खिदमत में पेश किया। हजरत ने मुलाहिजा फरमा कर आप से मुखातब हो कर दादे तहसीन और हौसला अफजाई फरमाई और हिदायत की दारुलइफता में आ कर फतवा लिखा कर और मुझे दिखाया करो। इस से पहले फतवा में सवालात के शाफि व काफी जवाबात दिये। यह इस्तिफता मरकज़ इस्लाम मदीनतुल मुनव्वर से आया था। जिस में तलाक, निकाह मीरास से मुतअल्लिक मसाइल शरइया दरयाफत किए गये थे। आप ने तफसील से दलाइल व बराहीन के साथ फतवा को मुजय्यन कर के उस्ताज मोहतरम और नाना जान से दाद व तहसीन हासिल की।

नबीरा-ए-उस्ताजे जमन हजरत मौलाना मुफती हबीब रजा खाँ बरेलवी कहते हैं कि:

“कभी कभी नागा हो जाता था तो हजरत की

अहलिया मोहतरमा पीरानी अम्माँ साहिबा अलैहिरमा दरयाफत फरमाती कि आज अखतर मियाँ नहीं आये हैं। उन से कहो कि रोजाना आया करे। हजरत इन को बहुत पसन्द फरमाते हैं।”

ताजुशरीआ जब भी फतवा की इस्लाह के लिए हाजिरे खिदमत होते तो हजरत आप को अपने करीब बैठते, फतवा मुलाहिजा फरमाते और जरूरत के तेहत कुछ इजाफा या तरमीम व तदलील फरमा कर दस्तखत फरमा देते, यह मामूल बरसों रहा। और हजरत के अय्याम अलालत दफतरी कामों, दारुलउलूम मजहर इस्लाम और सन्द खिलाफत व इजाजत पर दस्तखत करने और महर की तमाम तर जिम्मा दारियाँ आप के सुपुर्द फरमा दी थीं। जिस को आप ने बहुस्न व खुबी अन्जाम दिया। आप खुद अपने फतवा नवैसी की इब्तिदा यूँ तहरीर फरमाते हैं।

“मैं बचपन से ही हजरत (मुफती आजम) से दाखिले सिलसिला हो गया हूँ, जामिआ अजहर से वापसी के बाद मैंने अपनी दिलचस्पी की बिना पर फतवा का काम शुरू किया। शुरू शुरू में मुफती सैयद अफजल हुसैन साहब अलैहिरहमा और दूसरे मुफ्तियाने किराम की निगरानी में मैं यह काम करता रहा। और कभी कभी हजरत की खिदमत में हाजिर हो कर फतवा दिखाया करता था। कुछ दिनों के बाद उस काम में मेरी दिलचस्पी ज्यादा बढ़ गई और फिर मैं मुस्तकिल हजरत की खिदमत में हाजिर होने लगा। हजरत की तवज्जोह से मुक्तासर मुद्दत में उसकाम में मुझे

वह फैंज हासिल हुआ कि जो किसी के पास मुद्दों बैठने से भी न होता।"

(माहनामा इस्तिफात कानपुर स.151 रजबुलमुरज्जब 1403 हिजरी 1983 ई.)

ताजुशरीआ ने राकिमुस्सुूर के एक सवाल के जवाब में फरमाया कि : मैं ने दारुलउलूम मन्ज़र-ए-इस्लाम में पढ़ा और पढ़ाया, जामिआ अजहर में भी पढ़ा, शुरू से ही मुझे मुतालअ का बहुत शौक था अपनी दरसी किताबों के अलावा शुरू व हवाशी और गैर मुतअल्लिक किताबों का रोजाना कसरत से मुतालअ करता, और खास खास चीजों को डाइरी पर नोट कर लिया करता था। उसके अलावा सब से अहम बात यह है कि मुझे जो कुछ भी मिला वह हुजूर मुफ्ती-ए-आजम कुददुस सिराहु की सोहबत व इस्तिफादा से हासिल हुआ। उनके एक घन्टा की सोहबत इस्तिफादारात और इस्तिफादा सालों की मेहनत व मुशक्कत पर भारी पड़ते थे। मैं आज हर जगह हुजूर मुफ्ती-ए-आजम का इल्मी व रुहानी फ़ैजान पाता हूँ। आज जो मेरी हैसियत है वह उन्हें की सोहबत किमया असर का सदका है।

तकरीबन चौबीस साल से मुसलसल मुफ्ती आजम कुदिसा सिराहु के उस मनसब को बहुसन व खूबी अन्जाम दे रहे हैं ताजुशरीआ के फतावा इकसाये आलम में सनद का दर्जा रखते हैं। एक अन्दाजे के मुताबिक़ ता दम तहरीर फतावा के रजिस्ट्रों की तअदाद 31 से मुतजावज़ हो गई है।

मर्कजी दारुलइफ़ता का क़ियाम:

1981 ई.में ताजदारे अहले सुन्नत हुजूर मुफ्ती-ए-आजम कुददुस सिराहु के इन्तिकाल के बाद आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा कादरी फ़ाजिल बरेलवी के दौलत कदा पर (जहाँ ताजुशरीआ की मुस्तक़िल सुकूनत है) मर्कजी दारुलइफ़ता की बुनियाद डाली, 1982 ई.में घेर पर ही मसाइल के जवाबात एनायत फरमाते थे। बाज़ाबता तौर पर किसी इदारा की बुनियाद नहीं पड़ी थी, मगर उलमा व मशाइख और अबामे अहले सुन्नत की ज़रूरत का खियाल करते हुये "मर्कजी दारुलइफ़ता" के क़ियाम का फैसला किया।

उस वक़्त हज़रत रोज़ाना दारुल इफ़ता में जलवा अफ़रोज़ होते और आप ने मौलाना मुफ्ती काजी अब्दुरहीम बस्तवी, मौलाना मुफ्ती मुहम्मद नाजिम अली कादरी बारा बंकी, मौलाना मुफ्ती हबीब रज़ा ख़ाँ बरेलवी को मुफ्ती की हैसियत से मर्कजी दारुलइफ़ता में मुक़र्रर फरमाया। फतावा को रजिस्टर में नक़ल की ख़िदमत के लिए मौलाना अब्दुलवहीद ख़ाँ बरेलवी को मामूर किया गया। मौलाना अब्दुल वहीद बरेलवी मरहूम ने 1983 ई से 2005 ई तक फतावा की नक़ल का काम किया। आज मर्कजी दारुलइफ़ता में मौलाना के हाथ से मुन्दर्जा फतावा के 80 / रजिस्टर होंगे। मौजूदा वक़्त में मर्कजी दारुलइफ़ता से जारी फतावा की हैसियत मुल्क व बैरुने ममालिक में हर्फ़ आखिर का दर्जा में हैं। जिस मसन्द इफ़ता की बुनियाद मुजाहिद जंग आज़ादी मौलाना मुफ्ती रज़ा अली ख़ाँ बरेलवी रहमतुल्लाहि अलैहि ने रखी थी वह आज तक बारौनक़ है।

अजदवाजी जिन्दगी:

जानशीन मुफती आजम का अक्द मसनून हकीमुलइस्लाम मौलाना हुसनेन रजा बरेलवी अलैहिर्रहमा की दुखतरनेक अखतर सालेह सीरत के साथ 3 नवम्बर 1968 ई शअवानुलमुअज्जम 1388 हिजरी बरोज इतवार को महल्ला कांकर टोला पुराना शहर से हुआ, जिन से फिलहाल एक साहबजादा मखदूम गिरामी मौलाना अरजद रजा कादरी बरेलवी और पाँच साहबजादयाँ तवल्लुद हुये। जिन में सब की शादियाँ हो चुकी हैं।

अल्लाह तबारुक व तआला आप की औलाद अमजाद को सलफे सालिहीन और खान्दान रजा का नमूना बनाये और साहबजादा गिरामी कां वालिदे बुजुर्ग गवार ताजुशशीआ का सही मअनों में जानशीन और काइम मकाम बनाये (आमीन)

हज व जियारत

ताजुशशीआ मुफती मुहम्मद अखरत रजा अजहरी ने पहला हज 1403/4 सितम्बर 1983 ई. दूसरा हज 1405/1985 ई. तीसरा हज 1406 हिजरी 1986 ई. में अदा करमाये। और मुतअदिद बार उमरा से भी फ़ैज़याब हुये।

नस्बन्दी के खिलाफ़ फ़तवा :

श्रीमती इंदिरागोंधी साविक वजीर-ए-आजम हिन्द का मिजाज आमराना था, उनके दौरै इक्तिदार में अवाम पर जुल्म व जबर किया गया, कांग्रेस पार्टी की सार, कुवत का नुक्ता, इरतिकाब सिर्फ और सिर्फ इंदिरागोंधी की जात थी।

उन्होंने यह सब बिला शिरकत गैर इक्तिदार पर अपनी गिरफ्त काइम रखने के लिए ही किया था। वह सियासी मुखालिफीन को बे दर्दी से कुचल देने के लिए सख्त से सख्त इकदाम करने में कोई हिचकिचाहट महसूस नहीं करती थीं। इंदिरागोंधी के साथ उन के बेटे श्री संजें गोंधी का ताना शाही नज़रिया पसे पुस्त काम कर रहा था। 1975 ई. में पुरे मुल्क में हंगामी हालात का एलान कर दिया गया, तमाम शहरियों के बुनियादी हुक्क सलब कर लिए गये रकियों को कैदे सलासिल में जकड़ कर नजरे जिन्दा कर दिया गया, "मिसा" जैसे जाबिर कानून का नाफिजुलअमल कर दिया गया। इन तमाम हालात के साथ ही दो से ज्यादा बच्चा पैदा करने पर सख्ती से पाबन्दी आइद कर दी गई और उन लोगों पर नस्बन्दी करना ज़रूरी करार दे दिया। पुलिस अवाम को जबरन पकड़ पकड़ कर नस्बन्दी करा रही थी, उसी इसना में नस्बन्दी के जवाज़ या अदमे जवाज़ पर शरई नुक्ता नज़र जानने और अमल करने के लिए दारुलइफ़ता बरेली से अवाम ने रजुअ करना शुरू कर दिया। दूसरी तरफ़ दैबन्द के दारुलइफ़ता बरेली से कासी मुहम्मद तैब मोहतमिम दारुलउलूम दैबन्द ने नस्बन्दी के जाइज़ होने का फ़तवा दे दिया। मुल्क की हेजानी कैफ़ियत और उम्मत मुस्लिमा में इन्तिशार को देखते हुये जाबिर व वालिम हुक्मरों के खिलाफ़ ताजदारे अहले सुन्नत हुज़ूर मुफती-ए-आजम कुददुस सिरह के हुक्म पर ताजुशशीआ ने नस्बन्दी के हराम व नाजाइज़ होने का फ़तवा सादिर

करमाया। इस फतवा पर हुजूर मुफ्ती-ए-आजम के अलावा हज़रत मौलाना मुफ्ती काज़ी अब्दुरहीम बस्तवी, मौलाना मुफ्ती रियाज़ अहमद सीवानी के दस्तखत हैं।

फतवा की इशाअत के बाद हुकूमत ने इस बात के लिए दबाओ डाला कि यह फतवा वापस ले लिया जाये मगर हज़रत ने फतवा से रुजूअ करने से इन्कार कर दिया और नुमाइन्दगाने हुकूमत से साफ़ साफ़ कह दिया गया कि फतवा कुरआन व हदीस की रौशनी में लिखा गया है। किसी भी सूरत में वापस नहीं लिया जा सकता।

हक़ गोई व बे बाकी :

अल्लाह रबुलइज्जत ने जानशीन मुफ्ती आजम को जिन गोनोंगों सिफात से मुत्तसिफ़ किया है। इन सिफात में एक हक़ गोई और बेबाकी है। आप ने कभी भी सदाकत व हक्कानियत का दामन हाथ से नहीं छोड़ा। चाहे कितने ही मसलिहत के तकाज़े क्यों न हों। चाहे कितने ही कैद व बन्द, मसाइव व आलाम और हाथों में हथकड़ियाँ पहनना पड़ी, कभी किसी को खुश करने के लिए उसकी मनशाह के मुताबिक़ फतवा नहीं तहरीर फरमाया। जब लिखी कोई फितरी तहरीर फरमाया तो अपने अस्ताफ़ व अपने आबा व अजदाद के कदम तकदुम हो कर तहरीर फरमाया। जिस तरह जदे अमजद इमाम अहमद रज़ा फाज़िल बरेलवी और मुफ्ती आजम मौलाना मुस्तफ़ा रज़ा नूरी ने वे खौफ़ व खतर फतवा तहरीर फरमाये। इसी तरह अपने अजदाद के नक्शे कदम पर चलते हुये जानशीन

मुफ्ती आजम नज़र आते हैं। इस हक़ गोई के शवाहिद आज आप के हज़ारों फतवा हैं जो मुल्क और बैरुने मुल्क में फैले हुये हैं।

सऊदी मुज़ालिम की कैफ़ियत जानशीन मुफ्ती आजम की ज़बानी
जानशीने हुजूर मुफ्ती-ए-आजम अपनी शरीक हयात (पीरानी अम्मा साहिबा) के साथ हज़ व ज़ियारत के लिए तशरीफ़ ले गये थे, अफ़ात से वापस लौटने के बाद सऊदी हुकूमत ने रात के वक़्त मक्का मुअज़्जमा में आप को कियात ग़ाह से गिरफ़्तार कर लिया, बिला वज़ह ग़यारह (11) दिल ज़ेल में रख कर बग़ैर मदीना शरीफ़ की ज़ियारत कराये हिन्दुस्तान भेज दिया। मन्दर्ज़ा ज़ेल सुतूर में हज़रत की ज़बानी पूरी रिपोर्ट पेश है :

बम्बई 13/ सितम्बर 1986 ई./ 1407 हिजरी में इब्राहीम मिरचन्ट रोड मीनारा मस्जिद बम्बई के करीब रज़ा एकडमी बम्बई के जेरे एहतिमाम जानशीन मुफ्ती आजम के मक्का मुकर्रमा में बेजा गिरफ़्तारी पर सऊदी हुकूमत के खिलाफ़ एक शानदार एहतिजाज़ी इजलास मुन्अफ़िद हुआ जिस की सदारत मुहदिस कबीर मौलाना ज़ियाउलमुस्तफ़ा रज़वी अमजदी ने फरमाई, बम्बई के उलमा, अइम्मा मसाजिद के एलावा बाहर से आये हुये अकाबिर उलमा ने शिरकत फरमाई। मजमअ जो तकरीबन पचास हज़ार अफ़राद पर मुश्तमिल था। जोश एहतिजाज़ में सऊदी हुकूमत के खिलाफ़ नअरे बलन्द करता रहा। अख़ीर में जानशीन मुफ्ती आजम ने सऊदी हुकूमत में अपनी

गिरफ्तारी और जियारत मदीना मुनव्वरा के बगैर वापस किए जाने से मुतअल्लिक अपना यह मुख्तसर सा बयान दिया जो दर्ज जेल है।

31 अगस्त 1986 ई शब में तीन बचे अचानक सऊदी हुकूमत के सी आई डी और पुलिस के लोग मेरी कियाम गाह पर आये, और मुझे बेदार कर के पासपोर्ट तल्ब किया और फिर मेरे सामान की तलाशी का मुतालबा किया। मेरे साथ मेरी पर्दा नशीन बीवी थीं। मैंने उन्हें बाथ रूम में भेजा। फिर सी आई डी ने बाथ रूम को बाहर से मुकफल कर दिया। और वह लोग सिपाहियों के साथ मेरे कमरे में दाखिल हुये। मुझे रेलवालों के नशाने पर हरकत न करने की वारनिंग दी। मेरे सामान की तलाशी ली। मेरे पास हजरत मौलाना सैयद अलवी मुहजुल्लाहु की दी हुई चन्द किताबें, और कुछ किताबें आला हज़रत की और दलाइलुलखैरात थी, उन तमाम किताबों को अपने कबजा में लिया। मुझ से टेलिफोन की डाइरी मांगी। जो मेरे पास न थी। मेरा मेरी बीवी का और मेरे साथियों के पासपोर्ट टिकट और वह किताबें हमरा ले कर मुझे सी आई डी आफिस लाये। और एके बाद दीगर मेरे रफका, महबूब और याकूब को भी उठालाये।

मुझ से रात में रस्मी गुफ्तगु के बाद पहला सवाल यह किया कि आप ने जुमा कहाँ पढ़ा, मैंने कहा कि मैं मुसाफिर हूँ मेरे ऊपर जुमा फर्ज नहीं। लिहाजा मैंने अपने घर में जोहर पढ़ी। मुझ से पूछा कि तुम हर्म में नमाज़ नहीं

पढ़ते हो ? मैंने कहा मैं हर्म से दूर रहता हूँ, हर्म में तवाफ़ के लिए जाता हूँ इसलिए मैं हर्म में नमाज़ नहीं पढ़ सकता। मुझ से कहा कि आप क्यों अपने महल्ला की मस्जिद में नमाज़ नहीं पढ़ते, मैंने कहा कि बहुत से लोग हैं जिन्हें मैं देखता हूँ कि वह महल्ला की मस्जिद में नमाज़ नहीं पढ़ते, और बहुत से लोगों के मुतअल्लिक मुझे महसूस होता है कि वह सिरे से नमाज़ ही नहीं पढ़ते तो मुझ से ही क्यों बाज़ पर्स करते हैं। मुझ से फिर भी इसरार किया गया तो मैंने कहा कि मेरे मजहब में और आप लोगों के मजहब में इख़िलाफ़ है, आप हम्बली कहलाते हैं और मैं हन्फी हूँ और हन्फी मुकतदी की रिआयत गैर हन्फी इमाम अगर न करे तो हन्फी की नमाज़ सही न होगी। इस वजह से मैं नमाज़ अलाहिदा पढ़ता हूँ। मुझ से हजरत अल्लामा सैद अलवी मालकी महजुल्लाहु की किताबों के मुतअल्लिक पूछा कि यह तुम्हें कैसे मिली? मैंने कहा कि यह किताबें मुझे उन्होंने चन्द रोज़ पहले दी हैं। जब मैं उन से मिलने गया था। मुझ से सवाल किया कि यह पहली मुलाकात थी। मैंने कहा हाँ, यह पहली मुलाकात थी। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाजिल बरेलवी की चन्द किताबें देख कर जो नअत और मसाइल के मुतअल्लिक थीं पूछा उन से तुम्हारा किया रिशता है? मैंने कहा कि वह मेरे दादा थे।

उस मुख्तसर सी इन्कुवारी के बाद मुझे रात गुज़र जाने के बाद फजिर के वक़्त जेल भेज दिया गया। दस बजे फिर सी आई डी से गुफ्तगु हुई। उस ने मुझ से पूछा कि

हिन्दुस्तान में कितने फिरके हैं। मैंने शीआ, कादयानी, वगैरा चन्द फिर्के गिनाये और मैंने वाजेह किया कि इमाम अहमद रजा खॉ फाजिले बरेलवी ने कादयानियों का रद किया है। और उस के रद में छः रिसाले **جزاء الله عدوة قهر** लिखे हैं। हम पर कुछ लोग यह तोहमत लगाते हैं और आप को यह बताया है कि हम और कादयानी एक हैं, यह गलत है और वही लोग हमें बरेलवी कहते हैं जिस से यह वहम होता है कि बरेलवी किसी नये मजहब का नाम है। ऐसा नहीं है। बल्कि हम अहले सुन्नत व जमाअत हैं।

सी आई डी के पूछने पर मैंने बताया कि इमाम अहमद रजा फाजिल बरेलवी ने किसी नये मजहब की बुनियाद नहीं डाली बल्कि उनका मजहब वही था जो सरकार मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम और सहाबा व ताबेईन और हर जमाने के सालिहीन का मजहब है, और यह कि हम अपने आप को अहले सुन्नत व जमाअत कहलवाना ही पसन्द करते हैं। और हमें इस मकसद से बरेलवी कहना कि हम किसी नये मजहब के पैरोकार हैं हम पर बहुतान है, सी आई डी के पूछने पर मैंने वहाबी और सुन्नी का फर्क मुख्तसिर तौर पर वाजेह किया। मैंने कहा कि वहाबी हुजूर अलैहिस्सलात वस्सलाम के इल्मे गैब और उनकी शफाअत और उन से तवस्सुल और इस्तिमदाद और उन्हें पुकारने के मुन्किर हैं। और उन उमूर को शिर्क बताते हैं। जबकि हमारा यह

अकीदा है कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से तवस्सुल जाइज है, और उन्हें पुकारना भी, और यह कि वह सुनते भी हैं और अल्लाह के बताये से गैब को भी जानते हैं। और अल्लाह ने उन को शिफाअत का मन्सब अता फरमाया, और इल्मे गैब पर सी आई डी के पूछने पर आयात कुरआन से मैंने दलीलें काइम की, और यह साबित किया कि नबूवत इत्तिलाअ अललगैब ही का नाम है, और नबी वही है जो अल्लाह के बताने से इल्मे गैब की खबर दे। और यह कि नबी के वास्ते से हर मोमिन गैब जानता है जैसा कि कुरआने मुकददस में मन्सूस है। सी आई डी के पूछने पर मैंने बताया कि सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बाद विसाल समी गैब की खबर है। इसलिए कि सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की नबुव्वत बाकी है और नबुव्वत गैब जानने ही को कहते हैं। फिर यह कि आयतों में ऐसी कैद नहीं है जिस से यह जाहिर हो कि बाद विसाल सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इल्मे गैब नहीं जानते हैं। एक और नशिस्त में सी आई डी के मुतालबे पर मैंने तवस्सुल की दलील में **واتغوا اليه الوسيلة** आयत पढ़ी, और यह बताया कि सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से तवस्सुल मिन्जुमला आमाल सालेहा है और यह कि किसी अमल का सालेह होना और वसीला होना इस शर्त पर मौकूफ है कि वह मकबूल हो और सरकार रिसालत सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम बिला शुबह मकबूल बारगाहे उलूहियत हैं, बल्कि सैयदुलमकबूलून

हैं तो उन से तवस्सुल बदर्जाए ऊला जाइज है, और तवस्सुल शिर्क नहीं।

सी आई डी के कहने पर मैंने मजीद कहा कि किसी से उस तौर मदद मांगना कि अल्लाह के सिवा उस को मुस्तकिल और फाइल समझे शिर्क है और हम इस तौर पर किसी से मदद मांगने के काइल नहीं हैं। हाँ अल्लाह की मदद का वसीला जान कर किसी मकबूल वारेगाह से मदद मांगना हर गिज़ शिर्क नहीं है। सी आई डी के एक सवाल के जवाब में कहा कि हम में और वहाबियों में यह फर्क है कि वह हमें तवस्सुल वगैरा उमूर की बिना पर काफिर व मुशरिक बताते हैं, लेकिन हम उन को महज़ इस बिना पर काफिर व मशरिक नहीं कहते (यानी उस के वजूहात और हैं)।

दूसरे दिन मेरे उन बयानात की रोशनी में सी आई डी ने मेरे लिए एक इकरार नामा उस ने खुद लिख कर मुझे सुनाया, जो यूँ था। मैं फलों इब्ने फलों वरेलवी मजहब का मतीअ हूँ मैंने एअतिराज किया कि मैं बारहा यह कह चुका हूँ कि वरेलवी कोई मजहब नहीं है। और अगर कोई नया मजहब बनाम बरेलवी है तो मैं उस से बरी हूँ। आगे इकरार नामे में उसने यूँ लिखा कि मैं इमाम अहमद रज़ा का पैरवहूँ और बरेलवियों में से एक हूँ और हमारा अकीदा है कि सरकार से तवस्सुल, इस्तिमासा और उन को पुकारना जाइज है। और सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम गैब जानते हैं। और वहाबी उन उमूर को शिर्क बताते हैं, और यह कि मैं उन के पीछे इस वजह से नमाज़

नहीं पढ़ता हूँ कि हम सुन्नियों को मुशरिक बताते हैं। इकरारनामे के आखिर में मेरे मुतालबे पर उस ने यह इजाफा किया कि बरेलियत कोई नया मजहब नहीं है और हम लोग अपने आप को अहले सुन्नत व जमाअत कहलवाना ही पसन्द करते हैं। फिर मुख्तलिफ नशिस्तों में बार बार वही सवालात दोहराये, बाद में मुझ से मेरे सफ़र लन्दन के बारे में पूछा और कहा कि किया वहाँ आप ने किसी कानफरन्स में शिरकत की है। मैंने जवाब दिया कि कानफरन्स हुकूमत के पैमाने और सियासी सतह पर होती है हम लोग न. सियासी हैं, न किसी हुकूमत से हमारा राबता है।

सी-आई-डी के पूछने पर मैंने बताया कि लन्दन के उस इजलास में जिस में शरीक था। बनाम बरेलियत मसाइल पर मुवाहिदा न हुआ। बल्कि इत्तिहादे इस्लामी और तन्जीमुल मुस्लिमीन पर तकारीर हुये और उस जलसा का खर्च वहाँ के सुन्नी मुसलमानों ने उठाया, और उस में यह मुतालबा किया गया कि इमाम अहमद रज़ा फाज़िले वरेलवी के पैर व अहले सुन्नत व जमाअत को राबता आलमे इस्लामी में नुमाइन्दगी दी जाये। जिस तरह नदवियों वगैरा को राबता में नुमाइन्दगी हासिल है।

सी-आई-डी-के पूछने पर मैंने बताया कि यह राजवीज़ बिलइत्तिफाक राये पास हो गई थी। तीसरी नशिस्त में जब दो नशिस्तों की तफतीश खत्म हो चुकी और मेरा इकरार नामा खुद तैयार कर चुके तो मुझ से एक बड़े

सी आई डी आफ़ीसर ने कहा कि मैं आप का आप के इल्म, उम्र और शख्सियत की वजह से एहतियाम करता हूँ और आप से मन्दासूस औकात में दुआओं का तालिब हूँ। गिरफ्तारी का सबब मेरे पूछने पर उसने बताया कि आप का कैसे मन्मूली है। वरना उस वक़्त जब सिपाही हथकड़ी डाल कर आप को लाया था मैं आप की हथकड़ी न खिलवाता।

मुख्तसर यह कि मुसलसल सवालात के बावजूद मेरा जुर्म मेरे बार बार पूछने के बाद भी मुझे न बताया, बल्कि यही कहते रहे कि मेरा मुआमला अहमियत नहीं रखता लेकिन उसके बावजूद मेरी रिहाई में ताखीर की और बगैर इजहार जुर्म मुझे मदीना मुनव्वरा की हाजिरी से मौकूफ़ रखा। और ग्यारह दिनों के बाद जब मुझे ज़ेदा खाना दिया गया तो मेरे हाथों में ज़ेदा एरपोर्ट तक हथकड़ी पहनाये रखी, और रास्ते में नमाज़ जोहर के लिए मौका भी न दिया गया, उस वजह से मेरी नमाज़ जोहर कज़ा हो गई।

बैनलल अकवामी एहतियाजी मुजाहिरी :

सितम्बर 1986 ई. 1407 हिजरी में दौरान हज जानशीन मुफती आजम को हुकूमत सऊदी अरब ने मक्का मुकर्रमा में बिला जुर्म सिर्फ़ ग़लबा-ए-नज्दियत की खातिर गिरफ्तार कर के ग्यारह दिन तक कैद व बन्द में रखा और मजीद सितम यह कि उन्हें दियारे हबीबे पाक सल्लल्लाहु ताला अलैहि वसल्लम की हाजिरी से भी

महलूम कर दिया। लेकिन जानशीने मुफती-ए-आजम अपने मौकफ और मसलक पर काइम रहे और उनके पाये सिबात में लगजिश नहीं आई।

आप की गिरफ्तारी से आलमे इस्लाम में गम व गुस्सा की एक लहर दौड़ गई थी। और न सिर्फ़ हिन्दुस्तान बल्कि बैरुने हिन्द वेशतर इस्लामी और गैर इस्लामी मुमालिक में सवाद आजम अहले सुन्नत के एहतियाजात का लम्बा सिलसिला शुरू हो गया था। अख़बारों व रसाइल ने भी जानशीन मुफती-ए-आजम की उस बेजा रिगफ्तारी की मजम्मत की। वर्ल्ड इस्लामिक मिशन वरतानिया, रज़ा एकेडमी मुम्बई, सुन्नी जमीअतुलउलमा जमीआ उलमा-ए-इस्लाम पाकिस्तान और छोटी बड़ी अन्जुमनों व जमाअतों ने जबर दस्त एहतियाजी मुजाहिरे पूरे बर्रे सरीर में किए। और हुकूमते सऊदी से मुआफी का मुतालवा किया।

शाह फ़हद, शहजादा अब्दुल्लाह और तर्की इब्ने अब्दुलअज़ीज़ से मुलाकात:

जानशीन-ए-मुफती-ए-आजम की गिरफ्तारी के रदे अमल पर काइदीने मिल्लत ने लन्दन में सऊदी हुकूमत के बादशाह शाह फ़हद, शहजादा अब्दुल्लाह (मौजूदा बादशाह) और तुर्की इब्ने अब्द अल अज़ीज़ वज़ीर-ए-ममलिकत से तवील मुलाकाते की, जिन में अल्लामा अरशदुलकादरी मौलाना अब्दुस्सत्तार ख़ाँ नियाजी, मौलाना शाह अहमद ग़रानी, मौलाना सय्यद गोलामुस्सय्यदैन, मौलाना शाहिद रज़ा नईमी, शाह मुहम्मद जीलानी सिद्दीकी मौलाना युनुस का

शमीरी, मौलाना अब्दुलवहाब सिद्दीकी और शाह फरीदुल हक और दीगर उलमा अहले सुन्नत ने हुक्मरान सऊदिया को पुर जोर अन्दाज में गिरफ्तारी पर एहतिजाज दर्ज कराया और हरमैन शरीफैन में हर मसलक के लोगों को अपने अकीदे के मुताबिक नमाज पढ़ने और दीगर अरकान करने पर मुतालबा किया, जिस पर उनसरबराहाने ममजुकत ने फौरन मन्ज़ूर कर लिया और उम्मत मुस्लिमा के लिए सऊदी हुक्मत ने एक एलानिया जारी किया कि:

"हरमैन शरीफैन में हर मसलक व मजाहिब के लोग अब आजादाना अपने तौर व तरीकों से एबादत करेंगे। कुन्जुलईमान पर पाबन्दी मेरे हुक्म से नहीं लगाई गई है, मुझे इस का इल्म भी नहीं है। अब मीलाद की मुहाफिल आजादाना तरीका पर होंगी, किसी पर मुसल्लत नहीं किया जायेगा। सुन्नी हेजाज किराम के साथ कोई ज्यादाती नहीं होगी।"

रोज नामा अलएहराम काहिरा 12/ रबीउलअव्वल 1407 हिजरी 1987 ई. रोजनामा जंग लन्दन 3/ मार्च 1987/1407 हिजरी वालाआखिर कुरबानी रंग लाई अहले सुन्नत के एहतिजाजात ने हुक्मत सऊदिया को यह सोचने पर मजबूर कर दिया और लन्दन में सऊदी फरमाँ रवा शाह फहद को यह एलान करना पड़ा कि हरमैन शरीफैन में हर मसलक के लोगों को उन के तरीके पर एबादात करने की आजादी होगी। अरकान वलडइस्लामिक मिशन बर तानिया ने लन्दन में शाह फहद और उन के भाई तुर्की इब्ने अब्दुलअजीज से

मुलाकात कर के इख़िलाफी मसाइल पर मजाकिरा के सिलसिला में गुफ्तगु की, अल्लामा अरशदुलकादरी रजवी ने सऊदी सफीर को बजबान अरबी एक एहतिजाजी मैमूरन्डम भी दिया।

21 मई 1987 ई. 1407 हिजरी को सऊदी सफारत खाना देहली से जानशिने मुफती आजम के दौलतकदा पर एक फौन आया और खुद सफीर सऊदिया ने आप से मुआफी मांगते हुये यह खबर दी कि।

हुक्मत सऊदी अरब ने आप को जियारत मदीना मुनव्वरा और उमरा के लिए एक माह का खुसूसी वीजा दिया है।

जानशीन-ए-मुफती आजम 24 मई 1987 ई. 1407 को सऊदी फ्लाइट से वाया जद्दा, मदीना मुनव्वरा पहुँचे। सऊदी सफारत खाना ने आप की आमद की इत्तिलाअ बजरीआ टेलिकस जद्दा और मदीना हवाई अड्डों पर देदी थी। सऊदी सफीर मिस्टर फवाद सादिक मुफती ने इस मुआमला में काफी दिलचस्पी ली। जानशीन मुफती आजम उमरा और मदीना मुनव्वरा की जियारत से मुशरफ हो कर सऊदी में सौला रोज कियाम के बाद वतन वापस आये। देहली हवाई अड्डा और बरेली जंकशन पर हजारों मुसलमानों ने पुर जोश इस्तिकबाल और खैरमकदम किया।

तक़वा शिआरी:

आज कल पिर फकीर और आलिमों और आमिलों के इर्द गिर्द औरतों का हुजूम लगा रहना आम सी बात है,

जहाँ देखिए मुंह खोले चलती फितरी नजर आयेंगी। हया नाम की कोई चीज ही बाकी नहीं रह गई है, मगर जानशीने मुफ्ती आजम की तकवा शिअरी मुलाहिजा फरमायें।

1407 हिजरी की बात है कि जनान खाने में औरतें जियारत और बैअत के लिए हाजिर हैं। जब आप जनान खाने में तशरीफ ले गये तो चन्द औरतों के निकाब उलटे और मुंह खुले हुये थे। आप ने फौरन अपनी आँखें बन्द कर लीं और फरमाया "निकाब डालो निकाब डालो, ला हौला वला कुव्वता इल्लाह विल्लाहिल अलियुलअजीम।"

(मुफ्ती आजम और उन के खुलफा जिल्द अब्दुल स. 50 मअजूआ रजा एकेडमी 1990 ई)

सब औरतों ने निकाब डाल ली, फिर बैअत फरमाया शरीअत की पास्दारी हो तो ऐसी हो। सफर चाहे जैसा हो, हवाई जहाज से हो या ट्रेन या गाड़ी से नमाज का वक्त होते ही नमाज की अदायेगी के लिए वे चैन हो जाते हैं। अकसर राकिमुस्तुतुर को हुक्म फरमाते कि मुसल्ला बिछाओ, नमाज पढ़ूँगा, चाहे एरपोर्ट हो या स्टेशन, नमाज तो कच्चा नहीं होती। नमाज पढ़ने की सभी को ताकीद फरमाते। हजरत राकिम से अकसर पूछते कि नमाज पढ़ी कि नहीं, अगर मालूम हो गया कि नमाज नहीं पढ़ी तो सख्त नाराज होते। मुझे खुब याद है कि 1991 ई से 2006 तक तकरीबन 15 साल तक मैं ने हजरत के साथ पूरे मुल्क का सफर किया मगर नमाज हजरत की कोई कच्चा नहीं हुई।

अल्लाहुअकबर।

खिलाफत व इजाजत की शानदार तकरीब:

जानशीन-ए-हुजूर मुफ्ती-ए-आजम अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद रजा खॉ अजहरी बरेलवी की खिलाफत व इजाजत की तकरीब, एक हसीन और शानदार तकरीब थी, दारुलउलूम मजहर-ए-इस्लाम बरेली के संह रोजा इजलास 13/14/15/जनवरी 1962 ई/6/7/8 शअबानुलमुअज़्जम 1381 हिजरी की सदारत और सरपरस्ती ताजदारे अहले सुन्नत हुजूर मुफ्ती-ए-आजम कुददुस सिरुहु ने फरमाई।

हुजूर मुफ्ती-ए-आजम कुददुस सिरुहु ने मौलाना साजिद अली खॉ बरेलवी मोहतमिम दारुलउलूम मजहर-इस्लाम को हुक्म दिया कि 15/जनवरी 1962 ई./8/शअबान 1381 हिजरी को सुबह 7 बचे घर पर महफिले मीलाद शरीफ का इन्फेक़ाद किया जाये। मीलाद खॉ हज़ारात उलमा व मशाइख और तलबा मदारिस व फारिगुल्लहसील होने वाले तलबा की दअवत शिरकत दे दी जाये। शदीद सरदी के मोसम में कई हज़ार लोगों ने मीलाद शरीफ में तशरीफल लाये और ताजुशरीआ अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद अखतर रजा खॉ अजहरी को बुलवाया, अपने करीब बठाया, दोनों हाथ अपने हाथों में ले कर जमीअ-ए-सलासुल आलिया कादरिया सहरवर्दिया, नवशबन्दिया चिशितयाँ और जमीअ सलासुल अहादीस मुसलसल बिलअव्वलियत की इजाजत व खिलाफत से सर फराज फरमाया। तमाम औराद व वजाइफ, आमाल व अशगाल, दलाइलुलखैरात, हज़बुलबहर, मअजीजात वगैरा वगैरा की इजाजत मरहम्मत फरमाई।

इस मौके पर मुजाहिद मिल्लत मौलाना हबीबुर्रहमान अब्बासी रईस आजम उडीसा, बुरहाने मिल्लत मुफ्ती बुरहानुलहक जबल पूरी, मौलाना खलीलुर्रहमान मुहददसि अमरोहवी, अल्लामा मुश्ताक अहमद निजामी इलाहाबाद, मुफ्ती नजीरुलअकरम नईमी मुरादाबादी मौलाना मुहम्मद हसीन संभली, मौलाना अनवार अहमद शाहजहाँपुरी, मौलाना काजी शमसुद्दीन जाफरी जौनपुरी, मौलाना कमाल अहमत तुलशीपुरी, मौलाना शअबान अली हुब्बानी गोन्डवी, सूफी अजीज अहमद बरेलवी वगैरा जैसे जय्यद उलमा मशाइख मौजूद थे। सभी हज़रत ने उठ उठ कर यक़े बाद दीगरे ताजुशरीआ को मुबारकवादियाँ दीं। (माहनामा नूरी किरन बरेली स 40, फरवरी 1962 ई / 1381 हिजरी)

जानशीन मुफ्ती आजम को बचपन ही में हुज़ूर मुफ्ती आजम मुफ्ती सिर्रहु ने वैअत फरमा लिया था और बीस साल के बाद खुद ही हुज़ूर मुफ्ती आजम ने मीलाद शरीफ की महफिल में ख़िलाफत व इजाजत से सरफराज फरमाया। जब हुज़ूर मुफ्ती आजम ने 15 जनवरी 1962 हिजरी 1381 हिजरी को ख़िलाफत अता फरमाई उस वक़्त शमसुलउलमा मौलाना काजी शमसुद्दीन अहमद रजवी जअफरी अलैहिर्रहमा, बुरहानुलमिल्लत मुफ्ती बुरहानुलहक रजवी जबलपुरी अलैहिर्रहमा भी तशरीफ़ फरमा थे। मुफ्ती बुरहानुलहक रजवी जबलपुरी ने फरमाया कि हुज़ूर मुफ्ती आजम से मेरी गुफ्तगु इस बारे में हुई है, कि हुज़ूर मुफ्ती आजम ने फरमाया था कि जानशीन अपने वक़्त

पर वही होगा जिसे होना है। सदरुशरीआ मौलाना अम्जद अली रजवी फ़ाज़िल बरेलवी से दरयाफ़त किया था कि हुज़ूर आप का जानशीन कौन होगा ? तो आला हज़रत ने हुज्जतुल इस्लाम अलैहिर्रहमा के मुतअल्लिक़ फरमाया बड़े मौलाना, मैंने अर्ज किया। उन के बाद फरमाया मुसतफ़ा (हुज़ूर मुफ्ती आजम) अर्ज किया उन के बाद फरमाया जीलानी, बशर्त इल्म व अमल की कैद, सुन्नियत आला हज़रत है। जब आला हज़रत ने नबीरा-ए-आला हज़रत मुफ़रिस्सरे आजम हिन्द अलैहिर्रहमा को मुरीद किया तो शजरा पर तहरीर फरमाया, "खलीफ़ा इन्शाअल्लाह बशर्त इल्म व अमल" यही रजिस्टर मुरीदीन में तहरीर फरमाया। हुज़ूर मुफ्ती आजम कुदिसा सिर्रहु ने अपने जानशीन के मुतअल्लिक़ इरशाद फरमाया कि इस (अल्लामा मुहम्मद अख़्तर रजा ख़ाँ अजहरी) लडके से बहुत उम्मीद है"।

हुज़ूर मुफ्ती-ए-आजम कुदिसा सिर्रहु ने आख़री ज़माने में एक तहरीर जानशीने-मुफ्ती-ए-आजम को एनायत फरमाई और इस में अपना जानशीन और काइम मक़ाम बनाया,

14/15/नवम्बर 1984 ई को मारहरा मुत्तहरा में उर्स कास्मी की तकरीब में अहसनुलउलमा मौलाना मुफ्ती सैयद हसन मियाँ बरकाती सज्जादा नशीन ख़ानकाह बरकातिया मारहरा ने जानशीन मुफ्ती आजम का इस्तिक्बाल "काइम मक़ाम मुफ्ती-ए-आजम अल्लामा अजहरी जिन्दा वाद" के नअरा-ए-से किया और मजमअ

कसीर में उलमा व मशाइख और फुजला व दानिशवरों की मौजूदगी में जानशीन मुफ्ती-ए-आजम को यह कह कर "फकीर आस्ताना आलिया कादरिया बरकातिया नूरिया के सज्जादा की हैसियत से काइम मकाम मुफ्ती आजम अल्लामा अखतर रजा खॉ साहिब को सिलसिला कादरिया बरकातिया नूरिया की तमाम खिलाफत व इजाजत से माजून व मजाज करता हूँ, पूरा मजमा सुन ले, तमाम बरकाती भाई सुन ली, और यह उलमा-ए-किराम (जो उर्स में मौजूद हैं) इस बात के गवाह रहें"।

बअदोह अहसनूलउलमा मौलाना सैयद हसन मिया बरकाती महजुल्लाहु ने जानशीने मुफ्ती-ए-आजम की दस्तारबन्दी की और नजर भी पेश की।

सैयदुलउलमा मौलाना अश्शाह सैयद आले मुस्तफा बरकाती मारहरवी अलैहिर्रहमा ने जुमला सलासुल की इजाजत व खिलाफत अता फरमाई और खलीफा इमाम अहमद रजा बुरहानेमिल्लत हजरत मुफ्ती बुरहानुलहक रजवी जबलपुरी अलैहिर्रहमा ने भी तमाम सिलसिलों की खिलाफत से नवाजा।

वालिद माजिद मुफिस्सरे आजम हिन्द ने अपने फरजन्द अरजमन्द को कबल फरागत इल्म आला हजरत इमाम अहमद रजा का जानशीन बनाया और एक तहरीर भी एनायत फरमाई

रैहाने मिल्लत मौलाना मुहम्मद रैहान रजा बरेलवी साबिक मोहतमिम मन्जर इस्लाम अपनी इरादत में शाइअ

होने वाले "माहनामा आला हजरत" में बउनवान "कदाइफ दारुलउलूम" तहरीर फरमाते हैं। "यह तरीर उस जमाने की है जब मफस्सरे आजम हिन्द मौलाना इब्राहीम रजा बरेलवी कुदिसा सिर्रहु की तबीअत बहुत ज्यादा अलील थी, और सारे लोगों को यह उम्मीद थी कि अब मौलाना इब्राहीम रजा जीलानी बरेलवी जाहिरी दुनिया से रुखसत हो जायेंगे, बवजहे अलालत यह तवक्को नहीं कि अब ज्यादा ज़िन्दगी हो, बिना बरीं जरूरत थी कि दूसरा काइम मकाम हो। लिहाजा अखतर रजा सल्लमाहु को काइम मकाम व जानशीने आला हजरत बनादिया गया, जानशीन का अमामा बाँधा गया, और इबा पहनाई गई। यह दस्तार और इबा और तलबा की दस्तार व इबा अहले बनारस की तरफ से हुई।"

(माहनामा आला हजरत बरेली सं. 32, दिसम्बर 1962ई 1382 हिजरी)

तादादे मुरीदीन

फकीह-ए-इस्लाम अल्लामा मुहम्मद अखतर रजा अजहरी के मुरीदीन हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, मदीना मुनव्वरा, मक्का मुअज्जमा बंगला देश, मुरिशाश सिरीलंका, यूके, साइतैन्ड, जुनूबी अफरीका, अमरीका जरमन, इंग्लैन्ड, एराक, ईरान, तुर्की, वगैरा ममालिक में लाखों की तअदाद में फैले हुये हैं। मुरीदीन में बड़े बड़े उलमा, मशाइख, सुलहा, शोअरा, मुफ्तिकरीन, काइदीन, मुसन्नफीन, रिसर्च इस्कालर, प्रोफेसर, डाक्टर और मुहक्कीन हैं जो आप की गुलामी पर फय्र करते हैं।

मौलाना मुस्तफा रजा नूरी बरेलवी कुदिसा सिर्रहु ने

अपने सामने लोगों को आप के हाथ पर बैअत करने के लिए हुक्म फरमाते, यहाँ तक ही नहीं। बल्कि मुफ्ती आजम हिन्द कुदिसा सिरहु ने अपने सामने लोगों की कसीर तअदाद को ताजुशरीआ के हाथ पर बैअत करवाया और बहुत से मकामात पर अपना जानशीन और काइम मकाम बनाकर रवाना किया। मजमा के मजमा ने आप के दस्त मुबारक पर बैअत कबूल की। सिलसिला कादरिया बरकातिया रजविया की सब से ज्यादा इशाअत हुजूर मुफ्ती आजम के बाद ताजुशरीआ ही कर रहे हैं। उन दो बुजुर्गों ने सिलसिला को वसीअ से वसीअ तर कर दिया है।

इशके रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम

वारगाहे इलाही से जानशीन मुफ्ती-आजम को इशके नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का वाफिर हिस्सा अता हुआ है, इमाम अहमद रजा बरेलवी ने इशके रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम में गुम हो कर "हदाइके बख्शिशा" का बेश बहा तोहफा कौम व मिल्लत को दिया। उन्हीं के हकीकी जानशीन ने इशके रसूल से सरशार हो कर "सफीना-ए-बख्शिशा" का वह तोहफा-ए-नायाब कौम को दिया जिसके हर शेअर से इशके रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम छलकता है, सफीना-ए-बख्शिशा के अशआर पढ़िए और इशके रसूल में गुम हो जाइये। बसा ओंकात यह मुशाहिदा हुआ कि अपना कलाम जब पढ़ते हैं तो वारफतगी सी छा जाती है। आँखें आँसूओं में डबडबाने लगती हैं। और नअत शरीफ पढ़ते वक़्त एक

वास कैफियत तारी हो जाती है।

शेअर व शाइरी और नमूना-ए-कलाम

जानशीने मुफ्ती-ए-आजम ने तीनों ज़बानों में शेअर व शाइरी में तबअ आजमाई की। उसकी यहाँ पर कदरे वजाहत की जाती है। आप को ज़माना-ए-तालिबइल्मी में ही शेअर व शाइरी का शगफ हो गया था। मगर ज्यादा रुजहान उसकी तरफ न था। इब्तिदाई में शाइरी की इसलाह अपने असातिज़ा और वादिल माजिद से लेते रहे, ज़माना-ए-तालिबइल्मी की नेअमते, नज़में "माहनामा आला हजरत" में छपतीं रहीं। आस्ताना रजविया पर मुन्अकिद होने वाले "मुशाइरे" में भरपुर हिस्सा लेते और आला कामयाबी होती, ताजुशरीआ और आप के बराबर अवबर की शाइरी का मवाज़ ना भी होता। सुनने वालों का कहना है कि हर दो शख्स के कलाम में एक अलाहीदा ही चारानी होती, आप को शेअरगोई का शौक ज़माना-ए-तालिब इल्मी से ही था। इन्नीस साल की उमर की एक नअत पाक के बन्द शेअर मुलाहिज़ा हों।

इस तरफ भी एक नजर महर दरख़्शान जमाल हम भी रखते हैं बुरहत मुदत से अरमान जमाल इक इशारे से किया शक़ माहे ताबाँ आप ने मरहबा सद मरहबा सल्ले आला शाने जमाल फर्श आँखों को बिछाओ रह गुज़र में आशिकों हर तरफ देखेंगे ऐसे जलवा-ए-शान जमाल मर के मिटटी में मिले वह वा खुदा बिलकुल ग़लत

मिस्ल साबिक अब भी हैं मरकद में सुलतान जमाल
 हासिदाने मुस्तफा को दीजिए अखतर जवाब
 दर हकीकत मुस्तफा प्यारे हैं सुलतान जमाल
 मार्च 1987 ई. 1407 हिजरी को एक हादसा में चौट
 आ जाने के बाद जानशीन मुफती-ए-आजम को कई रातें
 ठीक से नीन्द न आई। शब 10 मार्च 1987 ई को रात भर
 न सो सके, और उसी इजितराब के आलम में उन्होंने
 मन्दर्जा नअत अकदस कही।
 चन्द अशआर दर्ज जैल हैं :
 तलातुम है यह कैसा आँसूओं का दीदा-ए-तर में
 यह कैसी मौजें आई हैं तमन्ना के समन्दर में
 तजरसुस की करवटे क्यों ले रहा है कल्बे मुजतर
 मदीना सामने है बस अभी पहचान में दम भर में
 न रखा मुझ को तय्यबा की कफस में इस सितम गिर ने
 सितम कैसा हो बुलबुल पे यह कैद सितम गिर में
 सितम से अपने मिट जाओगे तुम खुद ऐ सितमगारो
 सुन्नियों हम कह रहे हैं बे खतर दोते सितम गिर में
 नवाते जलवा-ए-गाह नाज मेरे दीदा-ए-व दिल को
 कभी रहते वह इस घर में कभी रहते वह उस घर में
 मदीने से रहें खुद दूर उस को रोकने वाले
 मदीने में खुद अखतर मदीना चशम अखतर में
 जब जानशीने मुफती-ए-आजम को गुम्बदे खजरा
 की जियारत करे बगैर हिन्दुस्तान वापस भेजदिया गया तो
 हुकूमत सऊदिया के जुल्म व बरबरियत से मुतास्सिर हो

कर यह नअत पाक कही, इस मौका पर जब 17 फरवरी
 1987 ई को झर या (बहार) के एक जलसा में एक शाइर ने
 उसी जमीन में एक नअत पढ़ी थी। आप ने बरजस्ता स्टेज
 पर ही सात शेअर कहे और बकिया अशआर ट्रेन में कहे।
 चौदह अशआर में से चन्द मुलाहिजा हो।
 दागे फुरकत तैबा कल्ब मुफमहल जाता
 काश गुम्बद खजरा देखने को मिल जाता
 मेरा दम निकल जाता उन के आस्ताने पर
 उन के आस्ताने की खाक में मैं मिल जाता
 मौत लेके आजाती जिन्दगी मदीने में
 मौत से गले मिल कर जिन्दगी में मिल जाता
 दिल पे जब किरन पड़ती उन के सब्जे गुम्बद की
 उसकी सब्जे रंगत से बाग बनके खिल जाता
 फुरकत मदीना ने वह दीए मुझे सदमे
 कोह पर अगर पड़ते कोह भी तो हिल जाता
 दरपे दिल झुका होता इज़न पाके फिर बढ़ता
 हर गुनाह याद आता दिल खजिल खजिल जाता
 मेरे दिल में बस जाता जलवा-ए-ज़ार तैबा का
 दाग फुरकत तैबा फूल बन के खिल जाता
 उनके दरपे अखतर की हसरते हुई पूरी
 साइल दर अकदस कैसे मन्फ़अील जाता
 मौलाना अब्दुलहमीद रजवी अफरीकी हुज़ूर मुफती-ए-आजम
 की नअते पाक
 तू शम्मे रिसालत है आलम तेरा परवाना

तू माहे नवुखत है ऐ जलवा-ए-जानाना
हुजूर मुफ्ती आजम की मजलिस में पढ़ रहे थे, जब यह
मकतअ पढ़ा

आबाद उसे फरमा वीरों है दिल नज्दी
जलवो तेरे बस जाये आबाद हो वीराना
तो हुजूर मुफ्ती-ए-आजम ने फरमाया कि बेहम्देही
तआला फकीर का दिल तो रौशन है अब उसको यूँ पढ़ो।
आबाद उसे फरमा वीरान है दिल नज्दी जलवे तेरे
बस जायें आबाद हो वीराना।

इस वक्त जानशाने मुफ्ती आजम इस मजलिस में
रौनक अफरोज थे और फौरन बर जस्ता हुजूर मुफ्ती आजम
के सामने अर्ज किया। हुजूर मकतअ को इस तरह पढ़
लिया जाये।

सरकार के जलवों से रौशन है दिल नूरी
ता हश् रहें रौशन नूरी का यह काशाना
हुजूर मुफ्ती आजम कुदिसा सिरुहु ने यह मकता बहुत
पसन्द फरमाया और दाओं से नवाजा।

जानशीन-ए-मुफ्ती-ए-आजम ने अरबी ज़बान में
हुजूर मुफ्ती-ए-आजम के विसाल पर तारीख विसाल कही
चन्द शेअर मुलाहिज़ा हो।

ثوى المفتى العظام محمد
بدار فالكرام بها من دار
حوت فى عقرها شمس الزمان
فامست من سنّها مطلع الانوار

سماء الفضل بدر سماننا
اياويه فينا كا سماء الممدار
سماء ته غابت فاظلمت الدجى
فمن توقوف موفى المحترار
رحيلك شيخى ثلثة اى ثلثة
بذالدين جلت عن الاطهار
سئلون اختر اخر حلة سيدى
فقلت "عظيم الشأن" لمتنا الدار

चन्द गैर मुस्लिम का कबूले इस्लाम:

ताजुशशीआ के दस्ते मुकद्दस पर मुशर्रफ बा इस्लाम
होने वालों की एक इजमाली फिहरिस्त है, मगर यहाँ पर
चन्द नो मुस्लिमीन का तजकरा मुनासिब मालूम होता है।

कौमे कबूले इस्लाम "रियावार" नाम "गुलाब"
बादहु "मुस्लिम रजवी" यह रहने वाले जबलपुर भोटा ताल
के हैं। बचपन के ज़माने में घर से निकल गये थे और
साधूओं की जमाअत में रहते रहे जवानी का आलम उसी
आलम में गुजारा, मुहम्मद मुस्लिम रजवी के साथियों में एक
साथी लड़का मुसलमान था। उसके हमराह बचपन के
जमाने में पढ़ा करते थे, और मजहबे इस्लाम की कुतुब
तजकरा उसने किया था। साधूओं में रह कर
जब सुकून नहीं पाया तो मजहबे इस्लाम की किताबों का
मुतालअ करना शुरू किया।

दरयाफ्त करने पर बताया कि मुझे उस में बहुत

सुकून मिला और मेरा दिल एक दम मुजतरब हो गया, कि मजहबे इस्लाम कबूल कर लें, फौरन बरेली शरीफ हाजिर हुआ। यहाँ पर चान्द जैसे चेहरे वाले एक शख्स को देखा। उनके बारे में मालूम किया कि यह कौन शख्स हैं। लोगों ने बताया कि यह हुजूर मुफ्ती-ए-आजम कुदिदसा सिरहू के जानशीन हैं। इस वजह से मेरा दिल और वे करार हुआ, मैंने अर्ज किया हुजूर आप के दस्त अकदस पर इस्लाम कबूल करना चाहता हूँ, फौरन जानशीन मुफ्ती-ए-आजम ने कलमा तैयबा पढ़ाकर इस्लाम में दाखिल किया, नीज सिलसिला कादरिया व रजविया में बैअत भी फरमाया।

नौ मुस्लिम जनाब मुहम्मद अहसन रजवी(साबिका) नाम मस्टर जार्ज स्टेफन जो मअ फेम्ली ईसाई से मुसलमान हुये हैं। मुहम्मद अहसन रजवी कथोलिक चर्च नराइन गढ़ जिला अम्बाला (पंजाब) में एक मुबल्लिग स्पीकर और टीचर की हैसियत से काम करते थे। और उन्हें वहाँ काफी मुराआत हासिल थीं, तब्लीगी व तहरीरी कामों के एलावा उन के जिम्मा बाइबिल का दर्स और कुरआन, बाइबिल का तकाबुली मुतालअ कराना, नीज इस्लाम मजहब पर तन्कीद का काम भी सोंपा हुआ था। मुहम्मद अहसन रजवी उर्दू ज़बान व अदब में काफी दस्तर्स रखते हैं। फारसी और अरबी से भी वाकफियत है। कुरआन मजीद बहुत अच्छी तरह से पढ़ते हैं और उन्हें कुरआन मुकद्दस की बहुत सारी आयतें और सूरेतें याद हैं। नीज उनकी मजहबी मालूमात भी काफी वसीअ हैं, और उन्हे इस बात पर फख्र है

और मुसरत भी, कि उन्होंने इस्लाम गौर व फिक्र के बाद कबूल किया है, और यह कि वह सहीह रास्ते पर आ गये हैं, और उन्होंने सच्चा मजहब और दीने फितरत कबूल कर लिया है।

1986 ई. 1406 हिजरी में जानशीने मुफ्ती-ए-आजम के हाथों पर मुसलमान हुये, और उन्हीं से दाखिल सिलसिला भी हुये, कुछ अय्याम तक जानशीन मुफ्ती-ए-आजम के दौलत कदा पर कियाम पजीर रहे और दीनयात रोजा, नमाज, इस्लामी तौर तरीके सिखे, बरेली शरीफ का पता उन्हें फतावा रजविया जिल्द ग्यारह से मालूम हुआ। बरेली आ कर उन्होंने यह भी बताया कि वह वहाबी, दैवन्दी और शीआ वगैरा मज़ाहिब का भी मुतालअ कर चुके हैं, और उन्हें बरेली मसलक ही सही मसलक मालूम हुआ। लिहाजा वह मुसलमान होने के लिए कई जगह से लौट फिर कर बरेली आये।

मुहम्मद अहसन रजवी ने अपने मुसलमान होने के बारे में बताया कि तकरीबन छः माह से बड़े जहनी करब में मुब्तला था और अक्सर सोचा करते थे कि जिस बाइबिल की वह तअलीम देते हैं यह असल इन्जील नहीं है, और इस बाइबिल में बावजूद तहरीफ व तरमीम के मुसलमानों के नबी हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की आमद का तजकरा है उनके आखरी नबी और उनके महमतुल्लिलआलमीन होने का जिक्र है, और खुद हजरत परीह अलैहिस्सलाम उन के बारे में फरमाते हैं कि मेरे बाद

वह आयेगा जो कमफूर टर (रहमतुललिलअलमीन)होगा जिस का नाम आस्मानों में "अहमद" और ज़मीन में "मुहम्मद" है, और वही निजात दा हिन्दा है, तो फिर ईसाई हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को क्यों नहीं मानते और उन पर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को क्यों फौकियत देते हैं। और जब यह मकफूटर हैं यही रसूल अरबी आखरी नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हैं और खुद हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम कुरब कियामत ज़मीन पर उतर कर उन्हें के दीन की पैरवी करेंगे, तो फिर दीन तो उन्हें मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का आखरी दीन और सच्चा दीन है। एलावा उसके यह इस बात पर भी गौर व फिक्र किया करते थे कि अगर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम खुदावन्द कुदूस के बेटे हैं तो फिर उनका बाप जो तमाम ज़हानों का मालिक है। इतना बे बस हो गया कि उसने अपने बेटे को मगलूब करा दिया, और फिर अगर वह खुदाबाप है तो वह वहदहु ला शरीक कैसे है, और अब अपने बजाये खुदा या अल्लाह के (मआज़ल्लाह)वह तो खुद इन्सान हो गया, और यह नामुम्किन है लिहाज़ा हज़रत मसीअ खुदा के फरज़न्द नहीं, वह खुदा के बन्दे और नबी व रसूल हैं।

मुहम्मद अहसन रज़वी दुनिया के तमाम मुमालिक के सियासी, समाजी निज़ाम पर भी गौर करते थे कि कानून और हर उसूल लोगों ने ही वज़अ कर रखे हैं, लोग जो मुसलमानों के कुरआन और हदीस के उसूल हैं। फर्क यह

है कि उसे सही मअनों में इस्लामी तरीके से बरतते नहीं और उस पर किसी ने कमयूनज़म की छाप लगा रखी है। किसी ने सोशलज़म की और किसी ने अपनी नज़रयाती थीयूरी का लेबील लगा रखा है। गोया नज़री तकाज़ों को जो मज़हब या जो उसूल पूरा करता है वह इस्लाम ही है। यह बात और है कि इस ज़माना के मुसलमान खुद अपने उसूल से हट गये हैं। लेकिन उसके बा वजूद आज भी दीगरर कौमों के मुकाविला में मुसलमानों में 25 फीसद बुराई कम है।

मुहम्मद अहसन रज़वी ने यह भी बताया कि दुनिया के दीगर मज़ाहिब बुराई से बचने को ज़रूर मनअ करते हैं। लेकिन बुराई से बचाने का उनके यहाँ कोई नुस्खा या एलाज़ नहीं है और अगर यह एलाज़ कहीं है तो सिर्फ़ मज़हबे इस्लाम में, इन्हीं तमाम बातों को सोंच कर कुरआने मुकद्दस के मुतालअ ने जो हर कौम और हर फर्द के लिए हिदायत है इसलिए यह मुसलमान हो गये, मुहम्मद अहसन रज़वी खुदा का शुक्र अदा करते हैं कि बगैर किसी लालच या दुनियावी फ़ायदे के यह मुसलमान हुये हैं। और इस आलम में जबकि चर्च के बैंक में उनका बीस हजार रुपया जमा है, जिसे अब चर्च के ज़िम्मा दारान मुहम्मद अहसन रज़वी को देने से गुरेज़ कर रहे हैं और उन्हें तरह तरह के लालच दे रहे हैं। लेकिन उनके पाये सिबात में लगज़िश नहीं आ रही है।

जनाव मुहम्मद अहसन रज़वी की अहलिया और दो

लड़के एक लड़की भी 1986 ई. को मुसलमान हुई। अहलिया का साबिका नाम "सरीन्दार मसीह" था। अब नाम मरयम खातून है। लड़कों के साबिका नाम पैटर उमर 9 साल, और मूसिस उमर 4 1/2 साल, दोनों बच्चों का इस्लामी नाम महमूद हसन रजवी, मुहम्मद हसन रजवी और बच्ची का साबिका नाम रोजीना उमर 6 साल, इस्लामी नाम "कनीज़ फातमा" है। उनकी खुश नसीबी है कि जानशीन मुपती-ए-आजम के हाथ पर मुशरफ ब इस्लाम हुये और दाखिल सिलसिला भी फरमाया।

एक लड़की जो अहल हनूद से तअल्लुक रखती थी जिसकी उमर तकरीबन बीस या बाईस साल की थी। उसने अज खुद बरेली शरीफ आ कर 27 सफरुलमुजफर बरोज जुमा 29 सितम्बर 1410 हिजरी 1989 ई. को जानशीन मुपती-ए-आजम के दस्त हक परस्त पर मुशरफ ब इस्लाम हुई। और जानशीन मुपती-ए-आजम ने उसे दाखिल सिलसिला भी फरमाया। मालूम करने पर उसने बताया कि मैं खुद बखुद इस्लाम के पाकीजा मजहब होने की वजह से इस्लाम लाई हूँ, किसी ने मुझे बहकाया नहीं है। कव्व इस्लाम उसका नाम "अस्ते" था, जानशीन मुपती-ए-आजम ने उसका नाम कनीज़ फातमा रखा।

राये बरेली का रहने वाला शादी शुदा गवाला उसने जमादुलअव्वल 1409 हिजरी 1989 ई. को जानशीन मुपती-ए-आजम के हाथ पर शर्फ इस्लाम से मुशरफ हुआ। उसने इस्लाम लाने का सबब यह बताया कि उसके

बाप का इन्तिकाल हो गया था। और उसके घर में यह है कि जो सब से छोटा बेटा होगा या सब से बड़ा बेटा होगा वह अपने बाप की लअश को जलायेगा, और यह भी है कि अपने बाप की लअश पर बांस से मारेगा। उस लड़के ने एक बांस सर पर मारा और ख्याल किया कि यह मेरा मजहब गलत है, और मुसलमानों का मजहब सही है और उसने रात को ख्वाब में देखा कि हम एक बड़ी मस्जिद में बैठे हैं और उस मस्जिद में एक जईफ हसीन खुबसूरत चेहरे वाले तशरीफ फरमा हैं, और वह यह कह रहे हैं कि बेटा कलमा पढ़, मैंने कलमा पढ़ लिया। वह जब बरेली आया तो उसने जानशीन मुपती-ए-आजम को देखा, फौरन चीख पड़ा कि अपने मालिक की कसम फलों मस्जिद में मैं ख्वाब में उन्हें बुजुर्ग को देखा था, और उन्होंने ही मुझे कलमा पढ़ाया था। वह लड़का फौरन जानशीन मुपती-ए-आजम के दस्त पाक पर कलमा शरीफ पढ़ लेता है और दाखिले सिलसिला हो जाता है। उसका नाम जानशीन मुपती-ए-आजम ने "अब्दुल्लाह" रखा।

एक सिख फरीदपुर जिला बरेली शरीफ का रहने वाला था। उसने जुलाई 1989 ई./1410 हिजरी जानशीन मुपती-ए-आजम के हाथ पर शर्फ इस्लाम कबूल किया। उसने अपने इस्लाम कबूल करने की वजह बताई कि दीने इस्लाम एक पाकीजा दीन है, जिस में मसावात व उखवत का दर्स दिया जाता है। जब मैंने अपने धर्म और मजहब इस्लाम का तकाबुली जाइजा लिया तो मुझे मजहब इस्लाम

नफीस और पसन्दीदा लगा और मुशरफ़ बा इस्लाम हो गया। जानशीन मुफती-ए-आज़म ने दाखिल सिलसिला फारमा कर उसका नाम "मुहम्मद मुस्लिम" रखा।

इन मजकूरा लोगों के अलावा सैकड़ों गैर मुस्लिमों ने हज़ारत के हाथ पर इस्लाम कबूल किया। रज़ा एकडेमी मुम्बई के जेरे एहतिमाम सद साला जशन हुज़ूर मुफ्त आजम में आप मिम्बर पर जलवा अफ़रोज़ थे, तीन गैर मुस्लिम रास्ता से निकलते हुये जा रहे थे, जब उनकी नज़र आप के चेहरा-ए-अनवर पर पड़ी, वह लोग इतना मुतास्सिर हुये कि मिम्बर पर आकर इस्लाम कबूल किया। हज़ारों के मजमअ ने उन नोनहालाने इस्लाम का पर तपाकइस्तिक़बाल किया। बिल्कुल ऐसा ही वाफ़िआ अजमीर शरीफ़ में 1999ई को हुआ। जिस का राकिम ऐनी शहिद है। राकिमुत्सुतुर हज़ारत के हमराह आस्ताना-ए-ख़ाजा पर हाज़री की शरफ़ियादी के बाद रेलवे जंक्शन बज़रीआ आटो पहुँचे, आटो रिक्शा से उतरते ही एक शख्स हज़रत के कदमों में गिरपड़ा, मैं वक्ती तौर पर ज़रा धबराया कि आखिर यह कौन शख्स है। मगर बाद में पूछने पर कहने लगा कि मैं अपनी आँखों से देवता को देख रहा हूँ। (मआज़ल्लाह) मैंने इस को मना किया। कुछ देर तक टकटकी बांधे देखता रहा फिर बोला कि मुझे मुसलमान कर लीजिए। हज़रत ने वहीं करीब ही स्टेशन पर दाखिल इस्लाम कराया।

तुयज़नल्लाह

तब्लीगी व तअलीमी इदारों की सर परस्ती

हिन्दुस्तान से बाहर बहुत से ममालिक में दरजनों तब्लीगी और तअलीमी इदारे जानशीन मुफती-ए-आज़म की सर परस्ती में रात व दिन मसरूफ़ अमल हैं। हिन्दुस्तान में जिन इदारों की सर परस्ती जानशीन मुफती-ए-आज़म करते हैं उसकी एक तवील फिहरिस्त है। जिस में से चन्द मन्दरजा जैल हैं :

इस्लामिक रिसर्च सेन्टर कसगिरान सौदागिरान

1- मरकजी दारुलइफ़ता सौदागिरान बरेली शरीफ़

2- जामिआतुर रज़ा मथुरापुर बरेली शरीफ़

3- अख़तर रज़ा लाइबरीरी सद बाज़ार छाऊनी लाहूर (पाकिस्तान)

4- मरकजी दारुल इफ़ता डैनहाग हालैन्ड,

5- जामिआ मदीनतुलइस्लाम डैनहाग हालैन्ड

6- अलजामिअतुलइस्लामिया गंजकदीम, रामपुर

7- अलजामिअतुलनूरिया ऐनी कैसर गंज जिला बहराइज

8- अलजामिअतुरजदिया व माहनामा नूर मुस्तफ़ा मुग़लपुरा पटना (बिहार)

मदरसा अरबिया गौसिया हबीबया पुर, एम-पी-

मदरसा अहले सुन्नत गुलशन रज़ा बकारोस्टील धनबाद, बिहार

11- मदरसा गौसिया जशने रज़ा पैटलाद गुजरात

12- दारुलउलूम कुरैशा रजविया आसाम

13- मदरसा रज़ाउलउलूम घोगारी महल्ला बम्बई

14- मदरसा तन्जीमुलमुस्लिमीन बाइसी पुरनिया, बिहार

15- माहनामा सुन्नी दुनिया व मकतबा सुन्नी दुनिया बरेली शरीफ

16-अलइंडिया जमाअते रजा-ए-मुस्तफा बरेलीशरीफ

17-अलअन्सार ट्रेस्ट,मिल्की पुर बनारस

18-अलजामिआतुलइस्लामिया,गंजे कदीम रामपुर

19-मदरसा फज रजा कोलमबो,सीलका

20-सुन्नी रजवी जामेअ मस्जिद,नियू जरसी,अमरीका

21-इस्लामि रिसर्च सेन्टर,कसगिरान बरेली शरीफ

22-जामिआ अम्जदिया,नागपुर

23-दारुलउलूम हन्फिया जियाउलकुरआन लखनऊ

नीज आल इन्डिया सुन्नी जमीअतुलउलमा बम्बई का सदर 1970 ई. में बनाया गया,और इब्तिदा से ता दम तहरीर मशहूर व मअरुफ इशाअती इदारा रजा एकडमी बम्बई की सर परस्ती भी कर रहे हैं।

हजरत अल्लामा अरशदुलकादरी की तहरीक पर 22/जुलाई 1985 ई. 1405 हिजरी को अशरफिया मिरबाहुलउलूम मुबारकपुर जिला आजम गढ़ में अकाबिरे अहलेसुन्नत का दीनी व इल्मी इज्तिमा हुआ। इफितताई तकरीर अल्लामा अरशदुलकादरी की हुई काफी देत तक बहस व तमहीद के बाद जानशीने मुपती-ए-आजम की कियादत में सारे मुल्क से फिकही मसाइल और उलूम शरीआ में रसूखा रखने वाले मुफितयाने किराम पर मुश्तमिल 'शरई बोर्ड' की तशकील अमल में लाई गई,और जानशीन मुफित-ए-आजम को उसका सदर

मुन्ताखब किया गया।

दिसम्बर 1986 ई./1406 हिजरी को मुस्लिम

परसनल्ला ला कोन्सल की इदारा-ए-शरीआ उत्तप्रेदेश राये बरेली में तशकील हुई। आप को वहसियत सद्र मुपती पेश किया गया। मरकजुददुरासातुलइस्लामिया जामेअतुर्जा बरेली के जेरे एहतिमाम चलने वाली शरई कोनसल आफ इंडिया,और इमाम अहमद रजा ट्रेस्ट के आप सदर नशीन हैं।

हिजाज कान्फरन्स लन्दन

वर्लड इस्लामिल मिशन लन्दन के जेरे एहतिमाम होने वाली हिजाज कान्फरन्स में जानशीन मुपती-ए-आजम और अल्लमा अरशदुलकादरी शिरकत के लिए 21 अप्रील 1985 ई. 1405 हिजरी को बजरीआ तय्यरा लन्दन तशरीफ ले गये। 5 मई को कान्फरन्स का इन्अकाद हुआ,और उसमें जानशीन मुपती-ए-आजम ने खिताब भी फरमाया तकरीर बी बी सी लन्दन से नशर हुई। हिजाज कान्फरन्स में शिरकत के बाद उमरा के लिए हरमेन शरीफैन तशरीफ ले गये, और वापसी एकुम जून 1985 ई. 140ई हिजरी को बरेली शरीफ हुई। याद रहे कि हिजाज कान्फरन्स की सदारत आप ही ने फरमाई थी।इस कांफ्रेस की अहमियत इस लिए है कि यह बैनल अंकवामी कांफ्रेस थी जिस में पुरी दुनिया के काइदीन ने शिरकत की और दर पेश मसाइल पर खुल कर बहस हुई और हल के लिए लाइहा अमल तैयार किया गया।

हमदर्द सुन्नियत,नाशिर मसलक आला हजरत,आली

मरतबत मौलाना मुहम्मद सईद नूरी सिक्रेट्री रजा एकडमी बम्बई की तहरीक पर 25 सफरुलमुजफ्फर 1410 हिजरी 1989 ई. को रजा एकडमी के जेरे एहतिमाम रैहाने मिलत मौलाना रैहान रजा कादरी बरेलवी के दौलत कदा पर हिन्दुस्तान के माया नाज़ उलमा व मशाइख और सहाफियों की मौजूदगी में इमाम अहमद रजा कादरी बरेलवी कुदिसा सिरुहु की काइम करदा जमाअत रजा-ए-मुस्तफा की तशकील नो हुई। उसके सदर के तौरपर हज़रत मौलाना तौसीफ रजा बरेलवी का नाम पेश हुआ और सरपरस्ती ताजुशरीआ के सुपुर्द की गई। उसमें तजावीज़ भी पास की गई और एक तजवीज़ यह थी कि तमाम हम मसलक इशाअती तब्लीगी इदारों का बाहम राबता और वह सारे रवाबित जमाअत रजा-ए-मुस्तफा के तहत हों।

रजा एकडमी ने उस काम में एक अहम रोल अदा किया है, और रवाबित के सिलसिला में कोशिशें हैं। रबीउलअव्वल 1410 हिजरी में एक तहरीक चलाई कि मुन्तशिर जमाअतें एक सु हो कर काम करें ताकि इज्तिमाइयत और बढ़ती जाये। उसमें भी कामयाबी हासिल हुई।

हज़र मुफ्ती-ए-आज़म कुदिसा सिरुहु की सरपरस्ती में "रजवी दारुलउलूम मजहरे इस्लाम" के नाम से मस्जिद स्टेशन बरेली में एक मदरसा काइम किया गया। जिसकी एक मजलिस आमिला तशकील दी गई और साथ ही साथ एक तवील इत्तिहादी मुआहिदा भी तै हुआ। यह बात याद रहे कि उससे कबल मुफ्ती-ए-आज़म कुदिसा सिरुहु ने तहरीरी सूरत में ताजुशरीआ को "मजहरे इस्लाम" का सदर बना चुके थे। उस में 8 मुआहिदे हैं और पांचवी मुआहिदे में

मुफ्ती आज़म कुदिसा सिरुहु की तहरीर की तौसीक की गई है, मन व अन मुलाहिज़ा हो।

"रजवी दारुलउलूम मजहरे इस्लाम सिटी बरेली शरीफ का दस्तूर व निज़ाम हज़रत मुफ्ती-ए-आज़म की तहरीरात व ख्वाहिशात के मुताबिक होगा। और खान्दानी दस्तूरी कमेटी वह होगी जो मुआहिदे के साथ मुन्सलिक है। क्योंकि हज़रत (मुफ्ती-ए-आज़म) की तहरीर के मुताबिक मौलाना अख़तर रजा ख़ाँ साहिब दारुलउलूम हज़ा के सदर हैं।"

रजवी दारुलउलूम मजहरे इस्लाम बरेली के सरपरस्त मौलाना रैहान रजा रहमानी बरेलवी मुन्तख़ब हुये और सदर व मुतवल्ली ताजुशरीआ को बनाया गया, नाइब सदर अमीन शरीअत मौलाना सिब्वैन रजा, मौलाना ख़ालिद अली ख़ाँ, नाज़िम आला मौलाना मन्नान रजा, नाइब नाज़िम जनाब अन्जुम रजा, मुहासिब सदरुल उलमा अल्लमा तहसीन रजा, खाज़िन अब्दुलहबीब उर्फ अन्नू भाई, निगराँ मौलाना कमर रजा ख़ाँ और मजलसे आमिला के मिम्बरान में खास तौर से मौलाना मुहम्मद तौसीफ रजा कादरी काबिले जिक्क हैं।

तसानीफ़ व तराजुम

फकीहे इस्लाम मुफ्ती मुहम्मद अख़तर रजा अजहरी बरेलवी ने अपनी दीगर मसरूफियात के बावजूद तर्नीफ़ व तालीफ़ का सिलसिला जारी रखा। कसीर तअदाद में पाँचरानों और तब्लीगी असफ़ार की वजह से यह काम कम हो पाता है। मगर हज़रत की आदतें मुबारका है कि सफ़र व हज़र में मजामीन, फ़तावा, तर्नीफ़, व तालीफ़ की मसरूफियात में इन्हेमाक में कमी नहीं आने दी है। हज़रत

का मामूल है कि रोज़ाना सुबह व शाम अरबी इबारात का तर्जमा उर्दू ज़बान में और उर्दू ज़बान का तर्जमा अरबी में मरकजीदार लइफ़ता के मुफ़ितयाने किराम या जामिआतुर्रज़ा के आसातिज़ा को इमला करा देते हैं।

फ़तावा जो दरुलइफ़ता में मुफ़ितयाने किराम हल नहीं कर पाते हैं, उनको जमा कर दिया जाता है और जब बाहर तब्लीगी दौरे पर तशरीफ़ ले जाते, तो वह मसाइल साथ होते-ट्रेन वगैरा में सवालात के जवाबात कलम बन्द करते। आज ताजुशरीआ दुनिया-ए-इस्लाम के लिए मरजा-ए-उलमा व फ़ुकहा बने हुये हैं। आप की मन्दर्जा जैल तसानीफ़ व तराजुम काबिले जिक्र हैं।

मतबूआत

- 1- अलहक्कुल मुबीन (अरबी)
- 2- दफ़ाअ कन्जुल ईमान (हिस्सा अब्बल)
- 3- टी-वी-और वीडियो का आप्रेशन
- 4- मिरातुन्नजदिया बजवाबुलबरेलिया, जिल्द अब्बल (अरबी)
- 5- तरवीरों का शरई हुक्म
- 6- शरह हदीस नियत
- 7- शरह हदीसुलअख़लास
- 8- हज़रत इब्राहीम के वालिद तारिख़ या अज़ (अरबी व उर्दू)
- 9- दफ़ाअ कन्जुलईमान (किाबचा उर्दू)
- 10- एक अहम फ़तवा(उर्दू)
- 11- तकदीम तजाल्लयुस्सलम मुसन्निफ़ा इमाम

अहमद रज़ा फ़ाजिले बरेलवी)

- 12-तीन तलाकों का शरई हुक्म (उर्दू)
- 13-आसार-ए-कियामत (उर्दू)
- 14-हिजरते रसूल
- 15-अलकौलुलफाइक़ लिहुविमलइक़तिदाइलफ़ासिक
- 16-बरकातुलइमदाद(मुसन्निफ़ा इमाम अहमद रज़ा बरेलवी)
- 17-हाशियातुलबुख़ारी(अरबी बुख़ारी शरीफ़ पर हाशिया)
- 18-तयस्सिरुलमाऊन(मुसन्निफ़ा इमाम अहमद रज़ा बरेलवी तर्जमा उर्दू से अरबी)
- 19-शमुलुलइस्लाम (मुसन्निफ़ा इमाम अहमद रज़ा बरेलवी तर्जमा उर्दू से अरबी)
- 20-अलअताउलकदीर(मुसन्निफ़ा इमाम अहमद रज़ा बरेलवी तर्जमा उर्दू से अरबी)
- 21-कसीदातान राइअतान(मुसन्निफ़ा इमाम अहमद रज़ा बरेलवी तर्जमा अरबी उर्दू से)
- 22-अलमाअतकदुल मुरत्नद (मुसन्निफ़ा अल्लामा फ़जले रसूल बदायूनी अरबी से उर्दू)
- 23-फ़किहे शहिन्शा(मुसन्निफ़ा इमाम अहमद रज़ा बरेलवी, तर्जमा उर्दू से अरबी)
- 24-अहलाकुलवहाबीन(मुसन्निफ़ा इमाम अहमद रज़ा बरेलवी तर्जमा उर्दू से अरबी)
- 25-अलहादीयुलकाफ़(मुसन्निफ़ा इमाम अहमद रज़ा बरेलवी, तर्जमा उर्दू से अरबी)
- 26-नमूज हाशियतुलअज़हरी (अरबी)

गैर मतबूआत

- 27- मरातुन्नजदिया बेजवाबिलबरेलविया(जिल्द दौम)अरबी
- 28- हाशिया असीदतुलशोहदा शरहुलकरीदातुलबुरदा (अरबी)
- 29- अलहक्कुलमुबीन (उर्दू)
- 30- दिफाअ कन्जुलईमान (हिस्सा दौम)
- 31- किया दीन की मुहिम पूरी हो चुकी(अहद जामिया अजहर का मकाला)
- 32- तर्जमा अज्जुललुलअन्का मिम बहरे सबकातिल अतका (मुसन्निफा इमाम अहमद रजा बरेलवी, अरबी)
- 33- अस्मा-ए-सूराए फातिहा की वजह तरिमया
- 34- जशने ईदमीलादुन्नवी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम

(अहद तातिबइल्मी मनजर-ए-इस्लाम का मकाला)

35-मस्टर आरिफ़ संमली ने अकाइदे वहाविया की ताईद में एक तफसीली गुमराह कुन मजमून अखबारात में शाइअ कराया,ताजुशरीआ ने इस मजमून का मस्कत जवाब दिया और रहे बलीग़ फरमाया,हज़रत के इस मकाला को माहनामा आला हज़रत बरेली ने दो किस्तों में शाइअ किया था।

36- आप ने दरमियान दर्स व तदरीस कुरआन शरीफ की तफसीर लिखने का आगाज किया, हर माह जिन आयात की तफसीर तहरीर करते उस को माहनामा आला हज़रत बरेली में शाइअ करा देते। तफसीर के लब व लहजे सलासत व रवानी और इफादियत व अहमियत को देखते हुये जनाब उमीद रजवी बरेलवी एडीटर माहनामा आला

हज़रत बरेली ने 'ज़ियाउलकुरआन' के उनवान से एक कालम मख्सूस कर दिया था, आप की लिखी हुई तफसीर मजकूरा उनवान से मुसलसल किस्त वार शाई हुई। आप ने जब माहनामा सुन्नी दुनिया बरेली के निकालने की इजाजत हुकूमत हिन्द से तलब की तो इब्तिदाई दौर में आप ने 'तफसीर सूराए फातिहा' के उनवान से पाँच किस्तों में सूराए फातिहा की शानदार तफसीर तहरीर फरमाई, जो माहनामा सुन्नी दुनिया बरेली में शाई हुई। मजकूरा इल्मी ज़खाइर को तलाश व जिस्तजू के बाद जमा कर के मनजर-ए-आम पर लाना बहुत मुफीद होगा।

तकरीज़ व तास्सुरात :

- 1- दुआइया कलमात बरसामाने बख़िशश,अज हुज़ूर मुफती-ए-आजम मौलाना अश्शाह मुस्तफा रजा नूरी बरेलवी कुदिसा सिरुहु
- 2- दुआइया कलमात बर जमाल-ए-मुस्तफा हमारा मेगजीन,मिनजानिब तलबा मजिलस रजा अलजामियातुल इस्लामिया गंज कदीर रामपुर
- 3- तकरीज़ बर मुजहिदे इस्लाम बरेलवी,अज मौलाना साबिरुलकादरी नसीम बस्तवी
- 4- तकरीज़ बर शरह मसनवी रहे इम्सालिया,अज कारी मुलाम मुहीयुद्दीन खातीब हलदवानी रहमतुल्लाहि अलैहि
- 5-तकरीज़ बर मुरशिद बर हक अज हाफिज़ इपितखार गली खॉ रजवी पीलीभीत
- 6- तकरीज़-ए-बर तजल्लियात इमाम अहमद रजा :

कारी अलहाज मुहम्मद अमानत रसूल नूरी पीली भीती।

7- तकरीज बर तजकरा मशाइख कादरिया रजविया :

अज मौलाना अब्दुल मुज्जबा रजवी सुनदरपूरी मरहूम, मुदरिस
मदरसा मजीदिया बनारस

8- तकरीज बर आला हजरत की बारगाह में अन्सारियों
का मकाम अज कारी मुहम्मद अमानत रसूल पीलीभीत

9- तकरीज बर पन्द्रवी सदी हिजरी के मुजहिद अज
कारी अमानत रसूल नूरी

10- तकरीज बर मकाशिशफतुलजवीद अज कारी
अबूलहम्माद हामिद अली रजवी शाहपूरी शैखुलजवीद वल
करअत मन्जर-ए-इस्लाम बरेली

11- तकरीज बर मुफती-ए-आजम और उन के खलफा
अज मुहम्मद शहाबुद्दीन रजवी बहराईची सुम्मा बरेलीवी
(राकिमुस्सुतूर)

12- तकरीज बर मौलाना रजा अली खौं बरेलीवी और जंग
आजादी अज मुहम्मद शहाबुद्दीन रजवी बहराईची, सुम्मा बरेलीवी
मशाहीर तलामिजा :

जानशीन-ए-मुफती-ए-आजम की तदरीसी जिन्दगी
में वे शुमार तलबा ने इक्तिसाब फौज किया, तलामिजा की
तादाद दारुलउलूम मन्जर-ए-इस्लाम बरेली के रजिस्टर
तलबा से हासिल की जा सकती है। ता हम चन्द तलामिजा
यह हैं।

1- हजरत अल्लामा मुफती सय्यद शाहिद अली रजवी,
मुहदिदस अलजामिअतुल इस्लामिया रामपुर

2- अल्लामा मौलाना अनवर अली रजवी बहराईची,
शैखुलअदब दारुलउलूम मन्जर-ए-इस्लाम बरेली

3- मुफती नाजिम अली रजवी बाराबंकी, मरकजी
दारुलइफता बरेली शरीफ

4- मौलाना कमाल अहमद रजवी नानपारा, जिला बहराईज

5- मौलाना जमील अहमद खौं नूरी बस्तवी उस्ताज,
मुस्लिम यूनीवरसिटी अली गढ़

6- मौलाना मजफ्फर हुसैन रजवी कटीहारी साबिक
मुदरिस जामिआ नूरिया रजविया बरेली

7- मौलाना साहबजादा अरुजद रजा खौं कादरी इब्न
ताजुशरीआ मदजुल्लाह

8- मुफती उबैदुर्रहमान रजवी, मुदरिस व मुफती दारुलउलूम
मजहर-ए-इस्लाम बरेली

9- मौलाना वसी अहमद रजवी, खतीब बर मंगधम

10- मौलाना सलीमुद्दीन रजवी, समनपुर (बिहार)

11- मौलाना शबिरुद्दीन रजवी, मदरिस मदरसा महमदिया
संगराकछ मगरिवी दीनाजपुर, बंगाल

12- मौलाना मुजीबुर्रहमान रजवी, मदरसा बाहारे इस्लाम
बज्जो कटीहार (बिहार)

13- मौलाना सज्जाद आलम रजवी, समनपुरी, (बिहार)

14- मौलाना शर्फ आलम रजवी सीतामढ़ी, बिहार

15- मौलाना अतीकुर्रहमान रजवी, ललवारा जिला रामपुर

16- मौलाना शैख शाह अलहमीदुलबाकवी, मुबल्लिग
मरकजुस्सकाफतुस्सुन्निया काली कट (केरेला)

- 17- मौलाना मुहम्मद कौसर अली रजवी इब्न मुहम्मद नूरुलहुदा, मरकजी दारुलइफता बरेली
 18- मुफती मुशरफ हुसैन बर्दौयूनी उस्ताज दारुलउलूम मजहर-ए-इस्लाम बरेली
 19- मुहम्मद शहाबुद्दीन रजवी बहराईची सुम्मा बरेलवी (राकिमुस्सुतूर)

हिन्दुस्तान के खुलफा

हज़रत ताजुशरीआ के खुलफा की तादाद बहुत तबील है ता हम जिन हज़रत का नाम रजिस्टर में इन्दराज है उन के असमा जेल में दर्ज किए जा रहे हैं। अगर किसी का नाम ज़ाब्त तहरीर से रह गया हो तो वह राकिमुस्सुतूर को मुत्तलअ कर सकते हैं।

मुहयिक अस्स हज़रत मौलाना मुफती सय्यद शाहिद अली रजवी, नाजिम आला व शैखुल हदीस अलजामिअतुल इस्लामिया रामपुर(काजी शरह व मुफती (ज़िला रामपुर)

फज़ीलतुशैख हज़रत अल्लामा शैख अबूबक्र अहमद मुस्लिमार,सिक्रेटरी मरकजुस्सकाफहुस्सुन्निया,काली कट (कीराला)

मुफती अनवर अली रजवी,सद्र आलकरनाटक उलमा बोई,बेगलौर(कर्नाटक)

मौलाना असगर अली रजवी,इमाम व खतीब जामेअ मस्जिद रामनगरम,(करनाटक)

मुनाजिर-ए-अहले सुन्नत मौलाना सगीर अहमद जौखनपुरी मोहतमिम अलजामिअतुल कादरिया रिछा जिला बरेली

मौलाना मुहम्मद हुसैन सिद्दीकी अवुलहक्कानी,

- शैखुलहदीस दारुलउलूम फैजुलगुरबाआरा(आरा)
 कारी अबुमुहामिद हामिद अली शाहपूरी, शैखुलतजवीद दारुलउलूम मन्ज़र-ए-इस्लाम बरेली
 हज़रत हाफिज़ शाह लईक अहमद ख़ाँ जमाली,
 सज्जादा नशीन आस्ताना-ए-जमालिया नक़्शबन्दिया मुजहिदिया रामपुर
 मुफती उज़ैर अहसन रजवी,शैखुलहदीस दारुलउलूम गोसे आजम पुरबन्दर,(गुजरात)
 मौलाना अली अहमद सीवानी,हसन पुरा जिला सीवान (बिहार)
 साहाबज़ादा मौलाना मुहम्मद अस्जद रज़ा ख़ाँ कादरी सद आल इन्डिया जमाअत-ए-रज़ा-ए-मुस्तफा,सिक्रेटरी इमाम अहमद रज़ा ट्रेस्ट,बरेली
 मौलाना सूफी मजहर हसन कादरी बरकाती,महल्ला नागिरान बर्दौयू शरीफ
 मौलाना अब्दुलमुस्तफा रौनक,इमाम व खतीब जामेअ मस्जिद अम्बर नाथ(महाराष्टर)
 मौलाना तहरीर अहमद रजवी,उस्ताज जामिआ नूरिया रज़विया बाकरगंज बरेली
 कारी अलाउद्दीन अजमली,नाजिम आला मदसी खलीलुलउलूम संभल जिला मुरादाबद
 मौलाना डाक्टर अब्दुलजब्बार रजवी,पलामो,बिहार
 मौलाना मुहम्मद अहमद इब्न मुहम्मद शफीअ,
 मोहतमिम दारुलउलूम रज़ा-ए-मुस्तफा दमोह,एम-पी

मौलाना मुफ्ती वली मुहम्मद रजवी, इमाम व खतीब
जामेअ मस्जिद व अमीर-ए-सुन्नी तब्लीगी जमाअत बा
सुन्नी जिला नागौर, राजस्थान

मौलाना मुहम्मद हनीफ रजवी, शीरानीबाद जिला
नागौर (राजस्थान)

मौलाना हाजी अली मुहम्मद खतरी, बानी दारुलउलूम
गौसे आजम मैमुनवाड़ापुर, बन्दर, (गुजरात)

अदीब शहीर जनाब जियाजालवी एडीटर माहनामा
पास्वान इलाहाबाद

मौलाना मसरूर रहमान रजवी, पलखीरा जिला सीता मढी

मौलाना सूफी मुहम्मद उमरबानी, बिहारपुरा, धोराजी,
गुजरात

हमदर्द कौमै मिल्लत मौलाना अहहाज मुहम्मद सईद
नूरी, चैयरमैन रजा एकडमी मुम्बई

मौलाना सूफी लअल मुहम्मद सज्जादा

नशीन, खान्काहे कादरिया, चमन शाह कथोरी, जिला बाराबंकी

मौलाना कारी दिलशाद अहमद रजवी, नाजिम आला
मदरसा मदीनतुलउलूम, बनारस

डाक्टर हाफिज शफीक अजमल इब्न अहहाज अब्दुरव
रजवी, रेवडी तालाब, बनारस

मौलाना गुलाम मुस्तफा हबीबी, मदनपुरा बनारस

अलहाज हाफिज मुहम्मद शौएब रजवी, काशाना-ए-
नूरी सदानन्द बाजार, बनारस

मौलाना सय्यद अफरोज अहमद नूरी, निहॉ

बाग, अहमद नगर जिला गौरखपुर

अल्लामा मौलाना मुजीब अली रजवी, इमाम व खतीब
मक्का मस्जिद हबीब नगर, हैदरबाद

अल्लामा गोলাম हुसैन, इमाम व खतबी जामेअ
मस्जिद बकारो इस्टेल सिटी

मौलाना मुख्तार अहमद कादरी, नाजिमे आला
बहरुलउलूम, इस्लाम नगर बहैडी जिला बरेली

कारी हाफिज सय्यद गोলাম सुल्हानी इब्न अल्लामा
सय्यद गुलाम जीलानी मेरेटी, संभल

मौलाना मुहम्मद रजा कादरी, सद्र मुदरिस हामिदिया
रहमानिया पोखरिया जिला सीतामढी

मौलाना जहानगीर खाँ रजवी, मोहतमिम मदरसा
गुलशन रजा, बकारो जिला धंवाद

मौलाना हाफिज अब्दुलकादीर रजवी, मोहतमिम दारुल
उलूम हन्फिया रजविया, कुलाबा बाजार मुम्बई

मौलाना अब्दुस्तार रजवी, इमाम व खतीब मस्जिद
मौमनान तकिया आदम शाह जैपुर (राजस्थान)

मौलाना हाफिज तजमुल हुसैन, इमाम व खतीब सुन्नी
जामेमस्जिद भसावल, (महाराष्टर)

मुफ्ती जुबैर आलम रजवी, मौजा लिल्या पोस्ट करोवार
जिला कटीहार

हजरत मौलाना गुलाम मुहम्मद हबीबी सज्जादा

नशीन आस्ताना-ए-कादरिया हबीबिया, घाम नगर शरीफ, उड़ीसा
मौलाना एहतिराम अली रजवी, जैपुर, (राजस्थान)

हजरत मौलाना जहीर रजा मौजा तरसापटी, शाही
जिला बरेली (शहादत 3/अगस्त 2007 ई.)
मौलाना गुलाम मुस्तफा बरकाती, सिलगिराम पुरा
सूरत (गुजरात)
आली जनाब मौलवी साविर रजा कादरी, छाऊनी कानपुर
मौलाना सय्यद रिजवानुलहुदा, सज्जादा नशीन
खानकाहे मुन्झमिया पन्ड शरीफ जिला मुंगीर, (बिहार)
मौलाना मुफती बशीरुलकादरी, मोहतमिल मदरसा
आलिया कादरिया शमशीरनगर जिला धंवाद
मौलाना कादिर वली कादरी कारवान पैट जिला
करनोल, (आंध्रप्रदेश)
मौलाना जहूरुलइस्लाम, राज बस्ती, गुंजरिया बाजार
जिला उत्तर दीनाजपुर, (बंगाल)
मौलाना मुहम्मद शाहजहाँ, कमातपुर, खटीया जिला
वीरभूम, (बंगाल)
मौलाना चिराग अली, पैटर जिला बलरामपुर
मौलाना मुहम्मद गुलाम अनवर, रफी गंज जिला औरमबाद
मौलाना मुहम्मद ऐहतिशामुद्दीन हुसैन चक जिला नवादा
मौलाना मुख्तार अहमद, नारायनपुर, अनल झाड़ी, जिला
उत्तरदीनाजपुर, (बंगाल)
मौलाना गुलाम मुहम्मद रजवी, ताबरबाला पटन जिला
बारा मौला, (कश्मीर)
मौलाना मुहम्मद खातिम रजा, मौजा मन्डा, दोधारी,
जिला बांका

मौलाना मुहम्मद शाह जमा, मौजा बताम, दौला जिला
किशनगंज
मौलाना मुनीर अहमद कादरी, हबेली, (कर्नाटक)
मौलाना रफीक अहमद रजवी, हबेली (कर्नाटक)
मौलाना मुजाहिदुलइस्लाम रजवी, हबेली कर्नाटक
मौलाना मुफती यूनुस रजा उयेसी, वाइसपरन्सिपल
जामिअतुर्रजा मथरापुरा बरेली
मौलाना मुफती काजी शहीद आलम रजवी, दारुल
इफता जामिआ नुरिया, बरेली
मौलाना सय्यद मसऊद अलीनूरी, रामनगर जिला
मैनीताल, (उत्तराखण्ड)
अल्लामा मौलाना मुहम्मद अशरफ
कादरी, ठाकुरदोवारा, जिला मुरादाबाद
मौलाना मुफती मुजफ्फर हुसैन रजवी, सदर मुफती
मरकजी दारुलइफता बरेली
मौलाना अहमद हुसैन रजवी, वानगाँव, गोहरा जिला
उत्तरदीनाजपुर, (बंगाल)
मौलाना मुहामिद रजा इब्न मुफती महबूब
रजा, पोखरिया जिला सीतामढ़ी
मौलाना मुफती मेराजुलकादरी, उस्ताज अलजामिअतुल
अशरफिया, मुबारकपुर, जिला आजम गढ़
मौलाना मुबारक हुसैन मिस्वाही, एडीटर माहनामा
अशरफिया, मुबारकपुर जिला आजम गढ़
मौलाना मुहम्मद जमाल अनवर, मौजा कलपर जिला

जहानबाद (बिहार)

हाफिज सय्यद जाहिद अली हाशमी, मौजा बंकागाँव

जिला लखीमपुर खीरी

मौलाना मुहम्मद शाहिद रजा, मौजा मालीनी, कन्नौर

जिला दरभंगा

मौलाना मुहम्मद जमील अखतर मौजा उखली,

भालोबाद जिला उत्तरदीनाजपुर, (बंगाल)

मौलाना शकील अहमद इब्न रशीदुद्दीन, कटीहार, बिहार

मौलाना मुहम्मद शमशाद आलम इब्न मुहम्मद तैमूर

हुसैन, पुरनिया (बिहार)

मौलाना इरफानुलहक इब्न मुहम्मद जिल्लुर्रहमान कम

नौल जिला मधुबनी

मौलाना कलीमुद्दीन नूरी इब्न इब्राहीम खसलोडिया,

जिला गिरेडिया, झाड़खण्ड

मौलाना मिन्हाजुद्दीन इब्न मुहम्मद फरीद आलम,

मौजा फिरदोस बाग जिला बांका (बिहार)

मौलाना नसीरुद्दीन इब्न मुहम्मद सिद्दीक मौजा

फतह जिला गरेडिया, झाड़खण्ड

मौलाना नूर आलम खाँ मौजा पटनियाँ जिला

दरभंगा, बिहार

हजरत अल्लामा मौलाना अनवर अली

रजवी, शेखुलअदब मन्ज़र-ए-इस्लाम बरेली

मौलाना हाफिज जाहिद रजा, शाहबाजपुर, गजरोला

जिला जौपीनगर (यूपी)

मौलाना कारी रईस अहमद खाँ, मोहतमिम

दारुलउलूम नूरुलहक चिरा मुहम्मदपुर, जिला फैजाबाद

मौलाना कमाल अखतर, मदरिस दारुलउलूम नूरुलहक

चिरापुर, जिला फैजाबाद

मौलाना गुलाम हुसैन, दारुलउलूम नूरुलहक चिरा

मुहम्मदपुर, जिला फैजाबाद

मौलाना अब्दुलकुदूस, दारुलउलूम नूरुलहक चिरा

मुहम्मदपुर जिला फैजाबाद

अलहाज सय्यद आबिद हुसैन इब्न सय्यद

अब्दुलुल्लाह कादरी, विकरोली, टाईगरनगर, मुम्बई

मौलवी मुहम्मद अब्दुलवकील रजवी, नाइब इमाम जामे

मस्जिद मीरटा सिटी (राजिस्थान)

मौलाना काजी मुहम्मद इकरम उस्मानी इब्न काजी

मुहम्मद कासिम उस्मानी, काजी शहर मीरटास्टी,

हाफिज मुहम्मद अबूबक्र मुहम्मद हुसैन, बा सुन्नी

जिला नागपुर, राजिस्थान

कारि फहीम अहमद खाँ इब्न उजैर यार खाँ, वनेखण्ड लखनऊ

मौलाना अनीस आलम सीवानी, जामिअतुलकरा खदरा लखनऊ

मौलाना काजी खतीब आलम इब्न काजी

अब्दुस्सुबहान, मौजा पिन्डहाल जिला कटीहार (बिहार)

मौलाना नूरुलइस्लाम इब्न नसीरुद्दीन, मौजा

सहजाना जिला कटीहार

मौलाना मुहम्मद आजम अली इब्न मुहम्मद

रफीक, सिधारत नगर जिला कटीहार (बिहार)

मौलाना गोলাম सादिक खॉ हबीबी इब्न मुहम्मद
 हाशिम, सिरावॉ जिला इलाहाबाद
 मौलाना नाहीद रजा मुर्दरिस बरकातुलइस्लाम ताज
 गंज, आगरा
 मौलाना अजीजुर्रहमान रजवी, इमाम व खतीब जामेअ
 मस्जिद, बरेली शरीफ
 मौलाना मुईनुलहक रजवी जिला दरंग (आसाम)
 मौलाना मुहीयुद्दीन अहमद, जिला दरंग (आसाम)
 मौलाना निजामुद्दीन नूरी, इमाम व खतीब हबीबिया
 मस्जिद सैलानी, बरेली
 मौलाना कारी मुहम्मद अफरोजुलकादरी, जामेआ
 कादरिया, चिरया कोर्ट, जिला मऊ
 मौलाना अफजाल रजा नूरी, मौजा गवाल जिला पुर्निया
 मौलाना अलहाज महसिन मक्की, इब्न हाजी वली
 अहमद, सीगोड़ा, जिला भड़ोच, (गुजरात)
 मौलाना मुहम्मद रफीक रजा कादरी, महबूब
 नगर (आंधरा प्रदेश)
 मौलाना जुबैर आलम इब्न काजी हसीन, मौजा
 बरआना गंज, जिला पुर्निया
 मौलाना मुहम्मद जमाल अनवर रजवी इब्न मुहम्मद
 औरअली खॉ, मौजा कलयर जिला जहानाबाद
 मुफती अब्दुलकदीर कादरी, इमाम व खतीब जामे
 मस्जिद, वजैवाड़ा (आंधराप्रदेश)
 मुफती मुमताज अहमद नईमी, दारुलइफता जामिआ

नईमिया, मुरादाब
 मुफती अखतर हुसैन, मदरिस दारुलउलूम अलीमिया,
 जमदाशाही जिला बस्ती
 आली जनाब मुहम्मद अफरोज रजा इब्न जनाब
 अब्दुल हसीब मरहूम, बरेली
 आली जनाब सिराज रजा खॉ इब्न मौलाना इदरीस
 रजा खॉ, बरेली
 अली जनाब रिजवान रजा खॉ इब्न हजरत अल्लामा
 तहसीन रजा खॉ मुहदिदस बरेली
 मौलाना अलाउद्दीन नूरी इब्न मुहम्मद सिद्दीक
 जमिलिया बाजार, जिला मधुबनी
 मौलाना अस्तमुलकादरी इब्न मुहम्मद यूसुफ, मरगिया
 चक, जिला सीतामढ़ी
 मौलाना मुफती मुहम्मद शऐब रजा कादरी नईमी,
 सदइस्लामी, मरकज देहली
 मौलाना मुफती अशफाक हुसैन कादरी सदर तन्जीम उलमा
 -ए-इस्लाम, इमाम व खतीब कादरी मस्जिद शास्त्रीपार्क देहली
 मुहम्मद शहादबुद्दीन रजवी (राकिमुस्सुतूर)
 हजरत ताजुशरीआ ने मौलाना मतीउर्रहमान
 गुजपफर पूरी और मौलाना रफीक अहमद मुहीश पूरी की
 सन्द इजाजत व खिलाफत मन्सूख कर दी है। (मन्कूल अज
 रजिस्टर्ड)

पाकिस्तान के खुलफा :

मुसन्निफ़ कुतुब कसीरा हज़रत अल्लामा मुहम्मद
अब्दुल हकीम अख़तर शाहजहानपुरी, बानी मर्कज़ी मंज़िलस
इमामे आजम लाहौर.

अलहाज़ मुहम्मद हनीफ़ तय्यब रज़वी, साबिक मर्कज़ी
वज़ीर तामीरात व मुशीर सदर पाकिस्तान

मौलाना अलहाज़ सय्यद शाहिद अली नूरानी, इंदारा
मुआरिफ़ रज़ा अकरम रोड, लाहौर

जनाब अलहाज़ अब्दुलहमीद मक्की रज़वी, कराची

जनाब अलहाज़ जुबैर मक्की कादरी रज़वी, कराची

जनाब अलहाज़ हाफ़िज़ मुहम्मद असलम

रज़वी, कराची

मौलाना सय्यद मुहम्मद कलीम रज़ा कादरी,

नाजिमाबाद कराची

मौलाना पीर सय्यद ज़ियाउलहक़ जीलानी, अमरीकन

कुवाटर, हैदराबाद, सिंध

डाक्टर इक़बाल अहमद अख़तरुलकादरी, इंदारा

तहकीकात इमाम अहमद रज़ा कराची

मौलाना मुहम्मद अस्लम रज़ा अतारी, खैरआबाद

गुलशने मुस्तफ़ा कराची

मौलाना मुहम्मद जाकिर हुसैन सिद्दीकी, मोहम्मिम

दारुलउलूम मुस्तफ़ा जामे मस्जिद, लूतीफ़आबाद, हैदराबाद

मौलाना अताउलमुस्तफ़ा इब्न अल्लामा ज़ियाउल

मुस्तफ़ा कादरी, मदरिस जामेआ अम्ज़दिया कराची

मौलाना अलहाज़ यूनुस खतरी, पी आई बी
कालौनी, कचारी

जनाब अलहाज़ गुलाम उवैस कर्नी, सदर इंदारा
मुआरिफ़े नोमानिया, लाहौर

मौलाना मुहम्मद फ़ैसल कादरी नवशबन्दी, जमशीर
रोड कराची

मौलाना मुहम्मद साकिब अख़तर कादरी इब्न
अशफ़ाक़ अहमद, नार्थ कराची

बंगलादेश के खुलफा :

मौलाना डाक्टर सय्यद इरशाद बुख़ारी, डाइरेक्टर
जामिआ इस्लामिया दीनाजपुर बंगलादेश

मौलाना सूफी मुहम्मद अब्दुलस्लाम रज़वी, चमपक
नगर पोस्ट हलीम नगर जिला कोमल्ला

मौलाना सय्यद मुहम्मद इब्राहीम कासिमूलकादरी,
कनजनपुरदरबार शरीफ़ जिला सीतामढ़ी गोरगंज

मौलाना हाफ़िज़ शाह आलम नईमी इब्न सुलतान
अहमद, चाटगाम

मौलाना सूफी नजीर अहमद रज़वी कुमिल्लाह (बंगलादेश)

नेपाल के खुलफा :

मौलाना मुपती मुहम्मद जैश बरकाती, शेखुलहदीस
दारुलउलूम हन्फिया, जिकपुरधाम

मौलाना मुहम्मद नजमुद्दीन कादरी इब्न मौलाना

मुहम्मद हनीफ़ कादरी, बेदरेकझारा पोस्ट जलीशौर जिला मोहवतरी

अरब ममालिक के खुलफा :

फजीलतुशैख हजरत अल्लाम मुहम्मद उमर
सलीमुलहन्फी मेहन्दी, इमाम, जामेअ मस्जिद इमामे आजम,
अलअजमिया, बगदाद शरीफ, (एराक)

अलहाज शैख मुहम्मद यूसुफ अब्दुलअजीज सुन्नी
बोहरा, दुबई (मुत्तहिदा अरब इमारात)

फजीलतुशैख अल्लामा कमाल यूसुफुलहौत, डाइरेक्टर
मखतूतात इलतारासुलइस्लामी, लिवनान

मौलाना अलहाज मुहम्मद आकिब
फरीद, अबूजहबी, (मुत्तहिदा अरब इमारात)

मौलाना शैख हस्सामुद्दीन, कराफीरा, लबनान

मौलाना शैख नबीलुशरीफ, लबनान

मौलाना शैख कारी अलीमुद्दीन, लबनान

मौलाना शैख जमाल सफीर, लबनान

फजीलतुशैख अल्लामा अब्दुलकादिर फाकहानी,
सिक्रेट्री अलजमिअतुलमुशारेअतुलखैरिया लबनान

अशशैख अब्दुरहमान अम्माश, लबनान

अशशैख गानम हुलूल, लबनान

अशशैख उंसामहुसय्यद, लबनान

अशशैख जमील हलीम लबनान

अशशैख खालिद हनीना, लबनान

अशशैख अहमद अलजलबी लबनान

अशशैख बिलाल हलाक लबनान

अशशैख यूसुफ दाऊद लबनान

अशशैख यूसुफ अलमला लबनान

अशशैख हस्साम रहबी, लबनान

अलउस्ताज अशशैख मुहम्मद अलसर खुस, लबनान

अशशैख सय्यद अत्तबता, लबनान

अशशैख अब्दुरज्जाक शरीफ लबनान

अलउस्ताज अशशैख सलाह सईद लबनान

अशशैखुलबराहीमुशशार, लबनान

अशशैख मुहम्मद शाफई, लबनान

अशशैख रोवेद अम्माश, लबनान

अशशैख सलीम उलवान लबनान

अशशैख वलीद यूनुस, लबनान

अशशैख मुहम्मद अयूबी, अददोरोमाद, लबनान

अशशैख अददुकतूर अहमद तमीम,

अलउस्ताज अशशैख मुहम्मद सईद अलहाज अली, लबनान

अलउस्ताज शैख जहीर फीयूमी, लबनान

अलउस्ताज शैख अहमद महमूद लबनान

अशशैख तारिक निजाम, लबनान

अलउस्ताज शैख तारिक गन्नाम लबनान

अशशैख वलीद अलहंबली लबनान

अल्लामा अशशैल मुहम्मद दाइल हंबली, शैखुलजामिया

अलफत्हुलइस्लामी जामिआ बेलाल दमशक, (शाम)

फजीलतुशैख मुहम्मद ईसा मानेअउहमीरी,

अजीरुलऔकाफ हुकूमत मुत्तहिदा अरब इमारात

अलहाज जावेद खालिद अलहिन्दी, जदा (सऊदी अरब)

अलहाज मुहम्मद अशरफ औजी कादरी रजबी, दुबई

(मुत्तहिदा अरब अमारात)

श्रीलंका के सुलफ़ा :

मौलाना कारी नूरुलहसन, नाज़िम आला मदरसा

फैजाने रज़ा, कौलमबो

जनाब अलहाज़ मुहम्मद इदरीस पटैल

रज़वी, कौलमबो

जनाब अलहाज़ अब्दुलगफ़ार हाजी बाबू रज़वी कोलमबू

अलहाज़ हाफ़िज़ मुहम्मद अहसान पटैल रज़वी कोलमबू

साऊथ अफ़रिका के सुलफ़ा :

मौलाना मुहम्मद शमीम अशरफ़ कादरी, इमाम, व
ख़तीब लेडीज असमथ, (साऊथ अफ़रीका)

जनाब अलहाज़ सय्यद इब्राहीम कादरी, डरबन, साऊथ अफ़रीका

अमरिका के सुलफ़ा :

मौलाना मुफ़ती कमरुलहसन कादरी, सद नार्थ
अमरीका हलाल कमेटी, अन्नूर मस्जिद, होस्टन

अलहाज़ डाक्टर मुहम्मद ख़ालिद रज़वी, शका गो

मौलाना सय्यद औलाद रसूल कुदसी इब्न मुफ़ती

अब्दुलकुदूस, कैलोफ़ोर्निया

मौलाना डाक्टर गुलाम जरकानी इब्न अल्लामा

अरशदुलकादरी, इमाम, ख़तीब मक्का मस्जिद, डीलीकस

मौलाना मुहम्मद उस्मान कादरी (साबिक मिम्बर

पारलेमेन्ट पाकिस्तान) वरजीनिया

दीगर ममालिक के सुलफ़ा :

अलहाज़ आसिफ़ मुहम्मद पटैल रज़वी, लैलानंग वे, मलावी

मौलाना मुहम्मद आरिफ़ बरकाती, इमाम व ख़तीब
जामेअ मस्जिद, लैलानंग वे

मौलाना अलहाज़ कारी अहमद रज़ा

कादरी, हरारे, ज़म्बाबवे

अलहाज़ हाजी लियाक़त दिल मुहम्मद रज़वी डैनहीग हायलेन्ड

मुफ़ती अब्दुलमजीद कादरी, इमाम मस्जिद मारीशश

मौलाना वसी अहमद रज़वी, इमाम व ख़तीब मस्जिद

बरमंघम

इमामत व ख़िताबत :

हज़ारत ताजुशरीआ ज़माना ताल्ब इल्मी से ही
इमामत के फ़राइज़ अन्जाम देने लगे थे, वालिद माजिद
मुफ़स्सिर आजम हिन्द मौलाना इब्राहीम रज़ा ख़ाँ जीलानी
बरेलवी ने बा ज़ाबता तौर पर रज़ा मस्जिद की इमामत व
ख़िताबत का मन्सब ज़लीला के लिए तहरीरी वसीयत नामा
जारी किया था। हुज़ूर मुफ़ती-ए-आजम कुददुस सिरहू का
मामूल था कि जब ताजुशरीआ हमारह होते तो आप को
ही नमाज़ पढ़ाने का हुक्म फ़रमाते। एक असी दराज़ से
नमाज़ ईदैन बरेली की ईदगाह में इमामत के फ़राइज़
अन्जाम दे रहे हैं। मन्सब फ़र्ज शनासी और परोकार तरीक़े
से मुतअल्लिका फ़राइज़ अन्जाम देते हैं। जब अप कुरआन
शरीफ़ की तिलावत करते हैं, या खुत्बा पढ़ते हैं तो लेहने
दाऊदी की याद कानों में बाज़ग़श्त करने लगती हैं। आप
की किरअत में अरबी मिस्री लब व लहज़ा पाया जाता है।

उलूम व फुनून में महारत :

ताजुशरीआ उलूम मअकूलात व मन्कूलात में एकसौ महारत रखते हैं। दीन कय्म की तजदीद, सुन्नत की तरबीज, और बिदआत व मुन्किरात के इस्तिहसाल में जिस कद्र सई आप ने फरमाई वह आप ही का हिस्सा है। हजरत ने जिस मौजू या किसी मसअला पर कलम उठाया उस पर बे तकल्लुफ लिखते चले गये। जिस मसअला की तहकीक फरमाई दलाइल के अंबार लगा दिए। मुहदिदस कबीर अल्लामा जियाउलमुस्तफा कादरी अमजदी ने इमाम अहमद रजा कांफ्रेस में कहा कि :

अल्लामा अजहरी के कलम से निकले हुये फतावा के मुताला से ऐसा लगता है कि हम आला हजरत इमाम अहमद रजा रदियल्लाहु तआला अन्हु की तहरीर पढ़ रहे हैं। आप की तहरीर में दलाइल और हवाला जात की भर मार से यही जाहिर होता है। (तकरीर इमाम अहमद रजा कांफ्रेस बरेली-24 सफरुलमुज्जफर-1425 हिजरी)

ताजुशरीआ मन्दजी जैल उलूम व फुनून में कामिल महारत रखते हैं। तफसीर, उलूम-ए-कुरआन, हदीस, उसूले हदीस फिक्ह, मुआनी व बयान, जबर व मुकाबिला, मुनाजिरा व मराया, हयाते जदीदा मुरबआत, इल्मुलजफर, अकाइद व कलाम, मन्तिक, फलसफा, सर्फ, नोह तजवीद व करअत, तसव्वुफ तारीख, अदब, नअत, उरुज व कवाफी, तौकियत, हिसाब हयअत हिन्दसा, रियाजी, फन्ने किताबत वगैरा वगैरा काबिल जिक्र हैं।

बे मिसाल हुसने खत :

हजरत ताजुशरीआ फन्ने खिताती में महारत रखते हैं। इसलिए आप के मकातीब, मजामीन व मकालात और फतावा हुस्न तहरीर के लिहाज से बे मिसाल हैं। उन तहरीरात को देखते ही दिल बाग बाग हो जाता है, इल्म व फुल के साथ साथ यह खूबी बहुत कम उलमा व मुफ्तियाने एजाम में पाई जाती है। हजरत का तर्ज खिताती अहद व जमान के ऐतिबार से बदलता रहा है मगर हर जमाना की तहरीरें अपने आप में आला नमूना और बे मिसाल खिताती का आइना दार हैं। ऐसा मालूम होता है कि मौतियों की लड़ियाँ बिखरी हुई हैं। दर हकीकत हुस्न तहरीर से खुद शख्सियत का वह जमाले मख्फी बे हिजाब हो जाता है जिस तक रिसाई बहुत मुश्किल है। हजरत के मकातिब के हुस्न जाहिरी से हुस्न मअनवी आशकार होता है। राकिमुस्सुतूर के पास हजरत की तहरीरात अहद व अहद मौजूद हैं। जमाना-ए ताल्व इल्मी, वादे फरागत, अहद दर्स व तदरीस, अहदे दारुलइफता, अहदे जानशीनी, जमाना-ए-शबाब और मौजूदा वक्त की तहरीरात महफूज हैं। इस से हुस्न तहरीर और फन्ने खिताती का बखूबी अन्दाजा होता है। और हजरत की एक खुसूसियत है कि फुलस्केप के कागज पर बगैर नीचे कुछ रखे लिखते जाते हैं और मजाल है कि कोई लाइन जरा सी भी टेढ़ी हो जाये।

अमर्बिल मुआरिफ व नहीं अनिलमुन्किर :

जानशीन-ए-हुजूर मुफती-ए-आजम अल्लामा

मुहम्मद अखतर रजा अजहरी बरेलवी ने अपनी पूरी जिन्दगी अमर्बिल मारुफ और नही अनिलमुन्कर का मुकददस फरीजा इन्तिहाई खुलूस व लिल्लाहियत के साथ अदा किया और कर रहे हैं। अल्लाह तआला का हुक्म है कि उम्मत मुहम्मदिया(सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम)तमाम दूसरी उम्मतों से इसलिए मुमताज़ है कि वह भलाई का हुक्म देती है और बुराई से रोकती है। इसलिए "उम्मत मुहम्मदिया" की यह खुसूसियत है कि अमर्बिलमारुफ में सारी उम्मतों पर फौकियत रखती है, और आप अपने तमाम मुआसिर उलमा व मशाइख में फौकियत रखते हैं। यह फौकियत उस वक्त और बढ़ जाती है जब मुम्बई में सुन्नी, शीआ, बोहरा, खोजा, गैर मुकल्लिद, नदवी, दैबन्दी और जमाअते इस्लामी वगैरा बातिल फिरकों से इत्तिहाद किया गया। आप ने उसकी शिहत से मुखालिफत की। उत्तर प्रदेश में एक सियासी तौर पर मुशिरकीन से इत्तिहाद व मोहब्बत की फ़जा हमवार की जा रही थी। और उस रविश को ऐने इस्लाम बताया जा रहा था। आप ने सख्त मुखालिफत कर के इस इत्तिहाद के शीराजे को मुन्तशिर कर दिया। कराची और लंदन में भी वहाबी, सुन्नी को सियासी और दैनलअक़वामी मसाइल के नाम पर एक प्लैट फार्म पर लाने की बात हो रही थी तो आप ने इस इत्तिहादे उम्मत के मुतअल्लिक़ फरमाया कि "हक़ और बातिल का इत्तिहाद सुबह कियामत तक नहीं हो सकता"।

मुझे खूब याद है कि आज़ाद इन्टर कालेज बरेली में

आलइन्डिया जमाअत रजा-ए-मुस्तफा ने अजमते मुस्तफा कांफ़्रेस(2002 ई.)का इन्फ़ेकाद किया था, हज़रत ने हज़ारों के मजमअ से खिताब फरमाते हुये कहा कि:

आप लोगों को नसीहत करता हूँ और वसीयत करता हूँ कि आला हज़रत कुददुस सिररहु के मसलक पर काइम रहना, वहाबियों और दूसरे फिरकों से मेल जूल, खाना पीना या किसी भी तरह का इत्तिहाद जाइज़ नहीं हैं। इन फ़िर्काहाये बातिला से ता कियामत इत्तिहाद नहीं हो सकता। मेरे खान्दान के लोग हो या मेरा बेटा ही क्यों न हो, अगर आप देखें कि मसलके आला हज़रत से हट गया है तो दूध से मक्खी की तरह निकाल कर बाहर कर दें। छोड़ दें"।

हज़रत ने "लफ़्जे कमली" और "तर्बीर" कशी और टी वी रेडियो और टाई पर फाजिलाना मकाला और फतावा लिख कर आलम-ए-इस्लाम को हक़ व सदाकत का दर्स दिया। मुम्बई में एक फितना-ए-अजीम का सिदबाब करते हुये मुल्ला बुरहानुद्दीन को तौबा करने पर मजबूर होना पड़ा, गुजरात में क़ोमी एकता सम्मीलन में शिरकत करने वालों की गिरफ्त फरमाई तो उन लोगों ने बरआत का इजहार किया। हज़रत ने मसाइल फ़िक्ह के इजहार और मसलक अहले सुन्नत व जमाअत खिताबत की तर्जुमानी और हिफाज़त व सियानत में मफाहिमत कभी न की। आप की ज़ात गिरामी अमर्बिलमारुफ़ व नही अनिलमुन्कर की जिन्दगी की आइनादार है।

उम्मत मुस्लिमा की फिक्र मन्दी :

जानशीन-ए-हुजूर मुफती-ए-आजम जहाँ उम्मत मुस्लिमा की मजहबी रहनुमाई फरमा रहे हैं, वहीं कौमी व मिल्ली मसाइल में भी रहनुमाई का फरीज़ा अन्जाम दे रहे हैं। आलमे इस्लाम को दर पेश मसाइल के हल और उलमा-ए-अहले सुन्नत के इन्दिया के इजहार और बैनलअक़वामी ताकतों पर दबाओ बनाने के लिए आप ने उस रज़वी के हसीन मौका पर 22/जुलाई 1995 ई. में मर्कज़ी दारुलइपता सौदागिरान में काइदीने मिल्लत,उलमा, मशाइख की मौजूदगी में पैचीदा मसाइल पर बहस व मुबाहिसा के बाद करार दाद पास की गई। इन करारदादों में एकसा सीवील कोड के निफाज़ की मुखालिफत,तन्जीम अइम्मा मसाजिद के जरीआ ओक़ाफ़ पर गासिबाना कब्ज़ा,उलूम दीनी और दुनियावी की तरफ मुसलमानों की खुरासी तवज्जह नरक़ज़

करने,आपसी इन्तिशार व इख़िलाफ़ को मैदाने जंग व जदाल के बजाये अपने काइदीन की बारगाह में तवज्जो रलवी,चीचिनया और फिलिस्तीनी मुसलमानों की हिमायत, टाडा के तिहत गिरफ्तार मुसलमानों की आज़ादी वगैरस वगैरस उमूर पर हुकूमत हिन्द से मुतालवात किए गये।

इस मुश्तरका अख़बारी एलानिया पर हज़रत के एलावा अल्लामा जियाउलमुस्तफ़ा कादरी,मौलाना अब्दुलमुदीन नोअमानी,मौलाना अब्दुलमुस्तफ़ा रदोलवी, अलहाज़ मौलाना मुहम्मद सईद नूरी,मौलाना रियाज़ हैदर

हन्फी, मौलाना अनवार अहमद कादरी,मौलाना आरज़ु अशरफी,अल्लामा मुहम्मद हसीनी अशरफी,मौलाना मुहम्मद हुसैन अबूलहक्कानी,मुफती मुहम्मद मतीउर्रहमान मुजतर रज़वी,मौलाना बशीरुलकादरी वगैरस के दस्तखत हैं।

मजारात पर औरतों की हाज़री :

चन्द वही ख़वाहान मसलक अहले सुन्नत व जमाअत ने उस रज़वी में औरतों की आमद पर जानशीन-ए- हुजूर मुफती-ए-आजम की तवज्जोह मब्ज़ूल कराई,हज़रत ने फौरन 26 जुलाई 1995 ई को एक अपनी तरफ से मज़मून शाइअ कराया कि मजारात पर औरतें न आयें,और यही आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ौं फाज़िले बरेलवी का फरमान है। हज़रत ने तमाम मुरीदीन व मुतवस्सिलीन के लिए हिदायत नामा जारी किया कि 'अपने साथ ख़वातीन को मजार शरीफ पर न लायें।'

तहफ़फ़ुजे मुस्लिम परसनल ला की तहरीक :

जानशीन-ए-हुजूर मुफती-ए-आजम अल्लामा मुहम्मद अख़तर रज़ा ख़ौं अज़हरी बरेलवी उम्मत मुस्लिमा की रहनुमाई और कियादत में हमेशा पेश पेश रहे। एक जमाना वह था जब शाह बानू मसअला को ले कर पूरे मुल्क में मुस्लिम परसनल ला पर हम्ले किए जा रहे थे। सुप्रीम कोर्ट ने शरीअत इस्लामिया के मन्शा व मबदा के ख़िलाफ़ फ़ैसला सादिर कर दिया था। सुप्रीम कोर्ट के फ़ैसला के ख़िलाफ़ उलमा अहले सुन्नत ने चेलेंज किया और पूरे मुल्क में एहतिजाजी मजाहिदा व इजलास के

जरीआ अपने जज्बात व एहसासात को हुकूमत हिन्द तक पहुँचाया। अवामी सत्तह पर दबाओ इस कद्र बढ़ गया था कि हुकूमत हिन्द को मजबूरन पारलेमेन्ट के जरीआ कानून बन कर सुप्रीम कोर्ट के फैसला को कलअदम करार देना पड़ा (तहफफुजे मुस्लिम परसनल ला अज मौलाना यासीन अखतर मिरवाही मतबूआ दारुलकलम देहली)

हुकूमती ओहदा से इस्तिगना :

उत्तरप्रदेश के साबिक वजीर आला नारायन दत्त तैवारी (गवर्नर आंधरा प्रदेश) खान्दान आला हजरत इमाम अहमद रजा कादरी फाजिले बरेलवी से गहरा तअल्लुक रखते हैं। उन्होंने ने अपने अहद में हजरत के बरादरे अकबर मौलाना रैहान रजा खॉ रहमानी मियाँ को एम-एल-सी-नामजद किया था। उनकी मुकर्ररा मीआद खत्म हो जाने के बाद जानशीन-ए-मुफती-ए-आजम के लिए कोशा रहे मगर हजरत ने मना फरमा दिया। 1989 ई में जनाब उस्मान आरिफ नकश्बन्दी (गवर्नर उत्तर प्रदेश) आप के दरे दौलत पर हाज़िर हुये और एम-एल-सी-नामजद करने की हुकूमत उत्तरप्रदेश की मनशा जाहिर की मगर हजरत ने ओहदा कबूल करने से मना फरमा दिया। उत्तर प्रदेश के गवर्नर उस्मान आरिफ ने आप से बहुत मिन्नत व समाजत की मगर आप राजी न हुये। उस्मान आरिफ साहब आप से कल्बी लगाओ और अकीदत रखते थे। औलिया-ए-किराम के आस्तानों पर हाज़री देना और मशाइख से दुआयें लेना उन का मामूल था। हजरत की बे पनाह इज्जत और अदब

व एहतिराम करते थे। मगर कुरबान जाइये उस अल्लाह के बली पर कि दुनिया को गालिब होने न दिया और हुकूमती ओहदा से हमेशा दूर रहे। किया आज के तरक्की याफत दौर में ऐसा मुम्किन है?

मुरादाबाद के मुकद्दमा में शानदार कामयाबी :

अल्लाह तआला जानशीन-ए-हुज़ूर मुफती-ए-आजम अल्लामा अखातर रज़ा अज़हरी महजुल्लाहु को वह मकबूलियत अता फरमाई है कि जिस एलाके में पहुँच जाये वह एलाका का एलाका आप का गरवीदा हो जाता है। मुफती सय्यद शाहिद अली रज़वी रामपुरी के बकौल : जहा दूसरे पीराने एज़ाम सालिहासाल लोगों को दाखिले सिलसिला करने के लिए महनत करते हैं, तरगीब दिलाते हैं, मगर हजरत सिर्फ इस जगह एक घन्टा के लिए तशरीफ ले जाये तो वह लोग आप के नूराही जलवा जेबा को देखते ही मुरीद होने के लिए बिला तरगीब बे तावाना बेकरार हो जाते हैं। यह खुदादाइ मकबूलियत आप को ही मयस्सर है।

इसी मकबूलियत व शौहरत को देखते हुये हासिदीन से न रहा गया, इन से कुछ न बन पड़ा तो हजरत के खिलाफ एक मुकद्दमा दाइर कर दिया। पहले थाना नाग फनी मुरादाबाद में एफ-आई-अर-दर्ज कराने के लिए इस्पेक्टर से रज़ूअ किया। जब उस ने इस फर्जी रिपोर्ट पर मुकद्दमा काइम करने से मना कर दिया तो इस हासिद ने 20/नोम्बर 1996 ई. को मुरादाबाद कोर्ट में इस्तिगासा

दाइर किया। जिस की बुनियाद पर थाना में एफ-आई-आर-दर्ज हो गई। जब बरेली इत्तिलाअ पहुँची तो साहबजादा गिरामी मौलाना अस्जद रज़ा ख़ाँ कादरी, मुफ्ती अब्दुलमन्नान कलीमी मुरादाबादी, राकिमुस्सुतूर और बरादरम मुजीब रज़ा ख़ाँ मरहूम इब्न हज़रत मौलाना हबीब रज़ा ख़ाँ ग़रेलवी आली जनाब अफ़रोज मियाँ मुरादाबाद पहुँचे। कोर्ट में जानकारी हासिल की, बादोहु अपना जवाब दाखिल किया गया। हमारे वकील के जवाबत सुन कर फ़ाजिल जज हैरान रह गया। जज ने 22/फरवरी 1999ई को हज़रत के हक में 8/ सफ़हात पर मुश्तमिल शान्दार फ़ैसला सादिर किया। यह बात याद रहे कि बावजूद मुख़ालिफ़ की हज़ार कोशिशों के हज़रत कभी भी कोर्ट तशरीफ़ नहीं ले गये। मुक़द्दमा की पेरव कारी राकिमुस्सुतूर ने की, हर तारीख़ पर बरेली से मुरादाबाद जाता था अलहम्दुलिल्लाह हक़ की फ़तह व नुसरत हुई और बातिल शिक़स्त व रीख़त हुआ।

आलइन्डिया सुन्नी जमईअतुलउलमा :

वहाबी तन्ज़ीम जमिअतुल उलमा के बढ़ते हुये असरात को जाइल करने और उलमा अहले सुन्नत को मरबूत व मज़बूत करने की गर्ज से 1970 ई. में सय्यदुलउलमा हज़रत मौलाना सय्यद आले मुस्तफ़ा मारहरवी रहमतुल्लाहि अलैहि(सज्जादा नशीन खान्कात बरकातिया) की सदारत में "आल इन्डिया सुन्नी जमईअतुलउलमा की फ़आल कियादत की वजह से पूरे मुल्क में आनन फानन विरांचो फ़ाइम हो गई और पूरी बाड़ी तश्कील

दे दी गई। हज़रत सय्यदुल उलमा के इन्तिकाल हो जाने के बाद जनवरी 1980ई को बड़ी मस्जिद मदनपुरा मुम्बई में आल इन्डिया सुन्नी जमईअतुल उलमा की मज्लिस आमिला व मज्लिस आमा की मीटिंग हुई जिस में नये सद के इन्तिख़ाब के लिए राये शुमार हुई। सब ने जानशीन-ए-मुफ्ती-ए-आज़म अल्लामा अख़तर रज़ा ख़ाँ अज़हरी के नाम की तजवीज़ पेश की। हज़रत ताजुशरीआ को 1980 ई में मुत्तफिका तौर पर सुन्नी जमईअतुलउलमा को सद मुन्तख़ब कर दिया गया। ता हुनूज़ आप की सदारत में यह तन्ज़ीम काम कर रही है। मौलाना मन्सूर अली ख़ाँ इस के जनरल सिक्रेट्री हैं और आलइन्डिया जमाअत रज़ा-ए-मुस्तफ़ा के आप सर परस्त आला भी हैं।

बाबरी मस्जिद का क़ब्ज़ा :

चार सौ साला तारीखी बाबरी मस्जिद(अजूधिया जिला फ़ैजाबाद) का मसअला इस्लामियान हिन्द के लिए बहुत अहमियत रखता है। फ़िर्का परस्तों ने बा जोर ताकत 6/दिसम्बर 1992 ई को शहीद कर दिया। बाबरी मस्जिद की शहादत से कबल और बाद में बाजयाबी की तहरीक में ताजुशरीआ जानशीन-ए-मुफ्ती-ए-आज़म ने बड़ा अहम भिरदार किया। हुकूमत हिन्द से क़ाफ़सों और मैमुरन्डम के ज़रीआ मुतालबात की तहरीक को बाआवाज़ बलन्द पेश करते रहे। हाफ़िज़ लईक़ अइमद ख़ाँ जनाली सज्जादा नशीन आस्ताना जमालिया रामपुर और मुफ्ती सय्यद शाहिद अमी रज़वी की कियादत में चल रही "जेल भरी तहरीक" की

मार्च 1986 ई. में हजरत ने हमालियत का ऐलान फरमाया। हजरत के ऐलान के बाद तहरीक में जान आई। राकिम भी एक दिन जेल में रहा।

उत्तरप्रदेश के साबिक वजीर आला नाराइन दत्त तैवारी (अब अंधेराप्रदेश के गवर्नर हैं) और वजीर आजम राजयूगांधी के सियासी सलाह कार मिस्टर एम-एल-मुतेदार ने 17/नोम्बर 1989 ई में बाबरी मस्जिद के कजिया पर आप से मफाहिमत की कोशिश की जिस में वह ना काम रहे। दरिं इस्ना दूसरे काइदीन ने अपने को मुस्लिम रहनुमा पेश कर के कुछ मफाद हासिल करने की कोशिश की जिस पर आप ने सख्त नाराजगी का इजहार किया और ऐसे रहनुमाओ के बाइकाट की अवाम से अपील की। (रोज़ नामा अमर उजाला आगरा 10 नोम्बर 1989 ई)

जनवरी 1995 ई दो पहर दो बजे की बात है कि वजीर आजम पी वी नरसिमहा राऊ के खुसूसी सिक्रेट्री जानशीन मुफ्ती-ए-आजम की खिदमत में वजीर आजम का पैगाम ले कर हाजिर हुये। वह राकिमुस्सुतूर से वाकफियत रखते थे, मैंने उनकी हजरत से मुलाकात कराई, उन्होंने वजीर आजम का तहरीक कर्दा खत जवानी तौर पर बताया कि वजीर-ए-आजम हिन्द आप की शख्सियत से बहुत मुतास्सिर हैं और मुलाकात कर के दुआयें लेना चाहते हैं। आप दौलत कदा पर आने की इजाजत एनायत फरमा दें। हजरत ने फमाया कि मैं मजहबी आदमी हूँ, मुझे मेरे बुजुर्गों ने जिन उमूर की जिम्मादारी दी है उसी को अन्जाम देने में

मसरूफ हूँ, मैं सियासी नहीं हूँ, और उसके एलावा वजीर-ए-आजम के हाथ बाबरी मस्जिद की शहादत में मुलखिस हैं। पूरी उम्मत मुस्लिमा नाराज है। किसी भी सूरत में मुलाकात करना पसन्द नहीं है। अगर वह एक अकीदत मन्द की तरह बगैर किसी सियासी प्रोग्राम के आस्ताना शरीफ आना चाहते हैं तो आयें और हाजरी दे कर चले जायें।

मैं ऐनी शाहिद हूँ कि बावजूद हजार कोशिश के हजरत ने मुलाकात नहीं फरमाई जब कि वजीर आजम हिन्द 7/ घन्टा वरेली के सरकट हाऊस में आप का इन्तिजार करते रहे।

हालते हाजिरा के शरई तकाजे:

एक मुफ्ती के लिए जरूरी है कि जमाना के हालात और कवाइफ पर नज़र रखते हुये शरई और आईली कानूनी रहनुमाई का फरीजा अन्जाम दे। 1995 ई में हुकूमते हिन्द के शोअवा "एलेकशन कमीशन" ने तमाम बाशिन्दगाने मुल्क के लिए "शनाख्ती कार्ड" का रखना और इस्तेमाल करना जरूरी करार दे दिया था। इस "शनाख्ती कार्ड" में नाम, वलदियत और पूरा पता व उमर दर्ज होती है। साथ ही फोटो चिस्पाकर होता है। फोटो हराम होने की वजह से आस्ताना अलिया रज़विया के मरकज़ी दारुलइफ़ता में "शनाख्ती कार्ड" बनवाने या न बनवाने के लिए सवालात का अंबार लग गया। दूसरी तरफ़ एलेकशन कमीशन ने भी सख्ती करना शुरू कर दी कि हर काम में मसलन बैंक

इकाउन्त खरीद व फरोख्त को लाजमी करार दिया गया है। उसी दौरान अलजामिअतुलअशरफिया मुबारक पुर में "मजिसले शरई" की मीटिंग का एहतिमाम हुआ। हजरत जानशीन मुफती-ए-आजम ने मजिसल शरई की सदारत फरमाई। रईसुल्लहशीर अल्लामा अरशदुलकादरी की तजवीज पर आप ने "शनाख्ती कार्ड" बनवाने की इन अल्फाज के साथ इजाजत दी कि "इस सूरत में तलब के वक्त जरूरतें मलजिया या हाजत शदीदा मुतहक्क होंगी। लिहाजा खास शनाख्ती कार्ड के लिए तस्वीर खिचवाने की इजाजत होगी" (फरवरी 1995 ई मजिलस शरई मुबारकपुर)

अवाम की शदीद तरीन जरूरत के तेहत हजरत ने मशरूत इजाजत अता फरमाई, तो एक तब्का में नुक्ता चीनी शुरू हुई, जब इस की खबर हजरत को हुई तो आप ने एक वजाहती बयान जारी फरमाकर बहस को बन्द कर दिया। लिखते हैं :

ऐसे नये मसाइल जो फिलवाके फरइया हों, और उन इस मुतअल्लिक कोई सरीह जुजइया न मिल सके तो हर आलम नहीं बल्कि माहिर व तजर्बा कार मुफती की तरफ रजुअ करना चाहिए। और इस मुफती पर लाजिम है कि उसूल शरई के पेश नजर इस का हुक्म सादिर फरमाये। उसूल शरअ से हट कर फतावा देना हर गिज जाइज नहीं। अगर उस ने जिसे दलील करार दिया और फिर वाजेह हुआ कि यह दलील, दलील शरई नहीं तो फौरन इस पर रजुअ लाजिम है और हक का ऐलान करना

चाहिए। किसी हराम शय के मुवाह होने का फतवा उस वक्त दिया जायेगा जबकि वहाँ यह जाब्ता सादिक आये। "अज्जरुरत तन्बीहुलमहजूरात" और मुफती को तयक्कुन हो जाये कि इस जरूरत शरइया के मुआरिज कोई दूसरा काइदा शरइया नहीं है। (कल्मी फतावा)

अरब दुनिया में मसलके आला हजरत की इशाअत:

जानशीन-ए-हुजूर मुफती-ए-आजम ने हिन्द पाक के एलावा दरजनों अरब ममालिक का तब्लीगी सफर फरमाया, और अब भी यह सिलसिला जारी है, आला हजरत इमाम अहमद रजा कादरी फाजिले बरेलवी के मसलक की तरवीज व इशाअत के लिए आप अंधक जिद व जिहद फरमा रहे हैं। उस की एक अज़ीम मिसाल यह है कि रमजानुलमुबारक 1404 हिजरी "रोजनामा अलहुदा अबूजहबी" ने खुसूसी नम्बर शाइ किया। जिस में यह लिखा कि "बरेलियत एक नया फितना है, नया मजहब है" ताजुशशरीअ को यह पढ़ कर शदीद बे चैनी हुई कि अरब की दुनिया में आला हजरत कुददुस सिर्रहु को बदनाम किया जा रहा है। आप ने "मुत्तहिदा अरब इमारात" से शाइ होने वाले (11) ग्यारह मुल्की अख्बारात से रजुअ किया और "रोजनामा अलहुदा" का जवाब अरबी में तरतीब दे कर शाइ कराया। और बाजाब्ता तौर पर बर्रे सगीर में एक मुहिम चलाई ताकि उन अख्बारात पर दबाओ बने और आला हजरत कुददुस सिर्रहु के मसलक को बदनाम करने वालों की साजिश नाकाम हो जाये। हजरत ने हिन्दुस्तान,

पाकिस्तान और बंगला देशों में दस्तखाती महम की अपील भी जारी की।

गैर मुकल्लिद के फ़ितना-ए-अजीम का सदबाद

गैर मुकल्लिद ने 1993 ई. में अपने एअतिकाद मसलक की तशहीर के लिए एक नया फारमोला ईजाद किया कि हर इसलिए निजाई को मिडिया में पेश किया जाये जिस से उम्मत मुस्लिमा में इन्तिशार फैले और वह अहनाफ के खिलाफ हो। उसी इन्दिया के पेशे नजर 30/मई 1993 ई. को एक मजलिस में तीन तलाक का मसअला मिडिया में उछाल दिया गया कि :

अब कोई शौहर अगर तीन बार तलाक कहे तो शरीअत के मुताबिक तलाक नहीं मानी जायेगी, और उस से मर्द व बीवी उस के हुक्म और जिम्मा दारी पर कोई असर नहीं पड़ेगा। अगर कोई शौहर हर एक साथ तीन बार तलाक दे तो उसे कानून एक ही तलाक कहा जायेगा और शरीअत के मुताबिक उसे बदला भी जा सकता है।' (रोजनामा अमरउजाला बरेली 30 मई 1913 ई.)

जब जानशीन-ए-हुजूर मुपती-ए-आज़म को गैर मुकल्लिद के गुमराह कुन बयान की इत्तिहाज़ हुई तो आप ने एक प्रेस कांफ्रेंस बुलाकर फतवा जारी फरमाया, जिस में पाजेह तौर पर लिखा कि:

तीन तलाक नाम व निहाद व जमिअत अहले हदीस का एक बयान अखबार में मुलाहिजा हुआ जो न सिर्फ हन्फी बल्कि शाफेई, मालिकी और हंबली सभी आइम्मा

मजाहब के नजदीक सरीह खिलाफ और नाकाबिले अमल मरदूद व बातिल है, और मुसलमानों में फूट डालने की नापाक कोशिश नीज़ सियासी चाल है। मजलिस वाहिदा में दी गई तीन तलाक तीन ही मानी जायेगी। उस पर सभी आइम्मा का इत्तिफाक है।

(रोजनामा दैनिक जागरन बरेली 31/मई 1993ई.)

बरेली में मदारिस का कियाम :

बाज़ नागुफता व हालात की वजह से जानशीन हुजूर मुपती-ए-आज़म और आप के बराबर असगर मौलाना मन्ना रजा खॉ मन्नानी बरेली ने 1982 ई. में 'जामिआ नूरिया' रजविया के कियाम का फैसला किया, कोई मअकूल जगह न होने की वजह से जामिआ नूरिया को पुराना शहर की तारीखी मस्जिद बमअरूफ 'मिरजाई मस्जिद' महल्ला घेरजाफर खॉ में सरे दस्त शुरू कर दिया। सदरुलउलमा मौलाना मुपती तहसीन रजा खॉ बरेली उसके शैखुल हदीस मुकरर हुये। 1984 ई. में जमीन हासिल हो जाने के बाद जामिआ नूरिया को महल्ला बाकरगंज बरेली में मुत्तकिल कर दिया गया।

बरेली सवादे आजम अहले सुन्नत का मर्कजी शहर है, मगर यहाँ पर कोई ऐसा वसीअ और जामिआ इदारा न होने की वजह से तिशानिगाने उलूम को मायूस होती थी। 1998 ई. के आवाखार में राकिमुस्सुत्तूर के इस्सारा पर 'मर्कजुदरासातिलइस्लामिया जामिआतुर्रजा' के कियाम के लिए मन्सूबा बन्दी और अमली जामा पहनाने की कोशिश

तेज हो गई। अखिलन हजरत राजी नहीं थे, मगर राकिमुस्सुतूर ने हालात और जरूरत का एहसास दिलाया तो तकरीबन दो साल बाद मन्जूरी एनायत फरमा दी। 1999ई. में बेरुने शहर मुख्तलिफ जगहों को देखा गया। बालाआखिर मथरापुर(बरेली)में जगह पसन्द कर ली गई। 1999ई.के वस्त में सब से पहले 24/ बीघा आराजी की खरीदारी हुई, बादोह साल भी में मुख्तलिफ औकात में 80 बीघा आराजी खरीदारी गई। राकिमुस्सुतूर की जिद व जइद से "इमाम अहमद रजा ट्रस्ट" भी वजूद में आया। अलहम्दु लिल्लाहि इमाम अहमद रजा ट्रस्ट के जेरे एहतिमाम "जामिअतुर्रजा" हुसन व खूबी के साथ तअलीमी और तअमीरी मराहिल तै कर रहा है। हजरत के साहबजादा गिरामी कद मौलाना अर्रजद रजा खाँ कादरी जामिआ के नाजिम आला हैं, उन्हें की निगरानी और देख रेख में जामिआतुर्रजा का निजाम चल रहा है। चालीस हजार इस्कुयाइर फिट पर दो माला अजीमुश्शान खूबसूरत बिल्डिंग में दर्स निजामी की तअलीम हो रही है। एक हजार तलबा की रिहाइश को मदे नज़र रखते हुये दारुलइकामा की तअमीर मुकम्मल हो चुकी है। अब एक पब्लिक स्कूल और मस्जिद का तअमीरी मनसूबा पेशे नज़र है। यह सारा काम हजरत की सर परस्ती में अन्जाम पजीर हो रहा है।

कई जबानों पर महारत :

ताजुशरीआ को अल्लाह तआला ने कई जबानों पर मुकम्मल दस्तरस अता फरमाई है, अरबी, फारसी और उर्दू में

जहाँ बहेतरीन अदीब नज़र आते हैं तो वही दूसरी तरफ अंग्रेजी जबान पर भी आप को मुकम्मल उबूर हासिल है। आप ने इस्लामिया इन्टरकालेज बरेली में मामूली हिन्दी और अंग्रेजी पढ़ी थी मगर खुदावाद जिहानत व फतानत की वजह से आप ने अंग्रेजी में भी कमाल हासिल किया। साऊथ अफ्रीका, मलावी, जम्बावे, हरारे, मोरिशस, जर्मन, फ्रांस, हालैन्ड, इंगलैन्ड, अमरीका, कनाडा वगैरा वगैरा ममालिक की बैनलअकवामी कांफ्रेंस में अंग्रेजी ही में खिताब करते हैं। अंग्रेजी में आप ने सैंकड़ों फतावा तहरीर फरमाये, हजरत ने अंग्रेजी में सब से पहला फतवा 7/ मुहर्रमुलहराम 1412 हिजरी/20/ जूलाई 1991ई में अलहाज हारुन तार रजवी(लीड स्मथ साऊथ अफ्रीका)के इस्तिफता के जवाब में तहरीर फरमाया, जो दारुस्सलाम और दारुहर्ब में मुस्लिम व जिम्मी काफिर से मुतअल्लिक है।

अंग्रेजी फतावा के दो मजमूअे डरबिन(साऊथ अफ्रीका)से शाइअ हो चुके हैं।

नाइब इन्कम टेक्स कमिशनर जनाब जोहूर अफसर खान रजवी बरेलवी (हाल मुकीम अजमीर शरीफ) से इब्तिदाअन मशवरा फरमाते थे। मगर मौसूफ का यह तास्सुर था कि : हजरत जिन अंग्रेजी अलफाज और जुमलों का इस्तेमाल करते।

हैं वह लोगात के एतिबार से बिल्कुल दुरुस्त होते हैं। इस तरह की सलासत व रवानी भरी तहरीरें मुझे बहुत कम देखने को मिलें।

अंग्रेजी के एलावा आप को मैमुनी, गुजराती, मराठी, पंजाबी, बंगाली और भोजपुरी वगैरा जवानों में भी सलाहियत हासिल है। आप बखुबी इन एलाकाई जवानों को समझते और हस्के जरूरत इस्तेमाल करते हैं। इन जवानों को सिखने के लिए कभी भी आप ने किसी उस्ताद के सामने जानवे अदब यह नहीं किया, यह खुदादाद सलाहियतों अल्लाह तआला ने आप को वरसा में अता फरमाई हैं।

औलाद अमजाद :

जानशीन-ए-हुजूर मुफती-ए-आजम अल्लामा मुफती मुहम्मद अखतर रजा खॉ अजहरी बरेलवी से छ औलाद हैं, जिन में एक साहबजादे गिरामी हजरत मौलाना अस्जद रजा खॉ कादरी और पांच साहबजादिया (1) मोहतर्मा आसिया बैगम (जौजा आली जनाब अलहाज बुरहान अली रजवी देहली) (2) मोहतर्मा कुदसिया बैगम (जौजा मौलाना मुफती शुऐब रजा कादरी देहली) (4) मोहतर्मा अतया बैगम (जौजा हजरत मौलाना सलमान रजा खॉ बरेलवी) (5) मोहतर्मा सारिया बैगम (जौजा) जनाब मुहम्मद फरहान रजा) हैं।

मौलाना अस्जद रजा खॉ कादरी :

मौलाना अस्जद रजा खॉ बरेलवी की पैदाइश 14 शअवानुलमुअज्जम 1390 हिजरी को ख्वाजा कुतब बरेली में हुई। हुजूर मुफती-ए-आजम कुददुस सिर्रहु ने आप के मुंह में लुआबे दहन डाल कर दाखिले सिलसिला आलिया कादिरया बरकातिया रजविया फरमाया। आप का पैदाइशी नाम "मुहम्मद मुनव्वर रजा मुहामिद" है, और उर्फ

नाम "अस्जद रजा"

जामिआ नूरिया रजविया बरेली में तअलीम हासिल की, आप के साथ राकिमुस्सुतूर को भी दर्स व रिफाकत का शर्फ हासिल रहा। हम दोनों जामिआ नूरिया रजविया के एलावा सदरुलउलमा हजरत मौलाना मुफती तहसीन रजा खॉ मुहदिदस बरेलवी के दोलत कदा पर शरह जामी और जलालैन शरीफैन पढ़ने जाते थे। आप ने इब्तिदाई कुतुब घर पर मुफती मुजफ्फर हुसैन रजवी और मुफती नाजिम अली कादरी से पढ़ें। दर्स निजामिया की मुतदाविल कुतुब बुखारी शरीफ, मिशकात शरीफ, तिमिजी शरीफ वगैरा वालिद माजिद ताजुशरीआ से पढ़ी।

अमीन शरीअत हजरत अल्लामा सिबतैन रजा खा बरेलवी की साहबजादी मोहतर्मा राशिदा नूरी साहिबा से 2/शअबनुल मुअज्जम 1411 हिजरी/17 फरवरी 1991 ई बरोज इतवार को अक्दे मसनून हुआ। आप से चार लड़कियाँ और दो लड़के पैदा हुये। (1) अरीज फातमा (2) अमरा फातमा (3) मजीना फातमा (4) बुशरा फातमा (5) हुसाम अहमद रजा (6) हुमाम अहमद रजा पैदा हुये। अमीने मिल्लत हजरत मौलाना सय्यद शाह अमीन मियाँ सज्जादा नशीन खान्काह बरकातिया मारहरा शरीफ ने उर्स कास्मी बरकाती के मजमअ अक्तूबर 2001 ई में इजाजत व खिलाफत से नवाजा। वालिद माजिद ने सन्द फरागत के साथ ही साथ 2002 ई में तमाम सलासिल की इजाजत व खिलाफत और औराद वजाइफ आमाल व अश्सगाल में

मजाज व माज़ून फ़रमाया। आप बड़ी सलाहियतों के मालिक हैं, कम्प्यूटर दगैरा जैसे असी ज़लूम व फ़ूनून में बगैर किसी उस्ताद के महारत हासिल की, और जदीद से जदीद तर की फहम व फरासत में लगे रहते हैं। अल्लाह तआला मौलाना अस्जद रज़ा खॉ कादरी को अपने इस्लाफ़ का सही जानशीन बनाये। अमीन सुम्मा अमीन।
नोट : मज़ीद तफसीली हालात ज़िन्दगी के लिए मुताला करे "ताजुशरीआ हयात और ख़िदमात" जो तकरीबन पाँच सौ सफ़हात पर मुश्तमिल होगी। अन्करीब मन्ज़रे आम पर आने वाली है।

सेह लिसानी अदब पर उबूर-ए-कामिल

अज़मुहदिदसे कबीर हज़रत अल्लामा मुफ़्ती ज़ियाउल मुस्तफ़ अम्जदी ताजुशरीआ हज़रत अल्लामा अज़हरी, साहिब यमगना रोज़गार मुहक्कि और साहिब बसीरत आलिम फकीह हैं। इल्म व फज़ल और जुहद व तकवा में आप अपने जददे अमजद अहले सुन्नत सय्यदी आला हज़रत के वारिस मुन्फरिद हैं। अहकाक़ हक व इबताले बातिल का तहक्कीकी अन्दाज़ आप को बरासत में मिला है, आप खुदादाद वजाहत से मुत्तसिफ़ हैं। इसी लिए अरब व अजम के अवाम व ख़्वास आप से हुसूले फ़ैज़ के मुश्ताक़ रहते हैं और आप की ज़ियारत को ताज़गी ईमान का ज़रीआ मानते हैं।

अल्लाह तआला ने आप को कई ज़बानों पर मलका ख़ास अता फ़रमाया है। ज़बान उर्दू तो आप की घरेलू ज़बान है और अरबी आप की मजहबी ज़बान है। इन दोनों ज़बानों में आप को ख़ुरूसी मलका हासिल है जिस पर आप की उर्दू और अरबी नअतिया शाइरी शाहिद अदल हैं। आप के बर जस्ता और फ़िलबदीहा नअतिया अशआर फ़साहत व बलाग़त हुस्न तरतीब और नअत तख़युल में किसी कहना मशक़ उस्ताद के अशआर से कम दरज़ा नहीं होते। अरबी ज़बान के कदीम व जदीद उस्तूब पर आप को मलकाए रासिख़ हासिल है। आप की खिताबत व शाइरी और तर्जमा निगारी किसी पुख़्ता कार अरबी अदीब के अदबी कारनामों पर भारी नज़र आती है। ज़ामिआ अज़हर के दौरे तहसील

मैं जब आप का अरबी कलाम अज़हर के शूयूख सुनते तो कलाम की सलासत व नज़ाकत और हुस्न तरतीब पर झूम उठते और कहते थे कि यह कलाम किसी ग़ैर अरबी का महसूस नहीं होता।

यह बाकिआ मेरे सामने ही का है कि जम्बा बोवे में एक मिस्री शैख ने आप के हुम्द यह अशआर सुने तो बहुत महज़ूज़ हुये और उस की नक़ल की फ़रमाइश भी कर डाली हज़रत अल्लामा अज़हरी को मैंने इंगलैंड, अमरीका, साऊथअफ्रीका, जम्बाबोवे वगैरा में बर जस्ता अंग्रेज़ी ज़बान में तकरीर व वअज़ करते देखा है और वहाँ के तालीम याफता लोगों से आप की तअरीफ़ें भी सुनीं और यह भी उन से सुना कि हज़रत को अंग्रेज़ी ज़बान के क्साकी उस्तूब पर उबूर हासिल है।

हासिल कलाम यह है कि आप जो कुछ लिखत बोलते हैं उस में तकल्लुफ़ात का दखल नहीं होता बल्कि आप के मजामीन या तर्जमा निगारी उमूमन बज़रीआ इमला ही जबत कलम किए जाते हैं। इसलिए आप के इल्मी कारनामे बरजस्तगी ही से मुत्तसिफ़ होते हैं फिर हर बात दलाइल से मुबर्हान दिक्कत मुआनी पर मुश्तमिल जामिइयत से लबरेज़ होती है आप आला हज़रत कुददुस सिरहुलअजीज़ के कई नादिर रोज़गार इल्मी मुबाहि़स व तहकीकात पर मुश्तमि रिसालों की तकरीब व हाशिया निगारी इमला करा चुके हैं मशाइख अरब ने उन्हें पसन्द फ़रमाया और अपनी तकरीजात भी सुबुत फ़रमाये। रब्बे कदीर हज़रत ताज़ुशरीआ

अल्लामा अज़हरी मददज़ुल्लाहिल आली की उमर व सिहत में बरकत दे। आमीन बेहुरमते सय्यदिल अम्बिया वल मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम, व आलाहि व सहवेही अजमईन, हस्बोनल्लाहु व नेअमल वकील।

मसलके आला हजरत के सच्चे दाई व तर्जुमान

मौलाना अलहाज मुहम्मद सईद नूरी, वियरमैन रजा एकेडमी मुम्बई
जानशीन हुजूर मुफ्ती-ए-आजम हिन्द, ताजुशरीआ
फाजीयुलक़ज़ात हजरत अल्लामा मुफ्ती, अखतर रजा खॉ
अजहरी दामजिल्लाहु अलैना मेरे हजरत, हुजूर मुफ्ती आजम
की यादगार हैं। आप हुजूर आला हजरत और हुजूर मुफ्ती-
ए-आजम रदियल्लाहु तआला अन्हुमा के इल्मी व अमली
वरासत के चच्चे और हकीकी अमीन हैं। अल्लाह तबारुक
व ताआला ने आप के जरीआ सध्यदिना सरकारे आला
हजरत व हुजूर मुफ्ती-ए-आजम रदियल्लाहु तआला अन्हुमा
के सिलसिले की बड़ी जबरदस्त इशाअत की है ज़माना-ए-
हाल और माजी करीब जिस की मिसाल पेश करने से
काजिर है।

मैंने कई मर्तबा हजरत की रिफाकत का शर्फ हासिल
किया है और खिदमत के भी कई मवाक़ेअ मयस्सर आये
हैं। सरकारे मदीना में हाज़िरी और अग्रे की सआदतों से मैं
कई मर्तबा हजरत की मईत में बहरा अन्दोज हुआ। मक्का
मुअज़्जमा, मदीना मुनव्वरा और पाकिस्ता वगैरा में हजरत
ताजुशरीआ की खिदमत का ज़र्रीन मौका मिला। मैंने
इन मकानात पर भी हजरत के इर्द गिर्द अवाम व ख्वास
का वही हुजूम देखा है जो हिन्दुस्तान में देखने को मिलता
है। इस से अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि आप मुल्क व
बैरुने मुल्क उलमा व अवाम के दरमियान एकसौ तौर पर
मकबूल हैं।

शहरे मुम्बई में महरमुलहराम, रबीउलअव्वल शरीफ
और रबीउलआखिर के दस ग्यारह और बारह रोज़ प्रोग्राम
एक ही स्टेज पर हुआ करते थे। इस जलसों में हुजूर
मुफ्ती आजम के विसाल के बाद हुजूर ताजुशरीआ, शिरकत
फरमाते, इन में हजरत का वह इल्मी बयान होता था कि
उलमा व ख्वास अश अश कर उठते थे, अफसोस इस की
रीकरडिंग मौजूद नहीं है वरना यकीनन यह बहुत बड़ा
इल्मी सरमाया होता।

1987 ई में जब हुजूर जानशीन मुफ्ती-ए-आजम
हज व ज़ियारत के लिए तशरीफ़ ले गये इस सफ़र में
अम्मी जान (अहलिया मोहतर्मा) भी आप के साथ थीं। हजरत
को मक्का मुकर्रमा में गिरफ्तार कर लिया गया और ग्यारह
रोज़ तक कैद व बन्द में रखा गया। इस वक़्त रजा
एकेडमी मुम्बई ने हजरत की रिहाई के लिए मुल्कगीर
तहरीक चलाई थी और जबर दस्त एहतिजाजी सिलसिला
शुरू किया था। इस वक़्त की फाइल को शायद दीमक ने
खा लिया है वरना इस तहरीक की पूरी तफ़सील पेश की
जाती। इस वक़्त तकरीबन तमाम अख़बारात में हजरत की
गिरफ्तारी के खिलाफ़ बयानात दिए जा रहे थे। इस मौका
पर रजा एकेडमी मुम्बई के दौर रुक्नी वफ़द ने इस वक़्त
के सऊदी कोनसिल से मुलाकात कर के हजरत की रिहाई
का मुतालबा किया था। इस वफ़द ने कोनसिल से कहा था
कि आखिराइन का ज़ुर्म किया है? इन को गिरफ्तार क्यों
किया गया है? सऊदिया गवर्नमेंट ने उन्हें शायद इसलिए

गिरफ्तार किया है कि वह इमाम अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा बरेलवी कुददुस सिरुहु के पर पोते हैं और हिन्दुस्तान के एक ज़बरदस्त आलिमे दीन और अहले सुन्नत व जमाअत के काइद व रहबर हैं। इस वक़्त सऊदिया हुकूमत के अहल कारों को 'फीक्स' के ज़रीअे एहतिजाजी मुरासलात जारी किए जा रहे थे। बर्र सगीर के सुन्नियों में एक अजीब सी बे चैनी पाई जा रही थी। इस जमाने में हज कमेटी ऑफ इन्डिया के चेयरमैन अमीन खन्डवानी साहिब थे। मैंने उन से भी मुलाकात की और उनसे भी यही कहा कि वह अपने तौर पर हज़रत की रिहाई की कोशिश करें। उन्होंने यकीन दिलाया। वहाँ पर एक मौलवी साहिब से मुलाकात हुई बोले के मैं अल्लामा अख़रत रज़ा ख़ाँ की रिहाई का मुतालबा इसलिए करूँगा कि वह एक सुन्नी आमिल हैं। मैंने कहा कि वह सिर्फ़ सुन्नी आमिल ही नहीं बल्कि मुक्तदा-ए-अहले सुन्नत है और हमारे पीर जादा हैं, इसलिए हमारी कोशिश और ज़्यादा होनी चाहिए।

रज़ाएकडेमी ने सिर्फ़ उसी पर इक्तिफा नहीं किया बल्कि मुख़तलिफ़ तन्जिमों को साथ लेकर इब्राहीम रहमतुल्लाहि रोडमीराना मस्जिद के पास एहतिजाजी जलसे का ऐलान भी किया। यहाँ एहतिजाज की तैयारियाँ शुरू हो गयीं कि मक्का मकरमा से फौन पर इत्तिलाअ मौसूल हुई कि हज़रत को हुकूमते सऊदिया ने रिहा कर के मक्का मुकरमा से ज़दा रवाना कर दिया है और वह कल ज़दा से मुम्बई पहुँच जायेंगे।

हज़रत के इस्तिफ़ाल के लिए कई गाड़ियाँ और बसें जिस में दारुलउलूम हन्फ़िया रजविया कलाबा मुम्बई के तलबा और असातिजा थे और भी दीगर हज़रात थे बस और गाड़ियों के साथ एयरपोर्ट पहुँच गये। उन के एलावा दीगर पीर भाई और अहबाब अहले सुन्नत भी कसीर तअदाद में पहुँच चुके थे। हज़रत मौसूफ़ सुबह की फ़लाइट से मुम्बई पहुँचे थे। चूंकि अख़बारात वगैरा के ज़रीअे यह ख़बर आम हो चुकी थी कि हुकूमत सऊदिया ने हज़रत को रिहा कर दिया है और हज़रत फ़लों वक़्त पर मुम्बई पहुँच रहे हैं इसलिए अवाम में से भी कसीर तअदाद में लोग पहुँच गये थे।

हज़रत जब मुम्बई पहुँचे तो उनका एक शान्दार इस्तिफ़ाल किया गया। मेरे लिए यह बाइस फ़ख़ है कि हज़रत मेरे ग़रीब ख़ाना पर तशरीफ़ लाये। हज़रत बहुत थके हुये थे और सऊदी गवर्नमेन्ट ने हज़रत के हाथों में हथकड़ी भी डाल दी थी। इसलिए उन को आराम की सख़्त ज़रूरत थी। हज़रत से मुलाकात के लिए सब से पहले हज़रत मौलाना सय्यद हामिद अशरफ़ साहिब किब्ला अलैहिर्रहमा वरिज़वान और हज़रत मौलाना ज़हीरुद्दीन ख़ाँ ख़तीब व इमाम इस्माईल हबीब मस्जिद फ़ुलों का हार लेकर तशरीफ़ लाये मगर चूंकि हज़रत आराम फ़रमा रहे थे इसलिए उन के आराम में ख़ालल अन्दाजी मुनासिब न समझी गई। मैंने उन हज़रात से कहा कि हज़रत को बेदार न किया जाये। इसलिए यह हज़रात हार मेरे हवाले कर के

वापस हुये।

मुम्बई 13/सितम्बर 1986 ई/1407 हिजरी को इब्राहीम रहमतुल्लाहि रोड मुम्बई 3 पर मीनारा मस्जिद के पास रजा एकेडमी के जेरे एहतिमाम एक एहतिजाजी जलसा मुन्अकिद किया गया बल्कि यूँ कह लिये कि एक जशन का इन्अकाद हुआ जो हज़रत की रिहाई की खुशी में मुन्अकिद हुआ। जिस में मुहदिदसे कबीर हज़रत अल्लामा जियाउलमुस्तफा साहिब किल्ला मुदजुल्लाहुलआली और खतीबुलहिन्द, हज़रत मौलाना उबैदुल्लाह खाँ आजमी और दीगर उलमा-ए-किराम शरीक थे। हज़रत ने इस जलसे में खुसूसी खिताब फरमाया। जब हज़रत ने खिताब शुरू किया तो मजमा में बिल्कुल सुकूत तारी था।

हज़रत ने अपने इस खिताब में अपनी गिरफ्तारी की रूदाद बयान फरमाई थी और अपना एक शेर भी पढ़ा था।

अर्ज तम्बा है किस कदर दिल रुबा

मुझ से पहले मेरा दिल हाज़िर हुआ

नोट : हज़रत के इस खिताब को किताबचे की शकल में रजा एकेडमी मुम्बई ने शाई किया था, जेरे नज़र किताब में शामिल इशाअत है। (रजवी गुफिरा लहु)

इल्मी मकाम और मर्तबा

अल्लामा अब्दुलमुबीन नोअमानी अलमजमुलइस्लामी मुबारकपुर आजम गढ़

ताजुशरीआ बदरुत्तरीका, हज़रत अल्लामा मुफ्ती अखरत रजा खाँ अजहरी कादरी, बरेलवी दामत बरकातुहुमुल आलिया जानिशीन-ए-हुज़ूर मुफ्ती आजम हिन्द व सद मर्कज़ी दारुलइफता बरेली शरीफ की जात गिरामी मोहताजे तआरुफ नहीं, आप आला हज़रत अहले सुन्नत अलैहिर्हमा के परपोते, हज़रत अल्लामा इब्राहीम रजा खाँ इब्ने हुज्जतुल इस्लाम मौलाना हामिद रजा खाँ के साहिबज़ादे हैं इल्म व फज़ल में अपने जदे अम्जद और सरकार आला हज़रत के जानशीन हैं साथ ही हुज़ूर मुफ्ती-ए-आजम हिन्द अलैहिर्हमा वरिज़वान के काइम मकाम हैं।

इस्तिहज़ारे इल्मी और तफक्कुह:

आप की जात पूरी जमाअत अहले सुन्नत के लिए मरजअ की हैसियत रखती है तफक्कुह फिददीन में जो वरासत आप को हासिल है यकता-ए-ज़माना है फिक्ही जुजियात नोक ज़बान पर रहते हैं। एक बार जब कि आप जमशेदपुर में तशरीफ ले गये थे, जनाब अलीमुद्दीन साहिब आसवी के मकान पर सैनिक अफरोज थे कि एक इस्तिफता आया, आप ने फौरन इस का जवाब अरकाम फरमाया और मुतअदिद फिक्ही एबारात से भी मुजय्यन फरमाया और दस्तखत कर के हवाले कर दिया जब कि कोई किताब सामने न थी।

एक अजीम खिदमत :

अपने अकाल के तहफुज पर हद दर्जा एहतिमाम फरमाते हैं गैर जरूरी बातों से परहेज और मुतालअ कुतुब समाअत कुतुब और दर्स हदीस व फिक्ह नीज फतावा नवैसी आप का महबूब मशगला है। साथ ही तस्नीफ व तालीफ में भी अच्छा खासा वक्त सिर्फ फरमाते हैं हत्ता कि सफर में भी तस्नीफ व तर्जुमा का काम जारी रखते हैं सफर में विलउमुम वक्त कम मिलता है मिलने जुलने वालों की भीड़ से बच निवला आसान काम नहीं, लेकिन हजरत अजहरी साहब कित्ता अकीदत मन्दी की भीड़ से भी निकल कर इल्मी मशागील अपनाते हैं चन्द साल पेशतर की बात है उर्स सदरशरीआ अलैहिरहमा में आप घोसी तशरीफ लाये हुये थे और कादरी मन्जिल में कियाम किया था। मैं मिलने के लिए गया तो देखा कि कुछ इमला करा रहे हैं मसरूफियत देख कर वापस आ गया बाद में मालूम हुआ कि हजरत अलमोअतकदुलमुन्तकिद मुसन्नफा अल्लामा फजले रसूल बदायूनी अलैहिरहमा का तर्जुमा कर रहे थे। मैं ने हजरत पर इल्मी मशगले में खलल डालना पसन्द न किया जब कि ऐसे मौकों पर अकसर लोग अकीदत मन्दी का सुवूत देते हुये दूर से सलाम और दस्त बूसी व कदम बुसी में लग कर अपने मखदुमों को इल्मी खिदमत से दूर कर देने में अपनी सआदत और अवलमन्दी तसव्वुर करते हैं। अलहम्दु लिल्लाह अलमोअतकदुलमुन्तकद का यह तर्जुमा मुकम्मल हुआ और छप भी गया। यह हजरत कित्ता

की एक बड़ी इल्मी व दीनी खिदमत है क्योंकि यह वह किताब है जिस पर आला हजरत इमाम अहमद रजा कुदिदसा सिरुहु ने हाशिया तहरीर फरमाया है जिस का तारीखी नाम है अलमुस्तनदुलमोअतकद बिना नुजातुलअबद 1320 हिजरी यह किताब अकाइद व कलाम के अहम मुवाहिद पर मुश्तमिल है। इस पर आला हजरत कुददुस सिरुहु के हवाशी ने गोया सोने पर सुहागा का काम किया। बाज अदक और अहम एबारतों की तशरीह के साथ आला हजरत ने कुछ जदीद फिरकों का भी रद तहरीर कर दिया है। जो हजरत मौलाना फजले रसूल उरमानी बदायूनी अलैहिरहमा के वक्त में न थे या उन के हुक्म का सिर्फ आगाज हुआ था। इसलिए जरूरत थी कि इस किताब को आम किया जाता और उर्दूदाँ तबकें को भी इस से इस्तिफादे का मौका मिलता मजीद वरआँ यह किताब चूंकि बाज मदारिस अहले सुन्नत के निसाब तालीम में भी शामिल है तो इस से दर्स व तदरीस में आसानी भी पैदा करना मकसद था। जिस के पेशे नज़र मौलाना मुपती शोऐब रजा साहब की फरमाइश पर हजरत ताजुशरीआ अजहरी साहब कित्ता ने उसके तर्जुमे का आगाज कर दिया और सिर्फ आगाज नहीं तमाम मसरूफियात के साथ छः माह की कलील मुददत में उसका तर्जुमा मुकम्मल कर दिया बाज किताबों का तर्जुमा आसान होता है। उसे हर अरबी दाँ या आसानी कर भी सकता है, लेकिन बाज किताबें ऐसी फन्नी और मुश्किल होती हैं जिनका तर्जुमा साम के

बस की बात नहीं होती। अलमोअतकदुलमुन्तकद भी कुछ ऐसी ही किताब है जिस के तर्जुमे का काम खासा मुश्किल था लेकिन हुजूर अजहरी मियाँ ने कलील वक्त में बा आसानी एक उमदा तर्जुमा कर के उम्मत खुसूसन अहले इल्म पर एहसान फरमाया। यह किताब दो साल कब्ल छप कर मन्जर-ए-आम पर भी आचुकी है। फरमाया तर्जुमा किन हालात में हुआ और कैसे हुआ इस की कुछ तफसील किताब के मुकदमा निगार मुपती काजी शहीद आलम साहिब किल्ला उस्ताज जामिआ नुरिया रजविया बरेली शरीफ की जवान मुलाहिजा करें।

चुकि हजरत को इन्मीनान व सुकून से बरेली की सर जमीन पर रहने का मौका बहुत कम ही मयस्सर आता है लिहाजा जब तक्लीग व इरशाद के दोरे श्रीलंका रवाना हुये तो हुसने इतिफाक कि हजरत मौलाना शोऐब रजा साहिब और ताजुशरीआ के खल्फुरशीद हजरत मौलाना मुहम्मद अस्जद रजा साहिब हमारा सफर हुये किताब अलमोअतकदुल मुन्तकिद साथ रख ली गई। बिल आखिर 27/जमादिलआखिर 1424 हिजरी मुताबिक 123 आगस्त 2003 बरोंज हफता बाद नमाजे मगरिव अलहाज अब्दुस्सत्तार रजवी कोलमबो श्रीलंका के मकान पर इस अजीम काम का आगाज किया गया।

जिस तरह यह किताब अपने मौजू में मुन्फरिद व ला सानी है इसी तरह तर्जमा का अन्दाज भी आम तराजिम से बिल्कुल मुख्तलिफ और मुन्फरिद है एक तो हजरत की

निगाह कमजोर, दूसरी बात यह है कि किताब का खत निहायत बारीक हजरत के लिए एबारत देख कर तर्जमा करना मुश्किल अम्र था, मौलाना शोऐब रजा साहिब एबारत पढ़ते जाते और ताजुशरीआ फिलबदिया तर्जमा बोलते जाते और खुद मौलाना शोऐब साहिब सफहा किरतास पर तहरीर करते जाते। जहाँ जब मौका मयस्सर होता तर्जमा का अमल जारी व सारी रहता, हत्ता कि ट्रेन और पलीन पर भी यह मुबारक काम न रुका, इस तरह इस तर्जमे का बाज हिस्सा श्रीलंका में लिखा गया और बाज हिस्सा मिलावी में और बाज हिस्सा ट्रेन व पलीन पर और कुछ हिस्सा बरेली शरीफ में कियाम के दौरान लिखा गया।

(मुकदमा अलमोअतकदुलमुन्तकिद मुतर्जिम स.9-10 अलमतबुआ अलमजमा अर्जवी बरेली)

जिम्नन यह भी अर्ज करता चलूँकि अलमोअतकदुल मुन्तकद का अरबी ऐडीशन निहायत उमदा नई कमपोजिंग के साथ रजा एकेडमी मुम्बई से शाइ हो चुका है उसके बाद उसका दूसरा ऐडीशन हुदूसुलफतन व झाद ऐयानुस्सुनन (अरबी) अज अल्लामा मुहम्मद अहमद रजवी सदरुल मुदरिसीन अलजामिआतुलअशरफिया मुबारक पुर के इजाफे के साथ अलमजउलइस्लामी मुबारकपुर से भीशाइ हो गया है। किताब के कुल सफहात 270 हैं और हुदूसुलफतन के 1193 ऐलावा फहारिस, साइज 26×20=8 मुताबिक बहारे शरीअत कदीम, हुसूसुफितन का तर्जमा भी शाइ हो गया है। मत्तर्जिम है मौलाना अब्दुलगफार आजमी मिस्वाही और

तर्जमे का नाम फितनों का जहूर और अहले हक का जिहाद हुदसुलफितन के तर्जमे का भी प्रोग्राम था कि उस दौरान यह खबर फरहत असर मूसिल हुई कि हुजूर ताजुशरीआ दामत बरकातुहुमल कुदसिया इस को उर्दू में मुन्तकिल फरमारहे हैं। फिर जल्दी ही वह तर्जमा शाइअ हो कर मनज़र आम पर भी आ गया जो इस वक्त नज़र नवाज़ है। तर्जमा किया है गोया मुस्तकिल तस्नीफ है, कि पढ़ने वाले को शुबह ही नहीं होता कि यह किस किताब का तर्जमा है और यह तर्जमे की बहुत बड़ी खुबी है जो आम मुतर्जिम को हासिल नहीं होती। शुरु किताब में फाजिल गिरामी मौलाना काजी शहीद आलम रजवी के कलम से 19 सफहात का मुकदमा है जो अर्ज अहवाल के साथ मुसन्निफ मुहश्शी और मतुर्जिम के हालात पर मुश्तमिल और बड़ा मालूमात अफज़ा है, गिरया मुकदमा न होता तो बाकई एक वड़ी कमी महसूस की जाती, मुकदमा के साथ पूरी किताब 351 सफहात पर खत्म होती है। मत्न के साथ आला हज़रत कुददुस सिरुहु के हवाशी का तर्जमा भी बशकल हाशिया है।

तब्लीगी और तदरीसी मशगला:

हज़रत ताजुशरीआ दामत बरकातुहुम ने शुरु दौर में तदरीस का मशगला इखितयार किया जो हुजूर मुपती आजम कुददुस सिरुहु के आखिरी दौर तक चलता रहा फिर जब सरकार मुपती-ए-आज़म विसाल से कब्ल साहिब फराश रहने लगे और इस्तिगराकी कैफियत तारी हो गई तो

आप के तब्लीगी दौरों का सिलसिला बन्द हो गया। उस के बाद ही से खलके खुदा का हुजूम हज़रत ताजुशरीआ की तरफ मुतवज्जोह हुआ तो आप को तदरीसी खिदमात छोड़ कर तब्लीगी दौरों में वक्त देना पड़ा जो आप की मजबूरी थी, क्योंकि मुल्क व बैरुने ममालिक ऐशाक मुपती-ए-आज़म और वाबस्तगान सिलसिला कादरिया बरकातिया रज़विया की प्यास बुझाना उनकी रुहानी तरतीब का फरीज़ा अन्जाम देना भी ज़रूरी था। इसलिए हज़रत ताजुशरीआ की हयात का ज़्यादा वक्त तो तब्लीगी दौरों ही की नज़र हो कर रह गया जिस की वजह से हज़रत तस्नीफ व तालीफ और फतवा नवैसी का ज़्यादा अन्जाम न दे सके फिर भी इतनी मसरुफियात के साथ जब आप की तसानीफ व तराजिम की फिहरिस्त पर नज़र डाली जाती है तो हैरत होती है कि तकरीबन बीस किताबें आप की नोक कल्म से निबल कर मनज़र-ए-आम पर आ चुकी हैं सिर्फ फतावे का काम बाकी वह भी तकरीबन पाँच जिलदों पर मुश्तमिल है और हुनूज इस का सिलसिला जारी है, काश बाज़ अहले अक़ीदत गैर ज़रूरी हुसूल के लिए हज़रत को यहाँ वहाँ न ले जाते और इल्मी कामों के लिए फुर्सत बहम पहुँचाते बल्कि इन अहम कामों में हज़रत की मदद करते तो तस्नीफ व तालीफ और फतावे का काम आगे पढ़ता, लेकिन आदमी गर्ज का बन्दा होता है अपना मकसद हासिल हो बाकी किसी कीमती शिख़ायत के ज़र्री औकात जाइअ हो जाये उसे उस की फ़िक्र नहीं होती, मैं इस सिलसिले में गलू अक़ीदत के

शिकार अहबाब से गुजारिश करूँगा कि इल्मी और दीनी जरूरियात को अपनी जाती गर्ज और ख्वाहिश पर तरजीह दी और हुजूर ताजुशरीआ के नुकसानात को मजीद जाइ होने से बचायें, मेरा यह मकसद हर गिज नहीं कि हजरत जहाँ भी जाते हैं कोई फायदा नहीं होता लेकिन अलअहम फलअहम के फारमुले पर अमल करना ही दानिशमन्दी है जहाँ तक दुआओं का तअल्लुक है घर पर जा कर ही दुआ करना तो जरूरी नहीं, हजरत जहाँ से भी दुआ करेंगे अल्लाह कबूल करेगा और आप का मकसद हासिल हो जायेगा।

वक्त के बहुत से उलझे हुये मसाइल हैं जिन पर लिखना है बहुत से अहम मौजूआत हैं जिन पर तस्नीफात की जरूरत है, अगर हजरत ने अब से उन पर तवज्जोह दी और कौम ने भी फुरसत दी तो इन्शाअल्लाह फैजान आला हजरत व मुफती आजम को ऐसे दरिया बहेंगे कि लोग देखते रहेंगे। यह हकीकत है कि जो जाता है अपनी जगह खाली छोड़ जाता है और अपने उजूम फुनून की बसात लपेट कर चला जाता है, हमारी गिनती शखसियतें हम से रुखसत हो गयीं लेकिन उन के शायान शान हमारे पास इल्मी आसार ताजुद नहीं जिन से हम उनका वाकेई तआरुफ करा सकें, हुजूर ताजुशरीआ इस वक्त जमाअत अहले सुन्नत के वह कीमती सरमाया हैं जिन की मिसाल ढूँढ़ने से मिलना नशकिल है। जो मरजईयत व मरकजियत आप को हासिल है वह किसी दूसरे को हर गिज नहीं। पीरों में आप इस

वक्त सब से बड़े पीर हैं, मुषितयों के भी इमाम नीज काजीयुलकुज्जात और उलमा-ए-किराम के बिला शुबह मलजा व मावा हैं फिक्ह में आप का मकाम बुलन्द तो आप के फतावा से जाहिर है और हदीस दानी में कमाल व देखना हो तो आप की तअलीकात बुखारी को मुलाहिजा किया जाये, जो हवाशी इमाम अहमद रजा के साथ मज्लिस बरकात जामिआ अशरफिया मुबारकपुर से शाइअ हो चुकी हैं।

और फन्ने तफसीर में आप को जो दर्क हासिल है उसके लिए दिफाअ कन्जुलईमान, नामी किताब मुंह बोलती तस्वीर की हैसियत रखती है यह किताब मुतवस्सित साइज के 119 सफहात पर मुशतमिल है लेकिन अफसोस कि उसकी कितावत व इशाअत की जिम्मेदारी गैर आलिमों और गैर अरबी दाँ के हाथ पड़ने के सबब निहायत वे वकअत अन्दाज से शाइअ हुई है जगह जगह से असल एबारात को जो कुतुब तफासीर से अखज की गई थीं। हजफ कर दिया गया है और मजीद मजामीन जो हजरत ने उसके बाद अखलाक कास्मी दैवबन्दी के रद में लिखे थे वह भी शामिल न किए गये। दूसरे हिस्से के नाम पर उसे टाल दिया गया, मेरी हजरत किबला की खिदमत बाबरकत में इस्तिफादा करने वाले अहले इल्म इजरात से गुजारिश है कि दोनों हिस्सों को अज सरेनू एडट कर के असल अरबी एबारात के साथ और हवालों की मुकम्मल तखरीज के बाद जिल्द मन्ज़र आम पर लायें वरना कही मुसब्बदे के गायब होने का शिकवा करना पड़ा।

मेरी शहजादा हुजूर ताजुशरीआ मौलाना अर्रजद रजा साहब से और हजरत के गिर्द इल्मी मशगुलियात से वाबस्ता इजरात से गुजारिश है कि कन्जुलईमान और

तफसीरी मवाद से मुतअल्लिक हजरत की तहरीरों तकजा और मुरत्तब करे हजरत को सुनायें और बाकाइदा अन्दाज में उन्हें मन्ज़रे आम पर लायें इसी तरह हजरत के लिखे हुये फतावा तकजा किए जायें उन्हें मुरत्तब कर के हजरत को दोबारा सुनाया जाये फिर उन्हें मन्ज़रे आम पर लाया जाये चुकि यह तमाम अन्जाम देना बहुत जरूरी है।

हजरत ताजुशरीआ के इल्मी मकाम व मरतबे को उजागर करने के लिए जरूरी है कि हजरत के आसार-ए-इल्मिया को महफुज किया जाये और उन्हें ढंग से शाइअ किया जायें बिलखुसूस हजरत की अरबी तसानीफ मसलन अलहक्कुलमुबीन और मिरातुन्निजदया वगैराहा को आलम अरब में फैलाया जाये ताकि आला हजरत कुददुस सिरूह के तअल्लुक से जो गलत फहमियाँ फैलाई जा चुकी हैं उन का ज्यादा से ज्यादा तदारुक किया जाये बल्कि मेरे एक राय यह भी है कि मसलके अहले सुन्नत व जमाअत यानी मसलके आला हजरत जो तर्जुमान हैं और बरेली के तअल्लुक से जो गलत प्रोपगन्डे आलमी पैमाने पर हो रहे हैं इस सब का तकजा जवाब हजरत के इरशादात पर मन्वी उर्दू अंग्रेजी और अरबी में शाइ किया जाये खानवादा के बाहर के अफराद जो जवाबात दे रहे हैं उस के मुकाबिले में हजरत ताजुशरीआ की तहरीरें ज्यादा मुवस्सिर साबित होंगी और मुखालफीन का झूट अच्छी तरह तशत अज बाम होगा।

तर्जमा निगारी का जाइज़ा

मौलाना नफीस अहमद रजवी, उस्ताज जामिआ अशरफिया, मुबारकपुर, आजम गढ़

खानवादा-ए-रजविया मरकजे अहले सुन्नत बरेली शरीफ के चशम व चिराग ताजुशरीआ हजरत अल्लामा मुपती मुहम्मद अखतर रजा खॉ अजहरी महजुल्लाहुलआली की ज्ञात उलमा-ए-किराम और मशाइखे तरीकत व दरमियान ऐसे ही मुस्ताज और नुमाया हैं जैसे चौदहवी का चान्द सितारों की अन्जुमन में मुस्ताज और नुमाया होता है। अल्लाह तआला ने आप को हुस्ने जाहिर और जमाल बातिन दोनों दौलतों से नवाजा है। आप इल्मे शरीअत व तरीकत के जामेअ और मजमअ बहरैन हैं इस पर मुस्तजादिया है कि अल्लाह तआला ने आप की मोहब्बत व अकीदत अपने बन्दों के दिलों में इस तरह डाल दी है कि आप जहाँ भी तशरीफ ले जाते हैं अवाम व ख्वास सभी आप की जियारत के मुस्ताफ और आप से मुसाफा और दस्त बोसी के लिए बे ताब नजर आते हैं। मजलिस उलमा-ए-में आप तशरीफ रखते हैं तो बिला इख्तिलाफ आप ही "मीरे मजलिस" होत हैं। आप जहाँ कदीम उलूम व फुनून से आरास्ता हैं वही जदीद अरबी और अंग्रेजी जवान व अबद पर ऐसी कामिल दस्तर्स रखते हैं कि बिला तकल्लुफ दोनों जबानों में अहले जबान की तरह लिखते और बोलते हैं।

आप मुफस्सिरे आजम अल्लामा इब्राहीम रजा खॉ बरेलवी के फरजन्दे अरजमन्द, हुज्जतुल इस्लाम अल्लामा

मुहम्मद हमिद रज़ा अलैहिर्रहमा के पोत, मुफ्ती आजम हिन्द अल्लामा मुहम्मद मुस्तफा रज़ा नूरी, बरेलवी के नवासे और आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा कादरी बरेलवी अलैहिर्रहमा वरिज़वान के इल्मी वारिस और जानशीन हैं।

इंसान समाज में तीन तरह के अफ़राद पाये जाते हैं

1. एक तो वह जो अपने अन्दरूनी खुबियाँ और कमालात रखते हैं और अपनी शख़्सी और जाती खुबियों की बुनियाद पर अपनी शौहरत व मकबूलियत की फलक बोस एमारत काइम करते हैं और अवागम व ख़्वास सब के दिलों में महबूबियत का मकाम बनाते हैं 2. दूसरे लोग जो सिर्फ़ अपने आवा व अजदाद की मकबूलियत के बल बोते पर अपनी शौहरत व मकबूलियत का सिक्का जमाने की कोशिश करते हैं, जब कि खुद उन की जात इल्मी व रुहानी कमालात से आरी होती है। 3. तीसरे वह अफ़राद जो जाती और इजाफी दोनों खुबियों के मालिक होते हैं कि एक तरफ़ जहाँ खुद उनकी शख़्सियत इल्म व फज़ल से आरास्ता होती है वहीं दूसरी जानिब उनके आवा व अजदाद की शौहरत व मकबूलियत भी उनकी पुश्त पना ही करती है। मेरे ममदूह मौसूफ़ हज़रत ताज़ुशरीआ दाम जिल्लाहुलआली की शख़्सियत आख़री किरम से तअल्लुक रखती है, जहाँ आप के रौशन ख़ान्दानी पसे मन्ज़र ने आप को बाम उरुज तक पहुँचाया है वही इस से कहीं ज़्यादा आप के इल्मी व रुहानी कमालात और दीनी व इल्मी ख़िदमात ने आप की शख़्सियत को रौशन और तांबनाक बनाया है।

तर्जुमा के मैदान में :

तर्जुमा निगारी के मैदान में भी हज़रत ताज़ुशरीआ की गिराँ कद्र ख़िदमत हैं। दर हकीकत तर्जुमा निगारी एक फ़न है, एक आर्ट है। उसको एक आम और आसान काम समझ लेना अक्ल मन्दी नहीं। महज़ दो ज़बानें जानता तर्जुमा निगारी के लिए काफी नहीं, हमारे मुलक में तकरीबन हर पढ़ा लिखा शख़्स कम से कम दो तीन ज़बानें जानता है। लेकिन उन में से हर शख़्स एक ज़बान की तहरीर को दूसरी ज़बान में मुन्तकिल करने की सलाहियत नहीं रखता। तर्जुमा निगारी एक फ़न है और कोई भी फ़न बा आसानी नहीं आता, उसके लिए मशक और रियाज़त की जरूरत होती है।

तर्जुमा का मतलब किसी भी ज़बान के मज़मून को इस अन्दाज़ से दूसरी ज़बान में मुन्तकिल करना कि कारी को यह एहसान तक न हो कि एबारत बे तरतीब है। या एबारत में पैवन्द कारी की गई है। कमा हक्काहु तर्जुमा करना बहुत मुश्किल काम है। यह नगीना जड़ ने का फ़न है। तर्जुमा में एक ज़बान के मुआनी और भतालिब को दूसरी ज़बान में इस तरह मुन्तकिल किया जाता है कि असल एबारत की खोबी और मतलब जू का तू बाकी रहे। दूसरे लफ़्ज़ों में यूँ कह लीजिए कि तर्जुमा महज़ एक बे रूह निकाली का नाम नहीं है बल्कि इस में असल का पूरा ख़्याल और मफहूम। उसी लोच और नरमी या उसी दुरिश्ती

और सख्ती इसी जाजबियत और दिल कशी या उसी बे कैफी और बे रंगी के साथ, उसी एहतियात के साथ आये और जवान व बयान का भी वैसा ही मीआर हो।

सही मअनों में और कमा इक्कोहु तर्जमा निगारी के लिए कम अज कम तीन शरतें हैं जो दर्ज जैल हैं।

(1) जिस जवान से तर्जमा किया जा रहा है उस जवान की लोगत से इस्तिलाहात और मुहारों से, किसी कद अदबियात से और थोड़ी बहुत तारीख से वाक्फियत और निखरा हुआ जौक जरूरी है। यह जरूरी नहीं कि जिस जवान की तस्नीफ का तर्जमा करना है इस जवान पर भी तर्जमा करने वाले को माहिराना उबूर हासिल हो। या वह असल एवारत या असल तस्नीफ वाली जवान में खुद भी उसी तरह बे तकल्लुफ और बे तकान लिख सकता या बोल सकता हो, बल्कि इस जवान का सिर्फ किताबी इल्म काफी है। असल एवारत या असल तस्नीफ की जवान का इल्म सिर्फ किताबी नहीं बल्कि इस से कुछ ज्यादा हो तो और अच्छा है। जितना ज्यादा हुआ इतना ही अच्छा है। और अगर किताबी इल्म भी न हो तो जवान की वारिकियों और असल कलम कार के खियाल की निजाकतें हाथ से निकल जायेंगी, असल एवारत की नौक पलक पर तर्जमा करने वाले का ध्यान नहीं जायेगा।

(2) दूसरी शर्त यह है कि जिस जवान में तर्जमा करना है उस पर माहिराना उबूर हासिल हो, असल तस्नीफ जवान से कही ज्यादा कुदरत इस जवान में होनी चाहिए

जिस में तर्जमा करना मकसूद है। यहाँ तक कि उस जवान में खुद लिख लेने की अच्छी खासी मशक और उस जवान का पहलू दार इल्म होना चाहिए। पहलूदार इल्म से मुराद यह है कि उसके माखज का, जहाँ जहाँ से वह सैराब हुई है उन सर घशमों का, उस के नशीब व फराज का इल्म हो, अल्फाज कहाँ से आये, किस तरह आये, उन के लगवी मअना किया था, इस्तिलाही मअना किया हो गये और उन के हकीकी मअना किया थे, मजाजी मअना किया हो गये और किया हो सकते हैं। उनके रोज मरा और मुहाविरे क्या कर बने उन में मुख्तलिफ औकात में किया तब्दिलियाँ हुयें। एक लफज अपने दामन में कितने मुआनी रखता है और एक माददा से कौन कौन से अल्फाज किस किस तरह बन सकते हैं ?

(3) तीसरी शर्त यह है कि जिस एवारत या तस्नीफ का तर्जमा करना मकसूद है उस के मौजू और फन्न से मुनासिब हद तक वाक्फियत हो क्योंकि मौजू और फन्न के बदलने से बसा औकात बहुत से अल्फाज के मअना बदल जाते हैं कभी ऐसा होती है कि एक ही लफज या एक ही तरकीब के अदब में कुछ और मअना होते हैं नहवों में कुछ और होते हैं और सर्फ में कुछ और और मन्तिक में कुछ और मअना हो जाते हैं। मसलन लफज कलिमा को ले लिजीए लोगत में बात, खुल्बा और कसीदा के मअना में आता है। नहवों सर्फ में उसका मतलब होता है वह लफज जो मअना मुन्फरिद रखता हो और अहले मन्तिक की इस्तिलाह में

कलिमा का वही मअना है जो नहवियों के नजदीक "फेअल" का है। अब अगर तर्जमा करने वाले को यह मालूम नहीं कि इस लफ्ज का किस फन में किया मअना और वह लोगत की मदद से तर्जमा कर देगा तो कभी ऐसा भी हो सकता है कि एबारत का सारा मफहूम गारत हो जाये और तर्जमा, तर्जमा के बजाये "रजम" (एबारत) की संगसारी और कत्ल व खून का बाइस हो जाये।

मौजूअ और फन की वाकफियत से मुराद सिर्फ यही नहीं है कि अगर एबारत इल्म मुआशियात की है तो मआशियात की चन्द इस्तिलाहें जान ली जायें, या अगर अदबी मौजूअ है तो पहले से थोड़ी बहुत अदबी सोझ पैदा की जाये, बल्कि असल मौजूअ से वाकफियत के मअ कुछ और भी हैं। उस के यह भी मअना हैं कि अगर किसी साहिब तर्ज अदीब या मखासूस रुजहान और खास जहनियत के मुसन्निफ की तस्नीफ का तर्जमा करना हो तो इस अदीब या मुसन्निफ के तर्ज फिक्र से रुजहान खास जहनियत से आगाही हो। जरूरी नहीं कि पहले से इस की तमाम तसानीफ का मुताला हो बल्कि यह काफी है कि उस की सवानेह उमरी या जिन्दगी के खास हालात और उस के तर्ज बयान के मुतअल्लिक दूसरों की रायें मालूम कर ली जाये। यह भी न हो सके तो कम अज़ कम शर्त यह है कि जिस तस्नीफ का तर्जमा करना है उसे खूब गौर से एक बार अव्वल ताखिर पढ़ लिया जाये और अगर ज़ेरे तर्जमा तस्नीफ पर दूसरों की रायें, तबसरे या तन्कीदें या

तआरुफ मिल सकें तो उन पर एक नज़र डाल ली जाये, उस के बाद तर्जमा का काम शुरू किया जाये। यह अच्छी तर्जमा निगारी के लिए जरूरी और बुनियादी बातें हैं। मुतर्जम तर्जमा निगारी के दौरान उनका जिस हद तक लिहाज़ करेगा और खुद उसकी ज़ात उन औसाफ व शराइत पर जिस हद तक पूरी उतरेगी। उस का तर्जमा इतनी उमदा शानदार और असल एबारत या तस्नीफ के मफहूम को अदा करने वाला होगा।

अब उसकी रौशनी में जब हम ताजुशरीआ मशजुल्लाहुआली की शख्सियत को देखते हैं तो न सिर्फ जरूरी हद तक उन औसाफ व शराइत का जामे पाते हैं। बल्कि दोनों ज़बानों में ज़बर दस्त महारत और कमाल का हामिल पाते हैं। उर्दू तो उन की मादरी ज़बान ही है और अरबी या अंग्रेजी में वह अहले ज़बान जैसी महारत रखते हैं। इन दोनों ज़बानों में वह बिला झिझक और बरजस्ता लिखने और बोलने की सुलाहियत रखते हैं। इसलिए तर्जमा निगारी के बाब में आप के नोक कमल से कई अहम और शानदार कालम आलमे वजूद में आये हैं।

जब हम इस हैसियत से आप की खिदमात का जाइजा लेते हैं तो दर्ज जैल कारनाने हमारे सामने आते हैं और कलब व निगाह के लिए सामान तस्कीन फराहम करते हैं।

1. तर्जमा : "अल्मोअतकदुलमुत्तकद" बल्मुल्तनदुल्मोअतमद (अरबी से उर्दू)

2. तर्जमा : अज्जुलादुल अन्का यिन बहरे सबकुलुइका (अरबी से उर्दू)

3. तर्जमा "मिश्र शतमसाह विज्ञानजकुण्ड बेदाश्तमहबूब येअलाअल्लाह" (उर्दू से अरबी)

4. तर्जमा "मतलबल-काशी की हुक्मतसदीर" (उर्दू से अरबी)

5. तर्जमा "अहलाकुवकाविर्द" (उर्दू से अरबी)

6. "तअसमुक्तमाकून" (उर्दू से अरबी)

7. "अलहादिलयाफ की अहकामिलजुआफ"

8. "शमुतुइस्लाम अलसुलुरुसूल किराम" (उर्दू से अरबी)

इन में से जो किताबें हमें दस्तियाब हो सकीं उनका तआरुफ पेश खिदमत है:

1. "अलमोअतकदुलमुत्तकद" वलमुत्तनदुलमोअतमद" (बिना नुजातुलअबद)

"अलमोअतकदुलमुत्तकद" अरबी जवान में खातिमुलमुहविककीन

अल्लामा फजले रसूल कादरी, बदायूँ अलैहिर्रहमा वरिजवान

(1289 हिजरी) की अरबी जवान में गिराँ कदर और

अजीमुश्शान तस्नीफ है। यह किताब अकाइद व कलाम के

मौजूअ पर बे नजीर और यगाना है। इस किताब में एक

मुकदमा, बार अबवाब और एक खातमा है। मुकदमा में हुक्म

की तीनों किस्म, अक्ल, मादी और शरई को बयान करने के

बाद हुक्मे अक्ली की अकसाम वगैरा को भी बयान किया

गया है। जब कि बाब अब्वल इलाहियात, बाब दोम अकाइद

नबुव्वत, बाब सोम मसाइल समइया और बाब चहारूम

मसाइल इमामत कुबरा के बयान में है। और खातमा किताब

में ईमान व कुफ्र और बिदअत व बिदअती से मुतअल्लिक

कुछ अहकाम की तफसील है।

किताब की अहमियत व इफादियत के पेशे नजर

हजरत मौलाना काजी अब्दुलवहीद फिरदौसी, अजीम आबादी

ने उसको छपवाने का इरादा फरमाया और मुम्बई का छपा

हुआ एक नुस्खा उन्हें दस्तयाब हुआ तो उन्होंने ने आला

हजरत इमाम अहमद रजा कादरी बरेलवी अलैहिर्रहमा

वरिजवान (1921 ई 1340 हिजरी) की बारगाह में तस्हीह के लिए

भेजा। तस्ही के दौरान आला हजरत अलैहिर्रहमा वरिजवान

ने महसूस किया कि उस पर जा बजा हवाशी और

तअलीकात की जरूरत है, कसरत मसरूफियात की वजह से

आप ने उस पर बहुत ज्यादा तफसीली हवाशी के बजाये

जगह-जगह मुख्तसर और जामेअ तअलीकात रकम फरमाये

और फिर बाज़ अहम मकामात पर अल्लामा शाह वसी

अहमद मुहदिदस सूरती अलैहिर्रहमा की गुजारिश पर

तफसीली हवाशी भी लिखे। और उनका नाम "वलमुत्तन

दुलमोअतमद बिना नुजातुलअबद" रखा जिस से "1320

हिजरी क आदाद निकलते हैं। इमाम अहमद रजा कुददुस

सिर्रहु ने इतनी इजलत और सुरअत से यह तअलीकात

लिखें कि खुद फरमाते हैं : अन्नत्तबअ जार, वलकलम सार,

व फुरसती मादूम, व अशगाली मालूम (यानी उधर तबाअत

का काम जारी है और (उधर) मेरा कलम रबों है। फुरसत

मादूम है और (मेरी) मसरूफियात (सब को मालूम है) मगर

उसके बावजूद यह तालीकात किताब की एक जामेअ, गिराँ

कदर और शान्दार शरह इब्न गयेँ और उस में उस दौर के

बहुत से गुमराह और बददीन गिराँह हों का वाजेह हुक्म

और जामेअ बयान भी आ गया। अलहम्दुलिल्लाह। यह

किताब मअ शरह जामिआ अशरफिया, मुबारकमुर की सर

बराही में तन्जीमुलमदारिस अहले सुन्नत के लिए तशकील होने वाले जदीद निसाब तालीम में शामिल की जा चुकी है और उसके दर्स का सिलसिला भी जारी हो चुका है। 1420 हिजरी 1999ई में "अलमजमुलइस्लामी" मुबारकपुर की जेरे निगरानी रज़ा एकेडमी मुम्बई ने जब नये अन्दाज़ में उस की तबाअत करानी चाही तो उस्ताज़ गिरामी हज़रत अल्लामा मुहम्मद अहमद मिस्बाही दाम जिल्लाहु सदरुल मुदरिरीसीन जामिआ अशरफिया, मुबारक पुर की तस्हीह व तजदीद और गिराँ कद्र आलिमाना अरबी मुकददमा के साथ उसकी शान्दार तबाअत कराई।

इस किताब की अहमियत व इफादीयत के पेशे नज़र हज़रत ताजुशरीआ अल्लामा अज़हरी साहब दाम जिल्लाहुलआली ने उर्दू ज़बान में उन दोनों किताबों का शान्दार, गिराँ कद्र और वकी तर्जमा फरमाया। यह तर्जमा इतना उमदा, सलीस और शश्ता है कि यह तर्जमा नहीं बल्कि उर्दू ज़बान में मुस्तकिल तस्नीफ़ की हैसियत रखता है। उस में असल के अलफाज़ की मुकम्मल रिआयत के साथ मज़मून को बहुत वाज़ेह अन्दाज़ में इस तरह अदा किया गया है कि सलासत व रवानी कही भी मुतास्सिर होती नज़र नहीं आती। हर साहिब इल्म जानता है कि इल्म कलाम की किताबों में फलसफा व मन्तिक के मुवाहि़स और इस्तिलाहें कसरत से इस्तेमाल की जाती हैं, जिन को अरबी ज़बान से मुन्तकिल कर के उर्दू के कालिब में ढालना बहुत मुश्किल होता है। लेकिन हज़रत ताजुशरीआ दाम जिल्लाहु

ने अपने लिसानी व अदबी कमाल व महारत से उसको बहुत आसानी के साथ उमदा पैराये में उर्दू ज़बान में कर दिया दिखाया है अब जैल में असल किताब की एबारत के साथ तर्जमा का एक नमूना कारीइन किराम की खिदमत में पेश है जिस से तर्जमा की उमदगी का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है अरबी एबारत अज़ इमाम अहमद रज़ा कुददुस सिरूहु :

तर्जुमा: अज़ हज़रत ताजुशरीआ दाम जिल्लाहु:

"और उन्हें में से मिरजाई फिर्का है और हम उन लोगों को मिरज़ा गुलाम अहमद कादयानी की तरफ मन्सूब कर के "गुलामी" कहते हैं यह एक दज्जाल है जो उस जमाना में निकला तो पहले उस ने हज़रत ईसा मसीह अला नबियना व अलैहिस्सलात वस्सलाम के जैसा होने का दअवा और खुदा की कसम उस ने सच कहा वह झूटे मसीह दज्जाल के मिस्ल है फिर उसकी हालत ने तरक्की की, तो उसने अपनी तरफ वही का दअवा किया और बेशक वह खुदा की कसम सच्चा है इसलिए कि अल्लाह तआला का फरमान है: **شَاطِطِينَ الْإِنْسِ وَالْجِنِّ يُوحِي بَعْضُهُمْ إِلَىٰ** (सूरतुलअन्आम आयत 112) **بَعْضُ زُخْرُفِ الْقَوْلِ غُرُورًا** आदमियों और जिन्नों में के शैतान कि उनमें एक दूसरे पर खुफिया डालता है बनावट की बात धोके को। (कन्जुलईमान) रहा उसका उस दअवा (अजम) वही को अल्लाह की तरफ करना और अपनी किताब "बराहीने गुलानिया" को कलामुल्लाह अज़ व जल करार देना तो यह भी इन बातों

से है जो इब्लीस ने उस से चुपके से कह दी कि तू मुझ से ले ले और आलाहुलआलामीन की तरफ मन्सूब करदे”

फिर खुल कर उसने नबुव्वत व रिसालत का दअवा किया और कहा : वही है अल्लाह जिस ने अपना रसूल कादियान में भेजा और उसने यह कहा कि अल्लाह ने जो उतारा उस में यह आयत है कि हम ने उसको कादयानी में उतारा और वह हक के साथ नाज़िल हुआ। और यह गुमान किया कि यह वही अहमद है जिस की बशारत मरयम के बेटे ने दी और वही अल्लाह तआला के उस फरमान से मुराद है जिस में अल्लाह ने फरमाया उस रसूल की खुश खबरी देने आया जो मेरे बाद होगा उस का नाम अहमद होगा और उस का गुमान यह है कि अल्लाह तआला ने उस से फरमाया,बेशक तुम इस आयत के मिसदाक हो।
هو الذى ارسل رسوله بالهدى ودين الحق ليظهره على
دين كله (सूरतुल फतह आयत 28)वही है जिस ने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा कि उसे सब दीनों पर गालिब करे। (कन्जुलईमान)फिर अपनी कमीन जात को बहुत सारे अम्बिया व मुरसलीन सलात अल्लाह अलैहिम व सलामहु से अफजल बताने लगा और नबियों रसूलों में कलमतुल्लाह व रुहुल्लाह को खास कर के कहा इब्ने मरयम के जिक्र को छोड़ो। इस से बेहतर गुलाम अहमद है और जब उस से मुवाखिज़ा किया गया कि तो ईसा रसूलुल्लाह अलैहिस्सलात वस्सलाम के जैसे होने का दावा करता है तो कहाँ हैं वह जाहिर निशानियाँ जो ईसा

अलैहिस्सलाम लाये,जैसे मुरदों को जिन्दा करना, मादर जाद आंघे और कोढ़ी को अच्छा कर देना,और मिट्टी से परिन्दा की शक्ल बनाना,फिर उस में फूंक मारते तो वह अल्लाह के हुक्म से उड़ता परिन्दा हो जाता तो,उसने जवाब दिया ईसा यह काम मुसमर यज़म से करते थे(मुसमर यज़म अंग्रेज़ ज़बान में एक किस्म का शोअबदा है तो उस ने कहा और अगर यह न होता कि मैं उन जैसी बातों को नापसन्द करता हूँ तो मैं भी ज़रूरी दिखाता और जब मुस्तकविल में होने वाली गैब की खबरें बहुत बताने का आदी हो और उन पेशान गोइयों में उसका झूट बहुत ज़्यादा जाहिर होता अपने मर्ज की उसने दवा यूँ की कि गैबी खबरों का झूट होना नबुव्वत के मुनाफी नहीं इसलिए कि बे शक यह चार सो नबियों की खबरों में जाहिर हुआ और सब से ज़्यादा जिन की खबरें झूटी हुये ईसा(अलैहिस्सलाम)हैं और बद बख्ती के जीनों में चढ़ते चढ़ते उस दर्जा को पहुँचा कि वाकिअतन हुदैबिया को उन्हें झूटी खबरों में शुमार किया,तो अल्लाह की ज्ञात लोगत हो उस पर कि जिस ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को ईज़ा दी, और अल्लाह की लअनत उस पर हो कि जो अम्बिया में से किसी को ईज़ा दे व सल्लल्लाहु तआला आला अम्बिया व बारिक वसल्लम”(5)

अलहादुलकाफ़ फी अहकामिज़्ज़ुआफ़ :

यह किताब आला हज़रत इमाम अहमद रजा

कादरी, बरेलवी अलैहिर्रहमा वरिजवान के दर्ज जैल तीन रिसालों का अरबी में तर्जमा है। (1) मुनीरुलऐन फी हुक्मे तकबीलुअवहामीन (2) अलहादुलकाफ फी हुक्मिजुआफ (3) मदारिज तबकातुलहदीस। यह तिनों रिसाले फतावा रजविया जिल्द दोम, किताबुस्सलात, बाबुलआजान वलइकामतु में शामिल हो कर छप चुके हैं जो जहाजी साइज के एक सौ छः सफहात को घेरे हुये हैं। उन में पहला रिसाला मुस्तकिल और बाद वाले दोनों जिम्नी रिसाले हैं।

पहले रिसाले में इस्म रिसालत सुन कर उंगूठे चूमने और आँखों से लगाने का जवाज व इस्तिहसान आलिमाना, फकीहाना और मुहदिदसाना अन्दाज में आफताब निसफुन्नहार की तरह वाजह और ऐयों किया गया है। और दूसरे रिसाला में तबकात हदीस के मदारिज को निहायत मुहदिदसाना अन्दाज में बयान किया गया है। इन रिसालों में तीस जलोलुल कदर मुहदिदसाना इफादात और बारा अजीमुलमुरत्ताब आलिमाना फवाइद हैं जिन में हदीस जईफ के अहकाम बड़े शरह व बरत से अद्म्य हदीस की वाजह तसरीहात की रौशनी में बयान किए हैं। यह रिसाला सही मअनों में 'मुनीरुलऐन' आखें रौशन करने वाला है।

हज़रत ताजुशरीआ दाम जिल्लुहुन्नूरानी ने उन रिसालों की अहमियत और इल्मी कदर व कीमत को महसूस करते हुये उन का फसीह अरबी में तर्जमा फरमाया और मौजू का लिहाज करते हुये असल नाम के बजाये तिनों के मजमुए का नाम 'अलहादुलकाफ फी अहकानिज्जुआफ' रखा।

जैल में असल किताब की छः एबारत, फिर हज़रत ताजुशरीआ का अरबी तर्जमा कारईन किराम की खिदमत में बतौर नमूना पेश है ताकि वह खुद तर्जमा मुलाहिजा कर के उस की अहमियत महसूस कर सकें।

नमूना :

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा कादरी बरेलवी अलैहिर्रहमा रिसाला 'मुनीरुऐन' में खुतबा के बाद फरमाते हैं:

हुज़ूर पुरनूर शफीअे यौमुन्नसुर, साहिबे लौलाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का नाम पाक अज़ान में सुन्नते वक्त अंगूठे या अंगुशतान शहादत चुम कर आँखों से लगाना कतअन जाइज है। जिस के जवाज पर मकाम तबअ में दलाइल कसीर काइम और खुद अगर कोई दलील खास न होती तो मनआ पर शरअ से दली न होना ही जवाज के लिए दलील काफी था। जो नाजाइज बताये सुबूत देना उसके जिम्मे है कि काइल जवाज के लिए दलील काफी था। जो नाजाइज बताये सुबूत देना इस के जिम्मे है कि काइल जवाज मुतमरिसक व असल है, और मुतमरिसक व असल मोहताज दलील नहीं। फिर यहाँ तो हदीस व फिक्ह, इरशाद उलमा व अमल कदीम सलफे सुलहा सब कुछ मौजूद। उलमा-ए-मुहद्दीसिन ने उस बाब में हज़रत खलीफा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम सय्यदिना सिद्दीक अकबर व हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम सय्यदिना इमाम हसन व हुसैन व हज़रत नकीये औलिया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला

अलैहि वसल्लम सय्यदिना अबूलअब्बास खिज़्र अलल हबीबुलकरीम व अलैहिम जमीअन अरुसलातु वत्तस्लीम वगैराहुम अकाबिरे दीन से हदीसें रिवायत फरमायें जिस की कदरे तफसील इमाम अल्लामा शमसुद्दीन सखावी रहेमाहुल्लाहु तआला ने किताब मुस्तताब "मकासिद हसन" में जिक्र फरमाई और जामेउरूमूज़ शरह निकाया, मुख्तसुखल वकाया व फतावा सौफिया व कन्जुलऐबाद व रददुमुहतार हाशिया दुरे मुख्तार वगैराह कुतुब फिवह में इस फेअल के इस्तिहबाब व इस्तिहसान की साफ तसरीह आई"। (2)

अतायलकदीर फी हुक्मतस्वीर :

यह रिसाला आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा कादरी कुददिसा सिरुहु का एक शाहकार फतवा है, इस का मौजू है "तस्वीरों के अहकाम" 1331 हिजरी को आप की बारगाह में यह सुवाल पेश हुआ कि किसी दीनी मुअज़्ज़ शख्स की तस्वीर बतौर तब्रुक मकानों में रखना जाइज़ या नहीं? उस के जवाब में आप ने जान्दार चीजों की तस्वीर के हुराम होने पर वह आलिमाना तहकीक पेश फरमाई जो आप की फकीहाना अबकरियत व कमाल का मुंह बोलता सुबूत है।

इस रिसाले में आप ने यह बयान फरमाया है कि जान्दार की मन्मूअ तस्वीरों की कराहत और मन्मूआत की मशइख किराम ने एक तो यह इल्लत बताई है कि इस में एबादत सनम की मुशाबिहत पाई जाती है दूसरी इल्लत यह है कि जहाँ मन्मूअ तस्वीर रखी हो वहाँ मलाइका (फिरिशते)

नहीं जाते, और जिस मकान में फिरिशते न आयें वह हर जगह से बदतर है। तीसरी इल्लत तअज़ीम और तशबीह है।

आगे इमाम अहमद रज़ा कादरी अलैहिर्रमा फरमाते :

"मुअज़्ज़म तहकीक यह है कि तहरीमे तस्वीर की असल इल्लत ताज़ीम है ताज़ीम ही से तशबिह पैदा होता है और ताज़ीम ही से मलाइका रहमत नहीं आते। व लिहाज़ इहानत की सूरतें जाइज़ रखी गई हैं कि फर्श में हो जिस पर बैठें, खड़े हों, पाऊ रखें वगैरा, अगर ऐसी तस्वीरों का भी बनाना बनवाना हुराम है।

और तशबिह की दो किस्म है: एक आम कि मुतलकन तस्वीर मन्मूअ को बरोजा ताज़ीम रखने से हासिल होता है। दूसरा तशबिह ख़ास कर उस के एलावा नफिल नमाज़ में मुसल्ला के किसी फेअल या हैयत से जाहिर हो, मसलन तस्वीर को सामने रख कर उस की तरफ अफआल नमाज़ बजालाना यह अशद व अख़बस है।

तस्वीर की इल्लत कराहियत तशबिह एबारत है चाहे तशबिह ख़ास हो या आम, मगर इतना ज़रूर है कि वह तस्वीर ऐसी हों जिन्हें मुश्रिकीन पुजते हैं और जिन्हें नहीं पुजते तो वह बुत के हुक्म में नहीं।

फिर आला हज़रत ने ऐसी तस्वीरों की चन्द किस्में बयान फरमाई हैं जिन्हें ताज़ीम से रखने या उन की तरफ नमाज़ पढ़ने से तशबिह एबादत व सनम नहीं होता और लिखा है कि सब मुजिबे कराहत नहीं।

यह रिसाला अपने मौजूअ पर निहायत मुदल्लिल और मुहक्किना रिसाला है, यह फतावा रजविया, जिल्द नहुम, निस्फ आखिर में शामिल है जो स.47 से स.62 तक फैला हुआ है इस तरह यह जहाजी साइज के उठठारह सफहात को मुहीत है।

रिसाला की इल्मी अहमियत और जलालत शान के पेश नजर हजरत ताजुशरीआ दाम जिल्लुहुलआली ने रवा अरबी जवान में इस का तर्जमा फरमाया है। तर्जमा का नमूना मअ असल एबारात के जैल में नजर कारेईन है।

नमूना:

अल्लाह अज़्ज व जल्ल ! इब्नीस के मक्र से पनाह दे। दुनिया में बुत परस्ती की इब्तिदायूँ हुई कि सालेहीन की मोहब्बत में उनकी तस्वीरें बना कर घरवालों और मरिजदों में तबरकन रखें और उन से लज्जत एबादत की ताईद समझी। शुदा शुदा वही मअबूद हो गई। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने मुतवातिर हदीसों में फरमाया "ولا صورة" (हम तस्वीर को फिरेश्ते उस घर में नहीं आते जिस में कुत्ता या तस्वीर हो और उस में किसी मुअज़्जम दीनी की तस्वीर होना या न उज्र हो सकता है, न इस बवाल अर्जीम से बचा सकता है, बल्कि मुअज़्जम दीनी की तस्वीर ज्यादा मुजिब बवाल है कि उसकी ताजीम की जायेगी, और तस्वीर जी रूह की ताजीम खासी बुत पुरस्त की सूरत और गोया मिल्लते

इस्लामी से सरीह मुखालिफत है। अभी हदीस सुन चुके कि वह औलिया ही की तस्वीरें रखें थे जिस पर उनको बदतरीन खल्कुल्लाह फरमाया। अम्बिया अलैहिमुस्सलात वस्सलाम से बढ़ कर कौन मुअज़्जम दीन होगा, और नबी भी कौन? हजरत शैखुलअम्बिया खलील किबरिया सय्यदिना इब्राहीम अला इब्निहिलकरीम अफज़लुस्सलात वत्तस्लीम कि हमारे हुजूर अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के बाद तमाम जहान से अफज़ल व आला हैं, उनकी और हजरत सय्यदिना इस्माईल ज़बीहुल्लाह व हजरत बतूल मरयम अलैहिमुस्सलात वस्सलाम की तस्वीरें दीवार काबा पर कुप्रफार ने नक्श की थी, जब मक्का मुअज़्जमा फत्ह हुआ, हुजूर अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अमीरुल मोमिनीन फारुक आजम रदियल्लाहु तआला अन्हु को पहले भेज कर वह सब महये करा दें। जब काबा मुअज़्जमा में तशरीफ फरमा हुये बाज़ के निशान कुछ बाकी पाये, पानी मंगाकर बा नफिस नफीस उन्हें धो दिया और बनाने वालों को "कातलहुमुल्लाह फरमाया (अल्लाह उन्हें कत्ल करे)

शुमुलुलइस्लाम ले उसूलिरूसूलिलकिराम:

इस रिसाला का मौजूअ "सुरुर कौनैन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के आबा किराम और मुहिम्मात मुकर्रमात का इस्लाम व ईमान" है। 21, शवाल 1315 हिजरी को आला हजरत इमाम अहमद रज़ा कादरी कुददुस सिरुहु

की बारगाह में हज़रत मौलाना सय्यद मुहम्मद अब्दुलगफ़ार कादरी मुदर्रिस आला मदरसा जामेउलउलूम जामे मस्जिद बंगलौर की जानिब से यह सवाल आया कि सरवरकाइनात मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के मौवाप हज़रत आदम अलैहिस्सलाम तक मोमिन व मौहिद थे या नहीं ?

इस के जवाब में आप ने यह अज़ीमुशान मुहक्काना रिसाला तहरीर फरमाया और कुरआन व हदीस के दस मुस्तहकम दलाइल और मुतअदिद वजूह से सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के अबवैन करीमैन के ईमान को साबित फरमाया और यह भी लिखा है है पै तीस जलीलुलकद उलमा-ए-किराम व आइम्मा-ए-किबार का यही मजहब मुख्तार है फिर उन सभी के नाम भी जिक्र फरमाये और आखीर में हज़रत आमना रदियल्लाहु तआला अन्हुमा के कुछ अशआर भी नक्ल किए हैं जो उन्होंने वक्त वफात अपने फर्जन्द करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की तरफ नजर कर के कहे थे, उन अशआर से भी उन का इस्लाम व ईमान साबित होता है।

यह रिसाला फतावा रजविया की ग्यारहवीं जिल्द में सफहा नम्बर 154 से सफहा नम्बर 171 तक फला हुआ है। इस तरह यह बड़े साइज़ के उठठारह सफहात को मुहीत है। इस में मजमूई तौर पर इक्तालीस हदीसे मौजूअ के सुबूत में पेश की गई हैं। यह रिसाला निहायत रुह परवर

और ईमान अफरोज़ है और ईमान अबवैन के मौजू पर एक मुन्फरिद शान का हामिल है।

हज़रत ताजुशरीआ अल्लामा अजहरी साहिब दामजिल्लाहुआली ने फसीह व बलीग अरबी में इस का तर्जमा फरमाया है, यह तर्जमा निहायत वकीअ, सलीस और शरता है जो दोनों जुबनों में हज़रत की महारत का रौशन सुबूत है।

असल रिसाला की कुछ एबारत बतौन नमूना हज़रत ताजुशरीआ दाम जिल्लाहु के अरबी तर्जमा के साथ नजरे कारेईन है।

नमूना:

“जब सहीह हदीसों से साबित हुआ कि हर कर्न व तबका रूये जमीन पर (कम अज़ कम) सात मुसलमान बन्दगाने मकबूल जरूर हैं, और खुद सहीह बुखारी शरीफ की हदीस से साबित हुआ कि हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम जिन से पैदा हुये वह लोग हर जमाने, हर कर्न में ख्यार कर्न से थे और आयत कुरानिया नातिक कि कोई मुशिरक अगर्चे कैसा ही शरीफुलकौम, बिन्नसब हो किसी गुलाम मुसलमान से भी खैर व बेहतरीन नहीं हो सकता। तो वाजिब हुआ कि मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के आया अमहात हर कर्न व तबका में उन्हें बन्दगाने सालेह व मकबूल से हों, वरना मआजल्लाह सही बुखारी में इरशादे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि

वसल्लम और कुरआन अजीम में इरशाद हक जल्ल व अला के मुखलिफ होगा"। (6)

फिक्हे शाहिन्शाह व अन्नलकुलूब बेयदिलमहबूब बेअतायलल्लाह

महल्लाह फील खाना, कानपुर से 1326 हिजरी को सय्यद मुहम्मद आसिफ साहिब ने दर्ज जैल अल्फाज में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा कादरी बरेलवी अलैहिर्रहमा वरिज़वान के पास इस्तिफ़ा भेजा:

"हामी-ए-सुन्नत, माही बिदअत, जनाब मौलाना साहिब दामत फीयूजहुम, बाद सलाम मस्नूनुलइस्लाम इल्तिमास बरई कि इन दिनों जनाब वाला का दीवान नअतिया कम तरीन के जेरे मुताला है। बसद आदाब मुलाज़िमान हुज़ूर की खिदमत बा बरकत में मुलतमिस हों कि दो मिसरा के अल्फाज शरअन काविल तरमीम मालूम होते हैं और गालिबन इस हेच मदों की राये से मुलाज़िमान सामी भी मुत्तफिक हों और दर सूरत अदम इत्तिफाक जवाब बा सवाब से तशफ़ी फरमायें। "हाजियों! आओ शाहिन्शाह का रोज़ा देखो"

इस मिसरा में लपज़ "शाहिन्शा" ख़िलाफ़ हदीस मुमानिअत दर बार-ए-कौल "तिलकलमलूक" है बचाये शाहिन्शाहे अगर 'मरे शाह' हो तो किसी कैस्म का नुक्सान नहीं दूसरा यह मिस्रा हज़रत गौसे आजम कुददुस सिरूहु की तारीफ़ में:

"बन्दा मजबूर है, खातिर यह है कब्ज़ा तेरा"

सहीह हदीस शरीफ़ से साबित है कि दिल खुदावन्द

करीम के कब्ज़ा कुदरत में हैं और वह जात मकल्लिबुलकुलूब है। चूंकि इस हेच मदों, सराया इस्थों को मुलाज़िमान जनाब वाला से खास अकीदत व इरादत है। लिहाजा उमीदवार है कि यह तहरीर महज़ "अदिदनुन्नसह" पर महमूल फरमाई जाये। बख़ुदा फिदवी ने किसी और गर्ज़ से नहीं लिखा"

इन दोनों सवालों के जवाब में इमाम अहले सुन्नत सय्यदिना आला हज़रत अलैहिर्रहमा वरिज़वान ने ऐसी तफ़सीली और मुहक्काना बहस फरमाई कि उस ने एक रिसाला की शक्ल इख्तियार कर ली।

पहले मिसरा पर तन्कीद के जवाब में आप ने जो तहकीक़ फरमाई उसका खुलासा यह है।

(1) "शाहिन्शाह" का अगर मअना मजाज़ी मकसूद हो और अज़ राह तकब्बुर इस का इस्तेमाल न हो तो उसका इतलाक़ अल्लाह तआला के बरगुज़ीदा और मुकर्रब बन्दों पर बिला शुबह जाइज़ व दुरुस्त है।

(2) अगर कोई शख्स तकब्बुर के तौर पर से अपने लिए इस्तेमाल करे तो बिला शुबह यह नाजाइज़ व हराम होगा। बल्कि मअना हकीकी इस्तिगराकी की सूरत में कुफ़्र हो जायेगा।

और दूसरे मिसरा पर 'तन्कीद के जवाब में जो तन्कीद पेश की उसका खुलासा यह है कि:

"मकल्लिबुलकुलूब" मअना हकीकी के एअतिबार से अल्लाह अज़ज़ व जल्ल के लिए खास है, लेकिन अल्लाह ने अपने खास बन्दों को भी इस ताक़त व कुव्वत से नवाज़ा है,

इस लिए अताई मान कर उसका इतलाक गैरुल्लाह पर भी हो सकता है, उस में शरअन कोई खराबी नहीं।

यह रिसाला अपने मौजूअ पर निहायत गिराई कदर बेश और मुहक्काना है, इस से आला हज़रत अलैहिर्रहमा बरिज़वान के इल्मी तबहर कुव्वते इस्तिदलाल, हिफज़ व इस्तिहज़ार और आलिमाना ज़रफ़ निगाही और मुहक्काना फ़िक व बसीरत का बा खुबी इज़हार होता है।

इस वक़्त रिसाले का जो नुस्खा मेरे सामने है वह "शहिन्शाह कौन" के नाम से इदारा अफ़कार हक़, वाइसी बाज़ार पुरनिया (बिहार) का मतबूआ है। यह 36×23/16 साइज़ के पचपन सफ़हात पर मुश्तमिल है।

हज़रत ताजुशरीआ दामत बरकातुहु मुलआलिया ने इस रिसाला के मौजूअ और मज़मून की अहमियत व इफ़ादीयत के पेशे नज़र अरबी ज़बान में उस का निहायत शानदार तर्जमा फ़रमाया है। बतौर नमूना ज़ैल में असल एबारत मअ तर्जमा पेशे ख़िदमत है :

नमूना:

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा कादरी कुददुस सिरीहु ग़ैर खुदा पर लफ़ज़ "शहिन्शा" का इत्तलाक व इस्तेमाल मुतअदिद उलमा—ए—किराम, मशाइख़े एज़ाम और अइम्मा एलाम के हवाले से पेश करने के बाद लिखते हैं :

"ग़र्ज़ कलिमात अकाविर में उसके सदहा नज़ाइर मिलेंगे। हमें किया लाइफ़ है कि उन तमाम आइम्मा व फ़ुक़हा व उलमा व उर्फ़ा रहिमाहुम अल्लाह तआला व

कुदरत इसरार हुम पर तअन करें। वह हुम से हर तरह से अरफ़ व आलम थे। लिहाज़ा वाज़िब कि बतौफीक़ इलाही नज़र फ़क्ही से काम लें और इस लफ़ज़ के मना व जवाज़ में तहकीक़ मनात करें, कि मसअला कतअन माकूलुल मअना है न कि महज़ तअबुदी।

फ़अकुल व बिल्लाहित्तौफीक़: जाहिर है कि असल मन्शा से मना इस लफ़ज़ का इस्तिगराक़ हकीकी पर हमल है, यानी मौसूफ़ का इस्तिस्ना तो अक्ली है कि खुद अपने नफ़स पर बादशाह होना माकूल नहीं, उस के सिवा जमीअ मलूक़ पर सुलतनत और यह माना कतअन मुख़तस व हज़रत इज़ज़त अज़ज़ जलालोहु और उस मअना के इरादे से अगर ग़ैर पर इतलाक़ हो तो सराहतन कुफ़्र है कि उस के इस्तिगराक़ हकीकी में रब्व अज़ज़ व जल्ल भी दाख़िल होगा। यानी मआज़ल्लाह मौसूफ़ को इस पर भी सुलतनत है। यह हर कुफ़्र से बदतर है। मगर हाशा ना हर ग़िज़ कोई मुसलमान उस का इरादा कर सकता है न जनहार कलाम मुस्लिम सुन कर किसी का इस तरफ़ ज़हिन जा सकता है, बल्कि कतअन कतअन ओहद या इस्तिगराक़ उर्फ़ी ही मुराद, और वही मफ़हूम व मुस्तफ़ाद होता है कि काइल का इस्ताम ही उस का इरादा पर करीना हातिआ है, जैसा कि उलमा ने मुवहिद के अंबतुरबीउलबक़ल (मौसम रबीअ ने सबज़ा उगाया) कहने में तसरीह फ़रमाई" 8

अहलाकुलवहाबीईन अला तौहीन कुबूरुलमुस्लिमीन :

मौलाना मुहम्मद उमरुददीन कादरी हज़ारवी

अलैहिरहमा के पास यह सवाल आया कि अहले सुन्नत के किसी कदीम कब्रिस्तान की कबरों को खोद कर अपने रहने के लिए मकान बनाना मजहब हन्फी की रुह से जाइज है या नाजाइज ? और ऐसा करने से कबरों में मदफून मुरदों की तौहीन है या नहीं ?

इस के जवाब में मौलाना हजारवी अलैहिरहमा ने फरमाया कि अम्बिया, औलिया और शौहदा की कब्रें ढा कर उन की तौहीन करना फिर्का मुज्दअ बहाबिया का शआर हो चुका है। बहाबिया के पेशवाओं की किताबें ऐसे मजामीन से भरी हुई हैं जिन से उन खासान खुदा की अहानत होती है। तो जब उन महबूबाने बारगाहे इलाही की तौहीन उनके मजहब में रवा है तो आम मोमिनीन की कब्रों को ढाना और उनकी तौहीन करना उनके मकान बनाना, उन्हें ईजादेना और उनकी तौहीन करना हरगिज जाइज नहीं। फिर कसीर कुतुब हदीस व फिक्ह व फतावा से अपने मौकिफ की ताईद में एवारतें पेश की हैं। आप का यह वकीअ फतावा मुतवस्सित साइज के सात सफहात को मुहीत है उस पर मौलाना अब्दुलगफूर, मौलाना मुहम्मद बशीरुद्दीन, मौलाना अब्दुरशीद देहलवी, मौलाना मुहम्मद फजलुलमजीद बदायूनी, मौलाना अब्दुलमुकतदिर बदायूनी, मौलाना मुहम्मद फजले अहमद बदायूनी, मौलाना मुहम्मद हाफिज बख्श मुदर्रिस मदरसा मुहम्मदिया बदायूनी और मौलाना मुहिब अहमद कादरी मुदर्रिस मदरसा शमसिया, जामेअ मस्जिद बदायू की तसदीकात हैं। आखरी तसदीक आला हजरत इमाम अहमद

रजा कादरी बरेलवी अलैहिरहमा की है जो मौलाना मुहम्मद अमरुद्दीन हजारवी अलैहिरहमा की दरख्वास्त पर आपने कलमबन्द फरमाई, इस तसदीक ने एक रिसाला की सूरत इख्तियार कर ली और उसका तारीखी नाम "اهلاك الوهابين" "على نوهين قبور المسلمين" उस से 1322 के आदाद निकलते हैं।

इस रिसाले में दो फसल हैं फसल अब्वल में यह साबित किया गया है कि मुसलमानों की कबरों की ताजीम जरूरी और तौहीन मम्नूअ और नाजाइज है और उस में उन उमूर का भी तफसीली बयान है जिन से असहाब कुबूर को अजीयत पहुंचती है।

और फसल दोम में बहाबियों के बे सरोपा दलीलों पर तन्कीद और उस बात का वाज्हे बयान है कि मुसलमानों के आम कब्रिस्तान में अपना रिहाइश के लिए मकान बनाना तो बहुत दौरे कोई वक्ती मकान बनाना भी नाजाइज व हराम है। फिर उस तस्दीकी रिसाला पर दर्ज जैल उलमा अहले सुन्नत की गिराई कद्र तस्दीकात व ताईदात हैं (1) मौलाना मुहम्मद सुलतान अहमद खाँ (2) मौलाना मुहम्मद अब्दुल्लाहि (3) मौलाना मुहम्मद नईम पशावरी (4) मौलाना सय्यद हैदर शाह कादरी (5) मौलाना मुहम्मद ज़फरुद्दीन रजवी बिहारी अलैहिमुर्हमा वरिजवान।

यह मुहबिकाना रिसाला बड़े साइज के चालीस सफहात पर फैला हुआ है और अपने मौजूअ के तमाम जरूरी गोशों को मुहीत है।

इस रिसाला की अहमियत व इफादियत के पेशे नजर हजरत ताजुशरीआ दाम जिल्लाहु ने उस का अरबी में तर्जमा फरमाया है ताकि उर्दू से ना आशना अरबी दो तबका भी उस से मुस्तफीद हो सके नमूना के तौर तर्जमा मअ असल एवारत के कारीईन की खिदमत में पेश है।

नमूना:

“बात यह है कि वहाबिया की निगाह में कुबूर मुस्लेमीन, बल्कि खास मजारात औलिया किराम अलैहिमुर्हमा वरिजवान ही की कुछ कद्र नहीं, बल्कि हत्तलवसीअ उन की तौहीन चाहते हैं और जिस हीले काबू चले उन्हें नेस्त व नाबूद व पामाल करने की फिक्क में रहते हैं। उन के नजदीन इंसान मरा और पत्थर हुआ, जैसे वह खुद अपनी हयात में हैं कि **هالاً لا يسمع ولا يبصر ولا يغنى عنك شيئاً**। कि शरअ मुत्तहर हैं मजारात औलिया तो मजारात आलिया, आम कुबूर मुस्लिमीन मुस्तहक तकरीम व मुमतनअउलतौहीन यहाँ तक कि उलमा फरमाते हैं : कब्रों पर पाओं रखना गुनाह है कि सकफ कब्र भी हक मेयत है कनीया में इमाम **بأنهم يوطئ القبور لأن سفق الفرح حق الميت**। हत्ता कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम जिन की नअलैन पाक की खाक अगर मुसलमान की कब्र पर पड़जाये तमाम कब्र जन्नत के मुश्क के मुश्क व अंबर से महक उठे। अगर मुसलमान के सीने और मुंह और सर और आँखों पर अपना कदम अकरम रखें उसकी लज्जत व नेअमत व राहत व बरकत में अबदुल आबाद तक सरशार व सरफराज रहे। वह फरमाते हैं : **“لا امشيتي على حمرة أو سيف أحب الي من أن امشيتي على قبر مسلم”**। इस से ज्यादा पसन्द है कि किसी मुसलमान की कब्र पर (चलों)रवाहु इन्ने माजा बसनद जैद अन उकबत बिन आमिर रदियल्लाहु तआला अन्हु।

और वहाबिया को इस की फिक्क है किसी तरह मुसलमानों की कब्रों पर मकान बनें, लोग चलें फिरे, कजाये हाजत करें भंगी अपने दुकरे ले कर चलें।

“अगर ई अस्त पसन्द तो नसीहत बादा”(10)

तयसरुलमाऊन लिस्सुकुन फित्ताऊन :

26/सफ़र 1325 ई को मौलवी मुहम्मद नफीस इब्ने मुहम्मद इदरीस कस्बा निगराम ज़िला लखनऊ की जानिब से नौ सवालात पर मुश्तमिल एक इस्तिफ़ता आला हज़रत इमाम अमदर रजा कादरी बरैलवी कुददुससिरुहु की बारगाह में आया जिस का हासिल यह था कि ताऊन के खौफ़ से किसी बरती से भागना शरअन कैसा है ?

आप ने उसके जवाब में कुरआनी आयात, अहादीस नबविया, शरह हदीस और फिक्ही जुज़ियात की रौशनी में जवाब दिया कि ताऊन से फ़रार गुनाह कवीरा है और फ़रार की तरगीब देने वाले पर फ़रार होने वाले से ज़्यादा सख्त ववाल है। और हदीसों इस मौकूफ़ की ताईद व तौसीक में पेश की गई हैं उन में ताऊन से भागने पर सख्त वईद और सब्र किए ठहरे रहने की तरगीब व ताकीद है।

इस रिसाला का तारीखी नाम “तयसरुलमाऊन लिस्सुकुने फित्ताऊन” है जिस से 1325 के आदाद वर आमद होते हैं। यह रिसाला फ़तावा रज़विया, जिल्द नहुम, निस्फ़ अब्दल में शामिल है और सफ़हा नम्बर 157 से स266 तक बड़े साइज के आठ सफ़हात को मुहीत है।

हज़रत ताजुशशरीआ दाम जिल्लोहुआली ने उसका शान्दार फ़सीह अरबी में तर्जमा फ़रमाया है जो आप की फ़न्नी महारत व कमाल का मुंह बोलता

सुबूत है। बतौर नमूना कुछ एबारत मअ अरबी तर्जमा नज़रें कारेईन है।

नमूना :

जिन हिक्मतों की बिना पर हकीम करीम रऊफुर्रहीम अलैहि व आला आलेहिस्सलात वतारस्लीम ने ताऊन से फ़रार हराम फ़रमाया उन ने एक हिक्मत यह है कि अगर तन दुरुरत भाग जायेंगे वीमार जाइअ रह जायेंगे, उन का न कोई तीमार दार होगा न खबर गिरा। फिर जो मरेंगे उन की तजहीज व तकफ़ीन कौन करेगा? जिस तरह खुद आज कुल महारे शहर और गर्द व नवाह के हुन्द में मशहूर हो रहा है कि औलाद को माँ बाप, माँ बाप को औलाद ने छोड़ कर अपना रास्ता लिया। बड़ों बड़ों की लाशें मज़दूरों ने ठेले पर डाल कर जहन्म पहुँचाये। अगर शरअ मुत्तहर मुसलमानों को भी भागने का हुक्म देती तो मआज़ल्लाह यही है बे बत्ती बे कसी उन के मरीजों मय्यातां को भी धीरती, जिसे शरअ कतअन हराम फ़रमाती है"। (12)

अरबी तर्जमा अज हज़रत तापुशरीआ ग़ददजुल्लाहु "من جملة الحكم التي منع من أجلها الحكيم الكريم، الرؤف الرحيم عليه وعلى آله الصلوة والتسليم عن الفرار من الطاعون أنه لو فر الأصحاء عن المرضي ولا يبقى من يمرضهم ولا من يتعداهم، فمن يقوم بتحجير الموتى و تكفينهم كما

شاع في الوثنيين ببلندنا و نواحيه ان الأولاد والآباء والأهوات اتخذوا سبيلهم، والعمال حملوا جيف أكابرهم على العربيات واصلوهم النار، ولو أن الشرع المهبط أذن المسلمين بالفرار لكان هذا العجز وفقد العون أحدق بالمرضى والموتى منهم الأمر الذي حرمه الشرع قطعاً (١٣)

मराजअ

1. अलमोअतकुदुलमुत्तकद, मअ अलमुस्तनुल मोअतमद अरबी स.223,224 नाशिररजा एकेडमी, मुम्बई 1422 हिजरी 2001 ई.
2. मुनीरुलऐन, मशमूला फतावा रजविया, जि2 स425, रजा एकेडमी मुम्बई 1415 हिजरी 1994 ई.
3. इलहादुलकाफ फी अहकामिज्जुआफ, स18,19
4. अतायलकदीर फी हुक्मे अहकामित्तरवीर, मशमूला फतावा रजविया, जिल्द नहुम निस्फ आखिर, स47,48 नाशिर रजा एकेडमी मुम्बई, 1415 हिजरी 1994 ई.
5. अतायलकदीर फी हुक्मतस्वीर (मुतर्जिम अरबी) स.11-9 अलमजउर्रजबी सौदागिरान मरकजे अहले सुन्नत बरेली शरीफ
6. शुमूलितइस्लाम अलउसूलुरसूलितकिराम, मशमूला फतावा रजविया, जि11 / स.155 मतबूआ रजा एकेडमी मुम्बई।
7. शुमूलुलइस्लाम अलउसूलुरसूलिलकरीम, (मुतर्जिम अरबी) स.13, मशमूला तअलीकात जाहरा लिलशैख ला अजहरी आला सहीहुलबुखारी, मतबूआ, मज्लिसु लबरकात, अलजामिआ अशरफिया, मुबारकपुर, 1428 हिजरी 2007 ई.
8. शहिन्शा: हे कौन? स.17, नाशिर: इदारा अफकार हक, बाइसी बाजार, पुरनिया, विहार 1411 हिजरी / 1990 ई.

9. फिक्र शहिन्शाह व अन्नलकुलूब बेदलमहबूबदिअताअल्लाह
स.10,11 नाशिर अलमजउर्रजवी मरकजे अहले सुन्नतबरेली।
10. इहलाकुलवहाबीईन स.36,37 नाशिर:रजवी कुतुब खाना,
महल्ला बिहारीपुर,वरेली शरीफ,बारपंजुम
11. पहलाकुलवहाबीईन(मुताजिम अरबी)मशमूला तअलीकाल जाहिरा आला सहीहिल
बुखारी जि.1स98मतयूआ मजिस्सुलबयकात अलजामिअ तुल अशरफिया,मुबारकपुर
12. तयस्सिरुलमाऊन,मशमूला फतावा रजबिया,जि.9स.262,
निरफे अव्वल किताबुलखत्र वालइबाह,नाशिर:रजाएकंडमी मुम्बई
13. तयस्सिरुलमाऊन(मुतर्जिम अरबी)मशमूला तअलीकात
जाहिरा आला सहीहिलबुखारी,जि1स.148

मिरातुन्नजदिया के आईने में

शोफिलर डाक्टर मुताम वहावा अन्युम,हंदे मोऊमा कूसे इस्लामिया,अम्बर वृषिबटलीटी,नई देहली

इब्तिदा-ए-आफरीनश ही से हक व बातिल वा हम
दस्त व गरेबी हैं। यह दो ऐसी मुतजाद हकीकतैन हैं जिन
का इत्तिहाद रोजे अजल से आज तक न कभी हुआ है
और न ही मुस्तकबिल में हो सकता है। ठीक इसी तराह
जिस तरह रौशनी और जुलमत,नशीब व फराज धूप और
छाओं,सियाही व सफेदी और झूट और सच कभी वा हम
मुत्तहिद नहीं हो सकते। लेकिन इस वाजेह और रौशन
हकीकत के वा वजूद कुछ सुलह पसन्द और मौका परस्त
हजरात इस हकीकत पर पर्दा डालने की कोशिश में सर
गर्म अमल में और रौशनी को जुल्मत, धूप को छाओं,नशीब
को फराज,सियासी को सफेदी और झूट को सच में जम
करने की नापाक कोशिशें कर रहे हैं उनकी उस कोशिश
वा हम से इत्तिहाद का अमल में आना तो दर किनार
अलबत्ता एक नया तबका जिसे सुलह कुल्ली कहा जाता है
जरूर वजूद में आ गया है। यह सुलह कुल्लियत दर अराल
मुनाफिकत का ही दूसरा नाम है जो समाज के लिए
इन्तिहाई खतरनाक है।

बरेलिवियत और नजदियत का इख्तिलाफ भी उसी
कबील से यह दोनों ऐसी वाजेह और रौशन हकीकतें हैं
जिन में एक की बुनियाद हक और दूसरे की बुनियाद
बातिल पर है। जब हक और बातिल में इत्तिहाद मुम्किन
नहीं तो इन दोनों जमाअतों के नजरियात बाहम क्यों कर

मुत्तहिद हो सकते हैं।

अगर उन के दरमियान इखिलाफ की बुनियादें हक व बातिल पर नहीं होते तो न जाने कब का यह मसअला इल हो गया होता क्यों कि जो लोग बाहम इत्तिहाद की कोशिशें कर रहे हैं उन में कुछ लोग मुखल्लिस भी थे और हैं।

बरेलिवियत और नजदियत के बुनियादी इखिलाफ किया हैं इस सिलसिला में जानीबेन के वह उलमा जिन के अफकार व खियालात मुनाजिराना हैं बहुत कुछ लिख चुके हैं अभी माजी करीब में लफज़ बरेलिवियत और मसलक आला हजरत को ले कर बरेलवियों के दरमियान काफी मुअरफा आराइयाँ हुये, एक ओहद नौ के परवरदा ने माजी के उन तमाम अकाबिर उलमा के खियालात को जिन्होंने मसलक आला हजरत को अपनी जिन्दगी का ओढ़ना दिखोना बनाया उन पर तअन व तशनीअ के खन्जर चलाने और मौजूदा दौर में मसलक आला हजरत के नअरा को गैर अरूरी करार दे कर और इस से यह जहिन देने की कोशिश की कि उस से यह मालूम होता है कि मसलक आला हजरत दीन में कोई एक जुदागाना मसलक है जिस की तशहर अइले सुन्नत व जमाअत के लिए जहरे हिलाहज है उस पर बा जाबता यहस व मुबाहिस् भी हो जब इस सिलसिले में मेरी राय जानने की कोशिश की गई तो मुदीर पैगाम रजा मुम्बई की फरमाइश पर मसलक आला हजरत की ताईद में राकिमुस्सुतूर ने भी दर्ज जैल सुतूर कलम बन्द किए।

“हिन्दुस्तान में मुखतलिफ मजाहिब के मानने वाले रहते हैं और हर मजहब के मानने वालों को अपने मजहब के उसूलों के मुताबिक जिन्दगी गुज़ारने की भरपूर आज्ञा दी है मजहब इस्लाम के पैरों कार मुतअदिद खीमों में बट हुये

हैं सुन्नी और जमाअतें तो अहद सहाबा से ही मौजूद हैं खैरुलकुरुन का दर्द खत्म होते ही इस्लाम को लोगों ने मजीद मुखतलिफ खानों में बांट कर रख दिया है।

रवाफिज़, खवारिज, चकड़ालोवी, कादयानी, और ओहद हाजिर के वहाबी, दैवन्दी और गैर मुकल्लिदीन की तरह बे शुमार फिरकों ने जनम लिया हिन्होंने किसी खारीजी दवाओ या लालच की बुनियाद पर इस्लामी शरीअत को अपनी तबीअत के मुताबिक ढालने की कोशिश की जिस के नतीजे में यह फिके बसाओकात बाहम दस्ते व गिरेबों भी हुये लेकिन असल इस्लाम किया है उस का अमली नमूना सहाबा किराम ने रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से वालिहाना मोहब्बत कर के पेश किया जिस के बादिस जिन्दगी हदीस नबवी **صالحى كالتحريم بايهم اقتديتم اهتديتم** के मुताबिक दुनिया के मुसलमानों के लिए मीनारा-ए-राह हिदायत नबी ताबईन व तबअ ताबईन ने जिस पर सज्जी से अमल किया उसी अकीदा व अमल और फिक व नजरिया की नुमाइन्दगी इस दौर में उलाम-ए-अहल सुन्नत व जमाअत कर रहे हैं। यह इस्लाम मुखतलिफ नशौब व फराज से गुज़रता हुआ हम तक पहुँचा कभी ग़ालीबी क़ितना ने उसकी शकल को मस्ख किया तो कभी रत्नाइयों ने उस का रंग बुंदला किया, कभी कादियानियत ने उसके नबश व निगार को फीका किया तो कभी वहाबियत और गैर मुकल्लदियत ने उसके मुस्लिमा उसूलों के साथ खितदाह किया एक जमाना तो वह आ गया कि नबी का मुदी मानना नहीं बल्कि मिट्टी में मिल जाना, नबी को मजबूर महज़ मानना नबी के इल्म को शैतान के इल्म से कमतर जानना जरूरतियात दीन से समझ गया और इस्लाम के पैरोंकारों को यह बताया गया कि अगर बिलफर्ज बाद जमाना नबवी

सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम भी कोई नबी पैदा हो तो फिर भी खातमियत मुहम्मदी में कोई फर्क न आयेगा और यह भी इस्लामी अक्कीदा बताया गया है कि हुजूर अलैहिस्सलात वस्सलाम के लिए इल्म गैब बिलवासिता कुल होगा या बाज कुल तो अकलन मुहाल है और अगर बाज है ऐसा इल्म हर सबी(बच्चे)मजनून(पागल)है वानात बहाइम (चोपायू) को भी हासिल है उसमें हुजूर अलैहिस्सलात वस्सलाम की किया तखासीस है। नबी रहमत की लिलआलमीन पर भी कैंची चलाई गई और यह कहा गया कि वह आलमीन के लिए नहीं बल्कि मुसलमानों और मुसलमानों में वह लोग जो मुकल्लफ ब इस्लाम हैं सिर्फ उन के लिए रहमत हैं अलगर्ज उन बातिल नजरियात ने उन्नीसवीं सदी में इस्लाम का चेहरा बुरी तरह मसख कर के रख दिया उस सिरात मुस्तकीम पर बद अक्कीदगी की ऐसी दबीज चादर डाल दी गई कि इस्लाम का सही रास्ता किया है लोग तकरीबन भूल गये थे खुदा भला करे इमाम अहले सुन्नत आला हजरत मौलाना अहमद रजा खाँ कादरी का जिन्होंने जहद मुसलसल से इस राहे हक से बदअक्कीदगी की दबीज चादर को न सिर्फ हटाया बल्कि अकाइद व नजरियात की तरदीद और बीख कुनी कर के इस सिराते मुस्तकीम को उम्म मुस्लिमा के इस्तेमाल के काबिल बनाया उनकी उसी मुजाहिदाना कारकुर्दगी की बुनियाद पर उन्हें इमाम अहले सुन्नत और उन के उस कारनामे को उन के लकब की मुनासिदत से "मसलके आला हजरत" से ताबीर किया गया ठीक उसी तरह जिस तरह मौजूदा जमाने में अगर किसी पुरानी गैर इस्तेमाल सडक को कई कौमी लीडर अपने सरकारी फण्ड से साफ सुथरा करा के इस्तेमाल के काबिल बना दे और फिर इस पर

अपने नाम का बोर्ड लगा दे ठीक यही हाल मसलके आला हजरत का है जो दर असल सहाबा किराम, औलिया ऐजाम और उलमा-ए-जविलएहतिराम का मसलक है जिस की तजदीद इमाम अहले सुन्नत मौलाना अहमद रजा कादरी ने की और बाद के लोगों ने इस पर मसलके आला हजरत का बोर्ड लगा दिया। मौजूदा दौर में मसलके आला हजरत ही मसलक अरबाब हक की पहचान है हमें मसलक आला हजरत को उसी तनाजिर में देखने और समझने की जरूरीत है। (1)

इस तअल्लुक से मजीद तफसीलात का यह मकाला मुतहम्मल नहीं इसलिए उसी पर इक्तिफा किया जा रहा है जो लोग मसलक आला हजरत के तअल्लुक से किसी गलत फहमी या साजिश के शिकारत हैं उन्हें ऐसी बयान बाजी सा ऐसी तहरीरों से एहतिराज करना चाहिए जो अरबाबे हक की दिल आजारी का बाइस बनें। बहर हाल इन तफसीलात से कतअे नजर यह जानना जरूरी है कि जब लफज नजदियत का इस्तेमाल इस दौर में किया जाता है तो इस सिलसिले में वहाबियत गैर मुकल्लिदियत और दैवबन्दियत को शामिल मानते हैं और जब लफजे बरेलियत का इस्तेमाल होता है तो इस से मुराद सिर्फ वही सुन्नी होते हैं जो आशिके रसूल, इमाम अहले सुन्नत हजरत मौलाना शाह इमाम अहमद रजा खाँ कादरी अलैहिर्रहमा वरिजवान के मसलक के पैर व कार हैं बाअल्फाज दीगर बरेलवियों को ही "अहले सुन्नत व जमाअत" कहा जाता है दैबन्दी न तो अपने को सुन्नी कहलाना पसन्द करते हैं और न ही उन्हें इस लकब से पुकारा जाता है।

बरेलवियत और नजदियत कहिए या बरेलवियत और दैवन्दियत इन दोनों जमाअतों में जो इख़िलाफ़ की शिददत

एक सदी कबल थी वह अब नहीं है सब कुछ हालात व जमाना के तकाजों के पेंशे तजर हुआ है निस्फ सदी कबल उलमा-ए-हक व वातिल आये दिन मैदान मुनाजिरा में अकट्टे होते हैं और बगैर किसी नतीजे पर पहुँचे अपने अपने घरों को लूट जाते और फिर फतह मुबोन का एक कद आदम पोस्टर हर एक जमाअत की तरफ से दूसरे दिन दीवारों पर आदीजों हो जाया करता था यह सिलसिला सालहा साल चलता रहा अब हालात काफी बदल चुके हैं ऐसा लगता है कि फरीक मुखालिफ ने थक हार के सुपुर्द खाल दिये हैं।

इस्तिदा-ए-इस्लाम के मुसलमानों और उस दौर के मुसलमानों में इस्तिदाद जमाना के बाइस किरदार व अमल में कोई फर्क आ गया है। यह दोनों जमाअतें जो अपने को सदादे आजम कहती हैं उनके इखिलाफात में जो गलत फहमियों का कलीदा किरदार रहा है और ऐसा सिर्फ एक दूसरे से इज्तिनाब और दूरी इख्तियार करने के बाइस हुआ है इस गलत फहमी के सब से ज्यादा शिकार उलमा-ए-वहाबिया और सर बुरहान दियाबना और सिर्फ इसलिए कि उन्होंने ने मसलक अहले सुन्नत के तअल्लुक से इमाम अहले सुन्नत हजरत मौलाना शाह अहमद रजा खों कादरी अलेहिर्रहमा की तसानीफ का बुराहे रास्त मुतालअ नहीं किया या अगर किया है तो इस्मी होनै के बाइस वह किताबें उन बे चारों की समझ में नहीं आई हैं। उलमा-ए-दैबन्द कहीं कहीं गलत फहमियों के शिकार हुये हैं ऐसी कई एक मिसालें हैं यहाँ सिर्फ दो एक मिसालों का जिक्र फाइदा से झाली न होगा।

यह बात अहले हक और साहिबाने फहम व फरासत पर नख्फी नहीं कि उलमा-ए-दैबन्द ने उलमा-ए-अहले

सुन्नत व जमाअत को बरेलवी कह कर बदनाम करने की भर पुर कोशिश की और अवाम में यह तारसुर देने की कोशिश की कि यह इस्लाम में एक ऐसी नई जमाअत है जिस का इस्लाम से (मअजल्लाह) कोई तअल्लुक नहीं उन्होंने अपनी इस बात को भूले भाले अवाम के जहिन व दिमाग में बढाने के लिए न जाने कौसी कौसी मजमूम हरकतें की मगर यह हकीकत है कि आफताब हक व सदाकत पर पदी डाल कर उसकी किरनों को पाबन्द सलासुल नहीं किया जा सकता कुछ ऐसा ही मुआमला यहाँ भी पेश आया। उलमा-ए-अहले सुन्नत इस जुमले से बदनाम किया होते यह जुमला उनके हक में नेक शुगून साबित हुआ और अब बेहम्दिही तअाला यह जुमला (बरेलवी) उलमा हक यानी उलमा-ए-अहले सुन्नत के लिए अलामती निशान के तौर पर इस्तेमाल किया जाने लगा।

लफजे बरेलवियत के तअल्लुक से जब उलमा-ए-दैबन्द की यह मजमूम हरकत नाकाम हुई तो उन्होंने फिर खिसयानी बिल्ली खबा नोचे के बमिस्दाक उलमा-ए-अहले सुन्नत को बिदअती और कब्र परस्त कहना शुरू किया और बाज अपनी निदामत की बात न ला कर जमाअत अहले सुन्नत (बरेलवियों) को कादयानियों की तरह एक गुमराह फीका लिख बैठे बहर हाल आज उलमा-ए-दैबन्द उलमा-ए-अहले सुन्नत को बिदअती कहने में किया हिक्मत है यह बात आज तक मेरी समझ में न आ सकी और वह इस लिए कि उलमा-ए-अहले सुन्नत से कही ज्यादा उलमा-ए-दैबन्द गिरफतार हैं। इस वकत मेरा मौजू यह नहीं बरना मेरे पास इन बिदअत की एक तवील फ़िहारेस्त है जिन की ईजाद का सेहरा खुद उलमा-ए-दैबन्द के सर बन्धता है मौका अगर ये इस का नहीं है लेकिन मौजू की

मुनासिबत से उलमा-ए-दैबन्द की ईजाम कदा कुछ बिदआत की तरफ एक हलका सा इशारा अपनी किताब तजकरा शैर बेशा-ए-अहले सुन्नत हजरत मौलाना मुहम्मद हशमत अली अलैहिर्रहमा वरिजवान के एक मुकदमा से— कर के गुजर जाना चाहता हूँ जिसे अल्लामा अरशदुल कादरी ने कत्म बन्द किया है ताकि इलजाम बगैर सन्द न रहे।

1- दफअ बला और कज़ा-ए-हाजत के नाम पर मदरसा की माली मनफअत के लिए खत्मे बुखारी का मुजिद कोई और नहीं बल्कि खुद दैबन्द का दारुलउलूम है।

2- नमाजे जनाजा के लिए इन्तजामी मसलिहत की बुनियाद पर नहीं बल्कि गलत एअतिकाद की बुनियाद पर इहाता दारुलउलूम में एक जगह मखसूस करने की बिदअत का मौजिद कोई और नहीं बल्कि खुद दैबन्द का दारुलउलूम है।

3- मुस्लिम मैयत के कफन के लिए खुदर की शत लगाना और खुदर के बगैर नमाज जनाजा पढ़ने और पढ़ाने से इन्कार कर देने की बिदअत का मौजिद भी कोई और नहीं बल्कि खुद शैख दैबन्द मौलवी हुसैन अहमद हैं।

4- वरासत अभिया की सनद तकसीम करने के लिए एहतिमाम व तदाई के साथ सद साला इजलास मुन्अकिद करने और एक ना महरम व मुशरिक औरत को (मजहबी)स्टेज पर बुलाकर उसे कुर्सी पर बठाने और अपने मजहबी अकाबिर को उसके कदमों में जगह देने की बिदअत सख्ख्या का मुजिद भी कोई और नहीं बल्कि खुद दैबन्द का दारुलउलूम है।

5- दीनी दर्स गाह के इहाते में मुशरिकाना अल्फाज पर मुस्तमिल कौमी तराने के लिए "कियाम तअजीमी" की बिदअत सख्ख्या का मुजिद भी कोई और नहीं बल्कि खुद दैबन्द का

दारुलउलूम है।

6- कांग्रेसी उमीदवार का कामयाब बनाने के लिए इन्तिहाई जिद व जहद को मजहबी फरीजा समझने की बिदअत का मुजिद भी कोई और नहीं बल्कि खुद शैख दारुलउलूम दैबन्द हैं।

7- अपने अकाबिर की मौत पर एहतिमाम व तदाई के साथ जलसा तअजियत मुन्अकिद करने और जलालत व अबातील पर मुस्तमिल मन्जूम मरसिया पढ़ने और पढ़ाने की बिदअत का मुजिद भी कोई और नहीं बल्कि खुद दारुलउलूम दैबन्द हैं।

8- बिलइस्तिजाम किसी मुतअय्यन नमाज के बाद नमाजियों को रोक कर उनके सामने तब्लीगी निसाब की तिलावत करने की बिदअत का मुजिद भी कोई और नहीं बल्कि खुद उलमा-ए-दैबन्द हैं।

9- कलिमा व तब्लीगी के नाम पर चिल्ला और गश्त करने और कराने की बिदअत का मुजिद भी कोई और नहीं बल्कि खुद उलमा-ए-दैबन्द हैं।

10- दारुलउलूम दैबन्द में सद्र जमहूरिया की आमद के मौके पर कौमी तराने के एहतिराम में खड़े होने का हुक्म सादिर करने वाले भी अकाबिरे दैबन्द हैं जो इस वक्त स्टेज पर मौजूद थे।

यह और उसी तरह के बे शुमार बिदआत व मुन्किरात हैं जिन की ईजाद का सेहरा उलमा-ए-दैबन्द के सर है लेकिन उसके बाजूद लोग इमाम अहले सुन्नत मौलाना शाह अहमद रजा और उन के मुतबईन को बिदअती कहते हुये नहीं थकते, उन्हें चाहिए कि वह अपने गिरेबान में मुंह डाल कर सोचे फिर अपने बारे में फैसला करें कि उन पर किया शरई हुक्म लगना चाहिए।

उलमा-ए-दैबन्द और बहाबी उलमा दोनों बड़े शुद्ध व मद के साथ एक दूसरा अलफाज जो सुन्नी उलमा व अवाम दोनों के लिए इस्तेमाल करते हैं वह कब्र परस्त है। उलटे चौर कोतवाल को डांटने का मुहाविरा पूरी तरह उलमा-ए-दैबन्द पर सादिक आता है और इसलिए कि कब्र परस्ती के मुजिद और मुरक्कब दोनों ही उलमा-ए-दैबन्द हैं। ख्वाजा हसन निजामी की शख्सियत से तकरीबन हर वह शख्स वाकिफ है जिसे उर्दू अदब से अदना भी तअल्लुक दुनिया-ए-अदब में मसत्वर फितरत से शोहरत हासिल हुई बड़ी खुबियों के मालिक थे अगर्चे उनकी गिलादत देहली में हुई लेकिन मजहबी तालीम के हुसूल के लिए उलमा-ए-दैबन्द की सर परस्ती हासिल की और कांघला जा कर मौलवी मुहम्मद इस्माईल कांघलवी, मौलवी मियाँ यहया कांघलवी के सामने जानवे तिलमिज तह किया गंगोह का भी आप ने तालीमी सफर किया और वहाँ डेढ़ साल मसरूफियत तालीम रहे।

जाहिर है कि जिस की तालीम व तरबियत उलमा-ए-दैबन्द के जेरे साया हुई हो जब वहाँ से फारिगुत्तहसील हो कर मैदान अमल में आयेगा तो बिला शुबह नहीं खतूत पर वह काम करेगा जिन खुतूत पर उन की तरबियत हुई होगी। यही सब कुछ ख्वाजा हसन निजामी के साथ हुआ लेकिन चुंकि वह एक मुअज्जज खानकाह जहाँ हिन्दु व मुस्लिम सब जबीन अक्रीदत खम करते हैं सज्जादा नशी थे और खानकाहे आम तौर पर उलमा-ए-अहले सुन्नत की मीरास समझी जाती है इसलिए ख्वाजा हसन निजामी को भी अहले सुन्नत का एक अर्द समझा गया और वह सिर्फ इसलिए कि उन का तअल्लुक एक ऐसी खानकाह से था जो तकरीबन ऐसे

लोगों के कब्जा में है जो किसी मसलक के पीर नहीं उनका अपना एक जुदागाना मसलकी नुकता-ए-नजर है लेकिन ख्वाजा हसन निजामी की तालीम व तरबियत जुंकि उलमा-ए-दैबन्द में हुई इसलिए अफकार व नजरियात की गहरी छाप लाजमी थी। मसन्द सज्जागी को रौनक बरखाने ही उन्होंने मुख्तलिफ मैदानों में जिस तरह अपनी सलाहियतों और अफकार व नजरियात का मुजाहिरा किया उसे बयान करते हुये बदन के रंगुटे कांप उठते हैं उसकी तफसील किसी और मौका के लिए उठाकर रखता हूँ उनकी उसी फिक्री जौलीदगी का एक शाहकार कब्र परस्ती के तअल्लुक से मुरशिद को सज्जादा तअजीमी के जवाज और उसके लिए ठोस दलाइल की फराहमी भी है जब उन्होंने मुरशिद को सजदा-ए-ताजीमी के नाम से किताब लिख कर कश्मिस्तान को जाइज करार दे दिया उलमा-ए-हक के दरमियान इन्तिशार हुआ किसी तरह ख्वाजा हसन निजामी की वह तस्नीफ "मुरशिद को सजदा-ए-ताजीमी" इमाम अहले सुन्नत हजरत मौलाना अहमद रज़ा ख़ाँ कादरी अलैहिर्रहमा वरिज़वान तक पहुँची तो इस किताब के मुतालअ के बाद आप ने सिर्फ इजहार नाराजगी ही नहीं फरमाया बलिक सजदा-ए-ताजीमी की हुरमत "الزبدة الزكية لتحريم سجود التحية" के नाम से डाई सो सफहात पर मुश्तमिल एक मबसूत किताब लिख डाली और उसकी तरदीद में कुरआन व अहादीस और अकवाल-ए-आइम्मा की रौशनी में कब्र परस्ती की हुरमत पर सैकड़ों दलाइल व बराहीन के अबार लगा दिए।

यह इन्तिहाई तअज्जुब और हैरत का मकाम है कि जिस मसलक के पेशवा ने कब्र परस्ती की हुरमत में सैकड़ों सफहात तहरीर कर डाले हों आज उसे और उस के

मुत्तबईन को उलमा-ए-दैबन्द जो खुद कब्रपरस्ती के मुजिद हैं कब्रपरस्ती कहते हुये नहीं थकते। यह बे चारे इतने ना समझ होते हैं कि जो चाहते हैं बक देते हैं हकीकत हाल का उन्हें इल्म नहीं होता और न यह बेचारे उसे जानने की कोशिश करते हैं अगर यह नाम निहाद उलमा इमाम अहले सुन्नत मौलाना शाह अहमद रजा खॉं कादरी की किताबों का मुतालअ हक्कानियत व सदाकत की ऐनक लगा कर किए होते तो शायद उन गलत फहमियों के शिकार न होते।

कब्रपरस्ती के तअल्लुक से तवील मकाला बउनवान इमाम अहमद रजा और ख्वाजा हसन निजामी नजरिया सजदा ताजीमी का तकाबुली मुतालअ माहनामा जहान रजा लाहौर जिल्द 3 शुमारा 34 माह जिहिज्जा 1414 हिजरी जून 1994 ई में शाइअ हुआ तफसीली मालूमात के लिए इस का मुतालअ मुफीद होगा। यह मकाला और उसी तरह के दूसरे मकालात का मजमूआ इमाम अहमद रजा के अफकार व नजरियात एक तकाबुली मुतालअ के उनवान से जल्दी ही किताबी शक्ल में मन्ज़र आम पर आने वाला है।

उलमा-ए-दैबन्द की फिक्री जोलीदगी की एक बदतरिन मिसाल बरेलवियों को कादयानियों के मुशाबा करार देना है आज से तकरीबन 12 साल कब्ल मुजल्ला राबता आलम इस्लामी के शुमारा फरवरी मार्च 1985 ई में एक सीया नज़र से गुज़रा जिस में मुदीर राबता आलम इस्लामी ने बरेलियों को कादयानियों की तरह एक फिक्री करार दिया था। राकिम ने जब उसकी इत्तिलाअ मरकज़ से शाय होने वाला माहनामा सुन्नी दुनिया के मुदीर को दी तो उस वक़्त अब्दुन्नईम अज़ीजी ने दिसम्बर 1985 के शुमारा में एक ज़बर दस्त इदारीया उसकी तरदीद में

लिखा।

“राबता आलम इस्लामी” वहाबिया दियाबना का मुश्तरिका मज़हबी तर्जुमान है जो हर माह पा बन्दी से मक्का मुकर्रमा से शाय होता है। इस मज़हबी तर्जुमान में उस किस्म की ला यानी बातों के छुपने की मुहरिक गालिबन एहसान इलाही ज़हीर की किताब “अलबरेलिया” है जो उस किस्म के हफवात व अबातील का पुलिन्दा है। बहर हाल इस नुमाइन्दा तर्जुमान में यह बात शाय हुई इस इशाअत के पीछे किसी हिन्दुस्तानी आलम ऐजेन्ट की साजिश कार फरमा है उस से हमें सरोकार नहीं लेकिन अगर हम इस की तह में जायें और इस मसअला पर सन्जीदगी से गौर करें तो आप यह बावर किए बगैर न रह सकेंगे कि कादयानियत का दरवाज़ा दर असल उलमा-ए-दैबन्द के सरखील दारुलउलूम दैबन्द के खुद साख्ता बानी मौलवी मुहम्मद कासिम नानौतवी का खुला हुआ है उन्होंने अपनी माया नाज़ तरनीफ़ तहज़िरुन्नास में खातिमुन्नबीईन की ऐसी तशरीह फरमाई जिस से कादयानियों को एलान नबुव्वत का मौका मिल गया और मौसूफ़ की जिस एबारत को उन्होंने बतौर ढाल इस्तेमाल किया वह उनकी किताब तहज़िरुन्नास नाशिर कुतुब खाना इम्दादिया दैबन्द बा एहतिमाम मुहम्मद अली मालिक कुतुब मतबअ बरकी प्रेस दहली के स 24 पर इस तरह दर्ज है।

“अगर बिलफ़र्ज बाद ज़माना नबवी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम भी कोई नबी पैदा हुआ तो फिर भी खातमियत मुहम्मदी में कुछ फर्क न आयेगा चे जायेकि आप के मुआसिर किसी और जमीन में या फ़र्ज किजीए उसी जमीन में कोई और नबी तजवीज किया जाये। (4) कुरआन हकीम के किसी लफ़्ज़ से न इशारत न

किनायतन और न सराहतन यह मालूम होता है कि अभी और कोई नबी आने वाला है कई जगह वाजेह लफ्जों में यह बयान मिलता है कि हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम सारे आलम के लिए कियामत तक के नबी हैं अब किसी नबी की जरूरत नहीं इस वाजेह एलान में कही किसी किस्म की तहरीफ की गुन्जाइश के सिवा यही ले दे कर माना खातिमुन्नीबीईन बच रहा फिर यह बात समझ में आ गई कि उस के माना की ऐसी ताबीर व तशरीह की जाये कि दूसरे नबी की गुन्जाइश निकल आये। चुनांचे यह कारे खैर अंगरेजों या खुदा जाने किस की साजिश की बुनियाद पर मौलवी मुहम्मद कासिम नानोतवी ने अन्जाम दिया उन की उस तशरीह से कादियानियों में मसररत की लहर दौड़ गई एक कादयानी मुस्निफ अबूलअताया जालंधरी अपनी किताब इफादात कास्मिया में लिखता है।

“य महसूस होता चौदवी के सर पर आने वाला मुजदिद नहदी और मसीह मौजूद भी था और उसके उम्मीती को नयुक्ता के मकाम से सर फराज किया जाने वाला था वसल्लम तआला ने अपनी मस्जिहत कास से हजरत मौलवी मुहम्मद कासिम साहिब नानोतवी को खातिमियत मुहम्मदिया के असल मफहूम की वजाहत के लिए रहनुमाई फरमाई और आप ने अपनी किताबों और अपने बयानात में आं हजरत सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के खातिमुन्नीबीईन होने की निहायत दिलकश तशरीह फरमाई।

बहर हाल यह तशरीह चूंकि कादयानियों की हस्दे जरूरत थी इसलिए उन्होंने इस मौके को गनीमत समझा और 1891ई में मसीह मौजूद होने का दअवा पेश कर दिया

मौलाना अबूलहसन अली नदवी ने सीरतुलमहदी हिस्सा दौम के हवाले से लिखा है।

“मिरजा गुलाम अहमद साहब ने 1891 ई में मसीह मौजूद होने का दअवा किया फिर 1901ई में नबुव्वत का दअवा किया”

आज जो हिन्दुस्तान में जुलमा-ए-दैवन्द तहरीक खत्मे नबुव्वत या कादयानियत के खिलाफ जलसे कर रहे हैं यह उसी दाग को धोने और अपने उसी संगीन जुर्म को छुपाने की नाकाम कोशिश है जो उन के अकाबिरीन कर गये हैं।

तेशहवी सदी के अवाइल में जब शाह इस्माईल देहलवी (1246 हिजरी) ने अंग्रेजों की साजिश से जनाब रिसालत मा अब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के तथल्लुक से इम्कान नजीर की बहस छेड़ कर उम्मत मुहम्मदिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को यह तासिर देने की कोशिश की।

“इस शहिन्शा (खुलइज्जत) की यह शान है कि एक आन में एक हुक्म कुन से चाहे तो कड़ों नबी वली और जिन फिरिशा जिब्राईल और मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के बराबर पैदा कर डालें”

शाह साहिब की इस फिक्र से जिस तरह इहानत मुतरशह थी उस का दन्दान शिकन जवाब बतले हरीत मुजाहिद आजादी अल्लामा फज़ले हक खोराबादी ने किताब ‘इस्तेनाए नजीर’ लिख कर दिया और अवली व नवली दलाइल से अपने मुक्कफ को मरबूत कर के फरमाया कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का मिस्ल व नजीर मुस्तनअ बिज्जात हो और जो मुस्तनअ बिज्जात है वह तेहत कुदरत दाखिल नहीं। इमिनाए नजीर

के नाम से अल्लामा फजले हक खैराबादी की किताब 1908 ई में खलीफा आला हजरत अहमद रजा खॉ कादरी हजरत मौलाना सुलैमान अशरफ अली गढ़ के तहशिया और तस्हीह के बाद जौनपुर से शाय हुई कुछ दिनों बाद इम्कान नजीर और इम्तनाअ नजीर से मुतअल्लिक बहसें वहीं रुक गये मरग बरसों बाद फिर मौलवी मुहम्मद कासिम नानोतवी को बैठे बठाये न जाने किया सोझी फिर वह इस बहस को खातिमुन्नीवीईन के पस मन्जर में छेड़ बैठे इस बहस से मौसूफ को किया और कितना फाइदा हुआ यह तो सेगा-ए- राज में है अलबत्ता इतना जरूर मालूम है कि उनकी उस फिक्र से एक गुमराह जमाअत जरूर वजूद में आ गई जिसे हम कादयानियत कहते हैं। लिहाजा अगर कादयानियत के मुहरिक अद्वल की हैसियत से "तहजीरुन्नास" किताब के मुसन्निफ मौलवी मुहम्मद कासिम नानौनी का नाम लिया जाये तो बेजा ना होगा। कादयानियत चुंकि इस वक़्त मौजूअ बहस नहीं इसलिये उस की तफसील में जाने से गुरेज कर रहा हूँ। अब आइये उन उलमा की खिदमत में हाजरी दीजिए जिन्हें उलमा-ए-दैबन्द कादयानियों की तरह एक गुमराह फिक्रा करार देते हैं इस जमाअत के सरखैल इमाम अहले सुन्नत हजरत मौलाना अहमद रजा खॉ कादरी कुददुस सिर्रहु हैं उन के नोके कल्म से एक मोहतात रिवायत के मुताबिक पचासों उलूम व फनून पर मुश्तमिल छोटी बड़ी हजारों किताबें मन्सा-ए-शहूद पर आये अगर इन्साफ और हक पसन्दी की ऐनक लगा कर उन किताबों का मुताला किया जाये तो शायद ही किसी किताब में कोई ऐसी एबारत दस्तयाब हो सकेगी जिस से कादयानियों के गुमराह अकाइद की ताईद होती हो इस गुमराह और बातिल फिक्रा

की ताईद और हयायत में कोई एबारत मिलनी तो दरकिनार कोई लफ्ज और जुमला भी नहीं मिल सकता है हॉ अलबत्ता उन्होंने इस बातिल फिक्रा की तरदीद में दर्ज किताबें जरूर लिखी हैं जो बिहम्दिही तआला मौजूद हैं। और मुतअदिद बार छप चुकी हैं। अब अगर यह कम इल्म दैबन्दी बेघारे उन किताबों का मुताला न करें और फिर इस मजहब हक के बारे में जौ चाहें बातिल ख्याल गढ़ लें तो उसका किया एलाज है? कादयानियत की तरदीद में इमाम अहले सुन्नत मौलाना अहमद रजा कादरी की तस्नीएात दर्ज जैल हैं जो किसी भी सुन्नी "मकतबा" से हासिल की जा सकती हैं।

१- السوء والعقاب على مسيح الكذاب

२- قهر الديان على مرتد بقاديان

३- الصارم الرباني على اسراف القادياني

४- جزاء الله عدوه بآياته ختم النبوة

५- الحراز الدياني

इस खुली हकीकत के बावजूद अगर कोई कहे बरेलवियत कादयानियत की तरह एक फिक्रा है तो इस की अंवल पर सिवाये मातम करने के और किया कहा जा सकता है। उसी को कहा जाता है कि "उलटे चौर कोतवाल को डालने"।

नज्दियों और दैबन्तियों के अकाइद उसी किरम की हफवात व अबातील पर मुश्तमिल हैं "मुश्ते नमूना अज खरवारे" के तौर पर सतूर बाला में सिर्फ तीन मिसालों का जिक्र हुआ है। उलमा-ए-दैबन्द की इलजाम तराशियों और बुहतान तराजियों की तरदीद में उलमा-ए-अहल सुन्नत के नोक कल्म से सैकड़ों किताबें मुतअदिद जवानों में

मनसा-ए-शहूद पर आयें, जेरे नजर किताब "मिरातुन्नज्दिया" उसी किस्म की एक तस्नीफ है इस किताब की अहमियत इस लिए है कि यह किताब अरबी ज़बान में है और आज के मरजअ-ए-उलमा-ए-अहले सुन्नत, हजरत ताजुशरीआ काजीयुलकूज़ात, फकीहे-ए-इस्लाम अल्लामा अखतर रजा खॉ अजहरी के सालेह अफकार, पाकीजा खियालात और मौमनाना नजरियात की रौशन शाहकार है।

इस किताब पर चूंकि मुसन्निफ का असल नाम "अल्लामा इस्माईल अलअजहरी" शाय हुआ है इसलिए जहिन इस तरफ जल्दो मुतबादिर नहीं होता कि यह आप की तस्नीफ है क्योंकि आप के उर्फ़ी नाम को इस कदर शोहरत और मकबूलियत हासिल हुई कि लोग आप का असल नाम भूल गये। आप के वालिद माजिद का नाम इस्मे गिरामी चूंकि "इब्राहीम" था इसलिए आप का नाम इस्माईल से ज्यादा और कोई मौजों हो भी नहीं सकता था।

किताब मिरातुन्नज्दिया 25/रबीउस्सानी 1410 हिजरी 25/नोम्बर 1989ई. में तबअ हुई है अरबी ज़बान में मतबअ का जिक्र नहीं अलबत्ता इसकी पहली तबाअत दारुलइफता अलमरकज़िया महल्ला सौदागिरों बरेली शरीफ ग़ुपी के जेरे एहतिमाम अमल में आई है।

आगाज़े किताब में मुसन्निफ ने कादयानियत से मुतअल्लिक अपने ऊपर लगाये गये इलजामात की तरदीद की है फिर उस तअल्लुक से अपने मौकिफ का इजहार किया है और दलाइल व बराहीन से यह साबित किया है कि बरेलवियत, कादयानियत की तरह एक गुमराह फ़िर्का नहीं बल्कि खुद दैवबन्दियत कादयानियत की तरह गुमराह जमाअत है और इसलिए कि, "मौलवी मुहम्मद कासिम नानोतवी ने "तहज़ीरुन्नास" में ख़ातिमुन्नबईन की ऐसी

तशरीह फरमाई है जिस ने कादयानियों के रसूल की खातमियत को महफूज़ रखते हुये उन के बानी मिर्जा गुलाम अहमद कादयानी को एलाने नबुव्वत का मौका फ़राहम किया और सुवूत के तौर पर यह लिखा है कि मिर्जा गुलाम कादिरबैग जो मौलाना अहमद रजा खॉ के उस्ताद थे वह मिर्जा गुलाम अहमद कादयानी के हुकीकी भाई थे" हालांकि इन दोनों के दरमियान दूर का भी तअल्लुक नहीं था मिर्जा गुलाम कादिरबैग बरेली के रहने वाले थे आज भी उनका खान्दान बरेली में मौजूद है। इसी खान्वादा के एक चशम व चिराग मिर्जा अब्दुलवहीद बैग (एडुकेट) थे। जिनका चन्द साल पेशतर इन्तिकाल हो गया उन से राकिमुस्सुतूर के इल्मी मरासिम थे कई बार उन के घर भी जाने का इत्तिफाक हुआ है मुसन्निफ ने इस इलजाम की तरदीद में लिखा है।

"قد كذب هذا الواشي فيما ادعى من ان غلام قادر بيك وبين غلام

احمد قادياني قرابة فضلا ان يكون هذا شقيق ذلك"

और जहाँ तक रही बात कादयानियों का अपने अकाइद व अफकार को इजहार करने का मौका फ़राहम करने की तो इस सिलसिले में मुसन्निफ किताब ने दलाइल व बराहीन की एक तवील फ़िहरिस्त पेश की है इस के बाद लिखा है।

"انه (امام الديوبندية المولوى محمد قاسم النانوتوى) هو

الذى مهد للقادياني المتنبي سبيله"

मसअला कादयानियत के एलावा नजर व नियाज़, करावत -ए-औलिया इस्तिअमत, तसखुर, हैयात बाद मुम्ताज़ और तससफात औलिया से मुतअल्लिक उलमा-ए-दैवबन्द के मुफ़सिद नजरियात और बातिल अफकार त खियालात को बयान कर के कुरआन व अहादीस और

अकवाल अइम्मा की रौशनी में उनकी तरदीद की है। और फिर अपने मौकफ की ताईद में किताब व सुन्नत से मुस्तहकम दलाइल पेश किए हैं।

चुंकि इस किस्म के मुबाहिस् से मुतअल्लिक उलमा-ए-अहले सुन्नत के पलैट फार्म से मुनाजिरा के मौजू से दिलचस्पी रखने वालों के रुशहात कल्म से कई एक किताबें मनस-ए-शुहूद पर आ चुकी हैं उन मुबाहिस् की तफसीली बहसे से यहा गुरेज किया जा रहा है, अलबत्ता एक मौजू पर मरातुन्नज्दिया में तफसीली बहस है और वह है सुन्नी और दैवबन्दी इख्तिलाफ के अस्बाब वजूह का मुसलमाना जाइजा, इस मौजू पर मुसन्निफ किताब ने कई सफहात में मुदल्लिल तफसीली गुप्तगु की है और उस की इब्तिदा-ए-तमाम इन्साफ पसन्द मुसन्निफीन की तरह शैख मुहम्मद इब्ने अब्दुलवहाब नजदी के गैर इस्लामी रविया से की है और लिखा है कि हिन्दुस्तान में यह मजहबी इख्तिलाफ अंग्रेजों की मुनज्जम साजिश के नतीजे में रून्मा हुआ है अंग्रेज चुंकि हिन्दुस्तान की सियासी, मुआशी, समाजी, और मजहबी बुनियादों को मुतजलजल करना चाहते थे इसलिए अगर एक तरफ उन्होंने इस मुल्क में सियासी चालें चल कर मुल्क के अन्दरूनी निजाम को दिरहम बरहम किया तो दूसरी तरफ वह उलमा जो किसी ज़माना में उनकी हुकूमत में वजीफा खीर थे उन को एअतिमाद में ले कर मजहब के तअल्लुक से ऐसी नफरत की लहर फ़ैलाई जिस वी पैलट में हिन्दुस्तानी उलमा के एलावा अवाम भी आ गये एक दूसरे के तैस यह मजहबी मुनाफिरत रोज़ अफ़जु बढ़ती रही जिस के नतीजे में अकीदा और एलाका की बुनियाद पर कई एक मजहबी, तन्जीम और जमाअतें वजूद में आ गये। वहाबियत

दैवबन्दियत, कादयानियत, नेचरियत और सुलह कुत्बियत वगैरा उसी दौर की पैदावार हैं।

वहाबियत की बुनियाद कि उसूलों पर रखी गई इस की वज़ाहत के लिए कई सफहात दरकार हैं मगर इस का एक वाजेह उसूल यह था कि मुसलमानों में से जो भी बसर व चशम उन के अकीदा को कबूल नहीं कर लेता था उनका माल व मताअ शैख मुहम्मद इब्ने अब्दुलवहाब के लिए हलाल होता उस्ताज़ जाफर सुहानी अपनी किताब "आईन वहाबियत" के स23 पर रकम ताराज़ हैं।

"शैख मुहम्मद अपने अकाइद को तरलीम न करने वाले मुसलमानों पर न सिर्फ़ हमला कर के उन के माल व मताअ माल को लूटना जाइज़ ख्याल करता था बल्कि वह उन मुसलमानों से हासिल कर्दा माल व मताअ माल गनीमत से ताबीर करता था और उस माल गनीमत को इस्तेमाल करने का मुकम्मल इख्तियार सिर्फ़ शैख ही को हासिल था। (10)

जाहिर है कि शैख नज्द ने मुसलमानों के सामने तौहीद की जो तौजिह पेश की थी चुंकि वह मर गदत थी इस में उन के हवा व होस का अमल दखल ज़्यादा था। इस लिए आम मुसलमानों के नजदीक उसका काबिले कबूल होना मुम्किन न था इसी वजह से उन्हें जंगी काफिर करार दे कर उन की जान लेना और उन का माल लूटना हलाल व मुबाह समझा गया और शर व फ़साद के नतीजे में कौम का जमाअतों में बट जाना और ढड़ा बन्दी इख्तियार कर लेना लाजमी अम्र था अगरचें इस किस्म की शुरूआत शैख नज्द ने कर दी थी लेकिन हिन्दुस्तान में शैख नज्दी की इस फ़िक्क को परवान चढ़ाने के लिए अंग्रेजों ख़ान्दान वलियुल्लाह के एक चशम व चिराग मौलवी मुहम्मद इस्माइल देहलवी का सहारा लिया इस फ़िक्क के फ़रोग के

सिलसिले में शाह इस्माईल के इन्तिखाब में हिकमत यह थी कि मौसूफ़ का तअल्लुक एक इल्मी खानवादे से था अंग्रेज यह समझते थे कि जो बात उनकी जवान से कहलवाई जायेगी कौम इस पर आमन्ना सदकना जरूर कहेंगी लेकिन तारीखा ही रही है कि अहले हक कभी बातिल के सामने सरनिगों नहीं हुये हैं जैसे ही उन्होंने ने रसूल अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की अजमत को कम करने के लिए इमकान नजीर का तसव्वुर पेश किया तो उनके ही हमदर्द साथी अल्लामा फजले हक खैराबादी ने "इम्तेनाअ नजीर" किताब लिख कर उनका सहारा खान्दानी इल्मी तनुना खाक में मिला दिया और बेबाग दहल इमाम अहले सुन्नत मौलाना अहमद रजा खान कादरी की जवान में यह फरया दिया।

तेरे खुल्क को इक ने अजीम कहा
तेरी खुल्क को इक ने जमील कहा
कोई तुझ सा हुआ है न होगा शहा तरे
खालिके हुन अदा की कस्म

इस सिलसिले में थोड़ी सी गुप्तगु सुतूर वाला में गुजर चुकी है तफसीली मालूमात के लिए राकिमुस्सुतूर का मुकाला अल्लामा फजले हक खैराबादी और शाह इस्माईल दैहलवी के वा हमी इखितलाफात का जाइजा का मुताला मुफीद होगा। जो माहनामा हिजाज जदीद देहली के शुमार जनवरी फरवरी 1991 ई में शाय हो चुका है।

मौलवी इस्माईल दैहवी ने अंग्रेजों के तआऊन से किराी तरह गिरोह साजी का फरीजा अन्जाम दिया इस सिलसिले में मौलाना अखरत शाहजहाँपुरी का यह खियाल काबिले तवज्जाह है फरमाते हैं।

"हकीकत यह है कि हिन्दुस्तान में फिकी साजी और

गिरोह बन्दी का संग बुनियाद अंग्रेजों ने अपनी जरूरत के तिहत मौलवी मुहम्मद इस्माईल दैहलवी से रखवाया क्योंकि मुकद्दस सर जमीन अरब में वहाबियत का फितना कामयाब साबित हो चुका था। मौसूफ़ शाह अब्दुलअजीज मुहदिदस दैहलवी (1239 हिजरी 1824 ई.) के भतीजे और शाह बलिमुल्लाह मुहदिदस दैहलवी (1176 हिजरी 1762 ई.) के पोते थे। इस खान्दान आली शान की मुल्क के गोशे गोशे और वैरुने ममालिक में भी शहरत थी।

अंग्रेजों ने इस आली शान खान्दान के वशम व चिराग शाह इस्माईल दैहलवी पर किस तरह डोर डाले और किस तरह उन्हें अपना हमनवा बनाया यह मसअला बहर हाल गौरतलब है चुकि यह संग राज की चीज थी इसलिए इस सिलसिले में हत्मी तौर पर कुछ नहीं कहा जा सकता लेकिन करीन-ए-कियास यही है कि हजरत शाह अब्दुलअजीज मुहदिदस दैहलवी के दामाद मौलवी अब्दुलहैय दैहलवी (1243 हिजरी) जो मेरेट में ऐस्टइन्डिया कमपनी के मुलाजिम थे उन्हीं की मअरफत यह मुआमला पाया तकमील को पहुँचा होगा इस सिलसिले में सालसी का फरीजा किस ने अन्जाम दिया इस से बहस नहीं बहस यह है कि हवा बड़ी जो अंग्रेज चाहते थे यानी शाह इस्माईल दैहलवी ने नया दीन राइज करने और बरतानवी मफाद की खातिर जो जीने मरने का अहोद किया था इस पर साबित कदम रहे उनकी बाकी जिन्दगी इस पर शाहिद है।

मुसलमानों में इफितराक व इन्तिशार पैदा करने के तअल्लुक से जब अंग्रेजों की गुप्तगु शाह इस्माईल दैहलवी से पक्की हो गई तो फिर शाह साहिब ने मुहम्मद इब्ने अब्दुलवहाब नज्दी की इस फिक्र की तरवीज की जिरा में कलमा गो इसानों का खून बहाना जाइज और हलाल था

और तौहीद का वही मफहूम पेश किया जो उसने सर जमीन नज्द आले सऊद की हिमायत में किया था इस तरीके तब्लीग का हिन्दुस्तानी मुसलमानों पर किया असर हुआ खुश अक़ीदा मुसलमानों पर अया है उसे बयान करने की जरूरत नहीं, बल्कि तरीका तब्लीग में शाह साहिब ने वही सारे उसूल अपनाये थे जिसे मुहम्मद अब्दुलवहाब नज्दी ने अपना कर आलम इस्लाम में अफरातफरी का माहूल पैदा किया था इसलिए हिन्दुस्तानी मुसलमानों के दरमियान इन्तिशार व इफतिराक का माहोल बन्ना लाजमी अग्र था। खान्दान के लोग मुखालिफ हो गये असातिजा ने वरहमी का इजहार किया, बुजुर्गों ने उस नज्दी अक़ीदे की नशर व इशाअत से बाज रहने की तलकीन फरमाई, मगर शाह साहब धन के इतने पक्के थे उन्होंने अपने बड़ों में किसी की एक न मानी और जो कुछ अंग्रेजों से तै हुआ था वह सब कुछ कर दिखाया। इस से जब खान्दान के लोग नाराज हो गये असातिजा ने मुँह मौड़ लिया तो फिर शाह साहिब ने अपना मिशन किस तरह आगे बढ़ाया उस राज का इन्किशाफ कबीले के एक साहिब कलम मिर्जा हैरत देहलवी ने उन लफ्जों में बयान किया है।

“आप ने सब से पहले चन्द बड़े बड़े बद मआशों के सरगनों को अपनी जादू भरी तकरीर सुना के मुरीद किया और उन्हें ऐसा मोअतकिद बनाया कि वह अपनी जान कुरबान करने पर आमादा हो गये मसलिहत उसी की मुतकाज़ी थी कि यह कारवाई की जाये क्योंकि दिन बदिन मुखालिफत की आग भडकती जा रही थी।

यह भी वह कहानी जिस के सबब मुसलमानों में इन्तिशार हुआ और रपता रपता यह मिल्लत इस्लामिया शहाबन्दी की शिकार हो गई और जिस मुहम्मद इब्ने

अब्दुलवहाब नज्दी ने सऊद की मदद और उस की मुशारिकत से सर जमीन हिजाज़ में जहनी व फिक्री इन्तिशार बर्पा किया और जंग व जदाल के जरीआ लोगों के खून बहाये ठीक उसी तरह शाहइस्माईल देहलवी ने सय्यद अहमद राय बरेलवी की मुशारिकत से जहनी व फिक्री इन्तिशार बर्पा कर के गिरोह बन्दी कराई और उन के मोअतकिद पर अमल न करने और सय्यद अहमद राय बरेलवी को अमीरुलमोमिनीन न मानने की सूरत में जिहाद का रुख सिखों की बजाये मुसलमानों की तरफ मौड़ दिया फिर किया हो इस की तफसीली शाह हुसैन गरदेज़ी की जुवानी सुनिये वह फरमाते हैं।

“अब सिखों को नज़रे अन्दाज़ कर के मुसलमानों को मुसलमान बनाने की तहरीक शुरू हुई यही से तफरीक बैनलमुस्लिमीन की इखिदा हुई मुसलमान सुन्नी वहाबी दो गिरोहों में तकसीम हो गये और मिल्लत इस्लामिया को ना कबले तलाफी नुकसान पहुँचाया

चुंकि तमाम जहनी व फिक्री इन्तिशार के मुजिद हिन्दुस्तान में शाह इस्माईल देहलवी थे इसलिए मिरातुन्नज्दिया के मुसन्निफ हजरत ताजुशरीआ शैख इस्माईल अखतर रजा खौं अजहरी ने उस मौजू पर सीरे हासिल बहस फरमाई है और कुतुब का एक तिहाई हिस्सा उन्ही नाम निहाद शुयूखा की फिक्री बे राह रवी से मुतअल्लिक है इस फिक्री बे राह रवी के इन्सेदाद के लिए उलमा-ए-हक ने जो किताबें लिखी हैं उन की तादाद मिरातुन्नज्दिया के मुसन्निफ ने 42 बताई है। मुसन्निफ ने सिर्फ तादाद की वजाहत पर ही इक्तिफा नहीं किया बल्कि मुसन्निफीन के नामों के साथ किताबों की फिहिरस्त भी पेश की है और आखिर में यह लिखा है कि यह फिहिरस्त अभी

नाकिस है क्योंकि उस में हिन्द व पाक के एलावा और दूसरे ममालिक के उलमा की तसानीफ शामिल नहीं लिखते हैं।

"بهذا الفهرس يعلم القادری ما بلغت محمد بن عبد الوهاب من البشدة وكم قاومها الكرام (جزاهم الله تعالى خيرا) من كل ناحية على ان الفهرس لم يستوعب كل من رد عليه من العلماء العرب فضلا من الاعاجم فانه لم يشتمل من رد عليه من علماء الهند وباكستان وغيرهما من البلاد"

फिर मुसन्निफ ने हैरत व इस्तिअजाब का इजहार करते हुये लिखा है कि यह किस कद्र तअज्जुब की बात है कि उलमा-ए-अहले दैवबन्द मुहम्मद इब्न अब्दुलवहाब के मजहबी अफकार व खियालात की तरदीद भी करते हैं और उसके उसूलों को अपने लिए मजहबी रहनुमा खुतूत भी समझते हैं यहाँ चुंकि बहस का मौका नहीं इसलिए उसकी तफसील से गुरेज किया जा रहा है।

किताब के आखिर में वह तमाम मजहबी मसाइल जिस में उलमा-ए-अहले सुन्नत और दूसरी मुस्लिम जमाअतों के दरमियान इख्तिलाफ है उनकी वजाहत कर के उस के सुबूत में सलफ के अकवाल पेश किए हैं सुबूत में जिन उलमा की तहरीरे पेश की हैं उन की इल्मी अजमत और फिक्री जलालत पर तमाम मुसलमानों का इत्तिफाक है। उन उलमा-ए-एलाम के अकवाल को मुख्तलिफ फीह मसाइल के तअल्लुक से पेश कर के मुसन्निफ किताब ने यह बावर कराने की कोशिश की है कि उलमा-ए-अहले सुन्नत व जमाअत (बरेलवियत) अल्लाह तआला जल्ल जलालोहु पैगम्बर-ए-इस्लाम रसूले मकबूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम और बुजुर्गाने दीन रिजवानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन के सिलसिले में जो अकीदा

रखते हैं वह कोई नया अकीदा नहीं बल्कि यही अकीदा तमाम अकाबिर उलमा-ए-अइम्मा किराम और असहाब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का था। और शेख नज्द मुहम्मद अब्दुल नज्दी के वजूद में आने से कबल शीओं के एलावा तमाम मुसलमानों के नजरियात व खियालात मजहबी एअतिबार से तकरीबन एकसाँ थे अगर कोई इख्तिलाफ था तो वह फिक्ही था जेरे बहस किताब में इस इख्तिलाफ की तारीख और उसके अस्बाब व वुजूह पर मुदल्लिल आलिमाना बहस है।

शैखुलइस्लाम ताजुशरीआ अल्लामा अखतर रजा अजहरी साहब किबला का यह अकदाम लाइक तहसीन ही नहीं बल्कि काबिले तकलीद है फाजिल बरेलवी हुज्जतुलइस्लाम वलमुस्मीन इमाम अहमद रजा कादरी की शख्सियत और उन के फिक्री खियालत को निशाना बना कर मुख्तलिफोन व मुआनिदीन हम पर एअतिराज करते हैं अगर अकाइद के मौजूअ पर लिखी गई उन की और तसानीफ को दलाइल व बराहीन और मराजअ के साथ बाजाबता ऐडट कर के अरबी ज़बान में शाय की जाये और फिर उन्हें अरब दुनिया और ख़ास तौर से वह ममालिक जहाँ उनके मुख्तलिफोन की कसरत है इरसाल की जायें तो हमारे खियाल से वह नाम निहाद उलमा जो उन के हिन्दुस्तानी ऐजेन्ट हैं और हकाइक पर पर्दा डाल कर उलमा-ए-इक के अकाइद की गलत तौजीह व ताबीर पेश करते हैं उनकी पर्दा दरी हो सकती है। मिरअतुन्नज्दिया की तबाअत में कदीम तरीका कार को अपनाया गया है इसलिए इस्तिफादा निस्बतन मुश्किल है अगर अवाइल किताब में मुदर्जात की फिहरिस्त और प्रेस रेलीज दी जाती और आवाखिर किताब में इशारा दे दिया जाता तो किताब की

इफादीयत दो बाला हो जाती। किताब के सुरूक पर किताब का नाम "मिरअतुन्नज्दिया" छपा हुआ है लेकिन दरमियान किताब के सफहात के बालाई हिस्सा पर एक तरफ इमाम अहमद रजा अलबरेलवी और दूसरे सफहा पर वसाइसुलवहाबिया फिल हिन्द वलअर्ब मरकूम है जिस से किताब का असल नाम मशकूक हो जाता है। यह किताब गालिबन बदनाम जमाना मुसन्निफ एहसान इलाही जहीर (पाकिस्तान) की किताब अलबरेलविया के जवाब में लिखी गई है इसलिए इस किताब का असल नाम मिरअतुन्नज्दिया ही ज्यादा मुनासिब मालूम होता है।

मिरअतुन्नज्दिया किताब अपने मौजूअ के एअतिबार से भरपूर है इसकिबात में उन के तमाम अकाइद व खियालात की वजाहत है जिन पर उन का अमल है और किताब व सुन्नत से मुतसादिम हैं उन में दर्ज जैल मबाहिस अहम हैं।

१- الامام احمد رضا يشهد النكير على كل من انكر عثم النبوة و

اهدان منصب الرسالة

२- تاريخ نشأة الوهابية و افكارها الزائغة

३- محمد بن عبد الوهاب ينكر الاجماع و القياس

४- الوهابية يحالفون سلفيهم في كرامات الاولياء

इन मर्कज़ी मौजूआत के तहत कई एक जैली बहसे हैं जिन के जिमन में हुजूर ताजुशरीआ ने तमाम मबाहिस का इहाता कर लिया है इसलिए किताब मतुवस्सित साइज के 173 सफहात पर फैल गई है।

सफीना-ए-बख्शिश की फ़नी और अदबी झलक

मौलाना मुफ्ती शमशाद हुसैन रज़वी, सदर मुदरिस शमसुल उलूम बदायूँ

सफीना-ए-बख्शिश अल्लामा मुहम्मद अख्तर रज़ा अजहरी साहिब का मजमूआ नअत व मन्कबत है। इस मजमूआ पर गुप्तगू करने से पहले इस बात की वजाहत ज़रूरी है कि अल्लामा मौसूफ़ किन हैं और उनकी शख्सियत किन खुबियों की मालिक है। कुन अवा मिल व जज़बात से मुतास्सिर हो कर उन्होंने ने नगमा सराई की है? तो आइये पहले उन की शख्सियत के बारे में थोड़ी सी मालूमात कर लें।

हज़ारत ताजुशरीआ साहिब किब्ला एक ऐसे खानवदा के फर्दे कामिल हैं जिन का खानदान कई सदियों से इल्म व फन, तहकीक व तन्कीद, तहज़ीब व तमददुन के एअतिबार से आला मकाम रखता है। सय्यदी मौलाना नकी अली ख़ाँ, सय्यद इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ, सय्यदी हुजूर मुफ्ती आजम, सय्यदी मौलाना हामिद रज़ा ख़ाँ, सय्यदी मौलाना इब्राहीम रज़ा ख़ाँ वगैरा इस खानदान के वह तांबन्दा व दरखिन्दा माह नज़ूम हैं जिन की पुरनुर किरनो ने मन्जिल हयात की निशान्दही और क़ौम व मिल्लत की सही कियादत की। उन बुजुर्गों की जिन्दगियाँ चाँदी की चाँदनी, फितरात शन्नम की तरह साफ़ और शफ़ाफ़ थीं। इशक व महबूबत, खुलूस व वफा, प्यार और उलफ़त उन की जिन्दगी का अजीम सरमाया था। इल्मी मैदान में उन्होंने वह जो हर दिखलाये कि आज तक अरबाबे इल्म व दानिश तबका से मुतस्सिर हैं। नीज़ अपनी शविशतानों में उन्हीं के इल्म व फन का चिराग़ जलता हुआ देख रहे हैं। वह ऐसे गुलाब थे कि सालों गुज़र जाने के बावजूद उनकी खुशबू आज भी

महसूस की जा रही है। माहिरीन नफसियात इस बात पर इतिफाक कर चुके हैं कि जो बच्चा इस खान्दान में पैदा होगा वह बहुत कुछ होगा। नई शान और नई आन दाला होगा। वरासत में इस बच्चा को बहुत कुछ मिलेगा जिन्हें वह गैर शऊरी तौर पर महसूस करेगा। यह नो मुशाहिदा की बात है कि मछली के बच्चे को कोई तैरना नहीं सिखाता है। बल्कि पैदा होते ही वह फितरी तौर पर तीरने लगता है और समन्दर की सतह पर खेल कुद शरह कर देता है। मैं इस बात को यकीन के साथ कह सकता हूँ कि अल्लामा अजहरी मियाँ साहब किबला नै इस खान्दान से ग़ासत में बहुत कुछ लिया है। बल्कि हिस्सा व अफराद लिया है। इल्म व फन, तहकीक व तन्कीद, तजजिया व तौजीह, खुलूस व प्यार, इशक व मोहब्बत, शौर व सुखन के फितरी रुजहानात और जबली मैलानात आप को वरासत में मिले हैं। इन फितरी रुजहानात को तरक्की देने और उन में इन्जलाती कैफियत बेदार करने में आप के जांती तजर्बात ने एक अहम रोल अदा किया है। घर से ले कर मदसी तक और मदसी से ले कर जामिअे अजहर मिन्न तक आप के तजर्बात फैले हुये हैं, तजर्बात की उस वुस्अत ने आप की शख्सियत में बे पनाह वुस्अत अत्ता कर दी है, यह सिर्फ हुस्न अकीदत नहीं बल्कि एक ऐसा नजरिया है जो सिर्फ मेरा ही नहीं बल्कि तमाम अरबाबे इल्म व दानिश का है मैंने हज़रत अजहरी मियाँ के बारे में जो कुछ राये काइम की हैं। जो नजरिया पेश किया है। उनके किरदार व अमल से इस नजरिया की तौसीक हो चुकी है। अगर तबअ नाजुक इर वारगिरों महसूस न हो तो उस को पढ़िये।

जो तहरीर में कल्म वन्द करने जा रहा हूँ। वह मेरी आप बीती है। कोई सुन्नी सुनाई बात नहीं है बल्कि मेरा

तजर्बा है और बहुत ही करीब से मैंने उसका मुशाहिदा किया है जामिआ हमीदिया रजविया बनारस हिन्दुस्तान में एक मशहूर व मअरुफ इदारा है जो किसी तआरुफ का मोहताज नहीं। बल्कि वह आप रौशन है और कितनों को रौशन कर चुका है खास बात सिर्फ इस कद है कि हुज़ूर शमसुलउलमा काजी शमसुद्दीन साहिब किबला जौनपुरी मुसन्निफ "कानून शरीअत" अपनी उम्र का ज़यादा तर हिस्सा इसी इदारा में गुज़ार चुके हैं। और असी दराज़ तक आप ही शैखुल हदीस रहे हैं। 1972 ई से ले कर 1981 ई तक उसी इदारा का तालिब इल्म रहा हूँ हज़रत शमसुलउलमा के दर्स व तदरीस में किया लुतफ व मजा था, किस तरह जौक व शौक मचलता था, दिल में किया किया कैफियात उम्तरी और ज़ूबती थी। जिन को हम सिर्फ महसूस कर सकते हैं। अलफाज़ की रूरत में उनका कैफियात को पेश करना जुये शेर लाने के मुतरादिफ है। हज़रत काजी साहिब हज़रत मुफ्ती मुहम्मद यामीन साहिब, हज़रत मौलाना नज्मुद्दीन साहिब व दीगर असातिजा किराम के जरीआ में बरेली से मुतआरिफ हुआ। मगर तालिब इल्म का जहिन ही किया वे परवाहला अबाली में कोई नक्श अमरा और आन वाहिद में मिट गया।

हाये गि़री दिल की अपने दाग किया है खुद सर ने

जी ही जिस के लिए जाता है उस से बे परवाह है दिल

हुस्ने इतिफाक कहिये एक दिन हम तमाम तालिबे इल्म हज़रत काजी साहिब के दर्स में मौजूद थे और हज़रत पढ़ा रहे थे कि एक बुज़ुर्ग सिफत इंसान तशरीफ लाये। काजी साहिब ने खड़े हो कर उनका इस्तिकबाल किया। आप आने वाले को अपनी मसनद पर बठाया और खुद मुअददब हो कर बैठ गये और तालिब इल्मों के जहिन व

दिमाग में किया तास्सुर उमरा? उसको मैं नहीं बता सकता। अलबत्ता मैं ने यह महसूस किया। काजी साहिब जैसी शख्सियत। अल्लाह अल्लाह उनकी इल्मी शान व शौकत का यह आलम था कि बड़े बड़े उन के सामने तिफल मकतब मालूम होते थे उनका इल्मी वकार मुस्लिम था। लेकिन आज किया हो गया कि इल्मी जाह व जलाल और फन्नी तमताराक नियाज मन्दी के सांचे में ढल गया है। अपने असातिजा में से किसी से मैंने दरयापत किया।

हजरत यह कौन है? उन्होंने जवाब दिया।

यह हजरत अजहरी मियाँ हैं उस वक्त तक नाम तो सुना था मगर देखा नहीं था फिर हजरत अजहरी मियाँ साहब ने अर्बी जवान में एक मन्कबत पढ़ी। गालिबन यह मन्कबत हजरत मुजाहिदे मिल्लत की शान में लिखी गई थी पढ़ने का लब व लेहजा इस कदर दिल कश था। अल्फाज के ज़ेर व बम में ऐसी मौजूनियत थी कि नगमा व तरन्नुम का समौं छा गया हमारे तमाम असातिजा। किराम इस मन्कबत से मुतास्सिर हुये और बुहत ज्यादा मुतास्सिर हुये यही से हजरत अजहरी मियाँ के इल्मी लियाकत का और बा कमाल सलाहियत का नक्श मेरे दिल में उभरता है।

1979 ई की बात है, मैं जमाअत राबिआ का तालिब इल्म था मदरसा हमीदिया रजविया बनारस के सालाना इम्तिहान के लिए हजरत अजहरी मियाँ साहिब तशरीफ लाये हुये थे। मिशकात शरीफ का अपने इम्तिहान लिया। मेरे इम्तिहान देने वालों में शरीक था लोगों का मेरे बारे में ख्याल था कि नाचीज तमाम तालिब इल्मों में बा सलाहियत है। खैर यह उनका हुस्न ज़न था।

हजरत अजहरी मियाँ साहिब किब्ला ने फरमाया कहीं से कोई हदीस पढ़ो, तमाम साथियों का इशारा पाते ही मैंने

वह हदीस पढ़ी जिस का मुताला मैं ख़ास तौर पर कर के आया था। हदीस तो मैंने सही ऐराब के साथ पढ़ी और तर्जमा भी कर दिया। उस के बाद हजरत ने जो सवालात इस हदीस के मुतअल्लिक किए। यह यकीन जानिये मैंने यह महसूस किया। मैं अभी तक इल्म व फन से बे बहरा हूँ। इन दो वाकिआत ने मेरे ज़ेहन व दिमाग को इस तरह मुतास्सिर किया लेकिन तासिर की बुनियाद पर उनकी इल्मी सलाहियत के बारे में कोई राय काइम नहीं की जा सकती है। इस लिए कि तालिब इल्म और उसकी हैसियत ही किया ?

अभी चन्द साल कबल कि बात है हजरत मौलाना मदनी मियाँ अशरफी साहब किब्ला ने टी वी पर दिखाई जाने वाले मुनाज़िर को मशरूत तौर पर जाइज करार दे दिया और स्क्रीन पर दिखाये जाने वाली तस्वीर को मुतहरिक और गैर कार कह कर हुरमत वाली नस से मा वरा कर दिया। इस पर अल्लामा अजहरी मियाँ ने जो इरादात काइम किये हैं जिस अन्दाज से बहस की हैं इस से मालूम होता है कि आप इल्म व फन में इन्तिहा दर्जा की दस्तर्स रखते हैं आप की इल्मी काबिलियत और सलाहियत का लोहा तमाम अरबाब इल्म व फन से तस्लीम कर लिया है और मैंने टीवी के मुतअल्लिक लिखे गये तमाम तहरीरात को मुताला करने के बाद अपनी यह राय काइम की है कि हुज़ूर मुफती-ए-आजम और इमाम अहमद रज़ा की तहरीरात की झलक आप के फतवा में मिलती है। वही शान व शौकत, वही आन बान और वही तमताराक जवान बुजुर्गों का था। वही आप की तहरीरों में नज़र आता है। शेर व सुख और अदबी जौक व शौक से भी अल्लामा अजहरी का वकार बलन्द है। बल्कि अगर यह कहा जाये तो कोई

वे जाना होगा कि शैर व शाइरी से आप को फितरी लगाओ है। शाइरी की तरफ यह फितरी रुजहान भी आप को वरासत में मिला है उस मैदान में आप ने किसी से भी बाजाबता इस्लाह नहीं ली है बल्कि दिल में उभरने वाले जजबात व एहसासों अल्फाज के पैराये में डलते गये हैं। आप की शाइरी दिल की शाइरी है। जजबात की शाइरी है ऐसी शाइरी है जिस में खून जिगर शामिल है उनका दीवान जो सफीना-ए-बख्शिश से मोसूम है। मेरे सामने मौजूद है। इस का मैंने बिलइस्तिआब मुताला किया है। इस के एक एक शैअर में कही तो जजब व कशश और दिलकश है जो दिल को मोह ले रही है। और कही जजबात की हलकी सी आंच है जो रह रह के उठती है और जिन से मीठा मीठा दर्द पैदा होता है और कही जजबात का ऐसा शौला उठता है कि दिल कबाब हो जाता है। और इस से उठने वाला धुँवा इश्क व मस्ती की ख़ाबर देता है ताजुशरीआ की शाइरी में फिक्र व तख़ील की बुलन्द परवाजी अल्फाज की सहर कारी, कैफ़ आवर लब व लेहजा और सादगी भी बताती है। उन के कलाम में यह तिनो अनासिर इस बात की निशान्दही कर रहे हैं। अल्लामा मौसूफ़ ने इमाम अहमद रजा से रफअते ख़ियाल मौलाना हसन बरेलवी से जोश व सादगी का इस्तिफादा किया है। आइये उनकी शाइरी से चन्द ऐसे इक़तबासात पेश करते हैं जिन से हमारे मज़कूर दअवों की ताईद होती है।

1- रफअते ख़ियाल से मुराद वह कुव्वत है जो पहले से मौजूद तजर्बात, मुशहिदात और एहसासों के मा बैन ऐसी तर्तीब करती है जो आम रविश से अलग हो और कारेइन् को मुतास्सिर के जिस शाइरी में ख़याल जिस कद बुलन्द होगा। उसी कद उसकी शाइरी भी बुलन्द व बाला होगी।

जब हम इस नुक्ता-ए-नज़र से हज़रत ताजुशरीआ की शाइरी का तन्कीदी जाइज़ा लेते हैं तो महसूस होता है कि उन की शाइरी में ख़याल की बुलन्दी पाई जाती है। अशहब फिक्र की ऐसी फ़रवाज़ नज़र आती है कि दिल खुश हो जाता है। रफअत ख़याल इंसान का फितरी वसफ़ है और वह शिक्म मादर से ले कर आता है। इस का इक़तसाब नहीं किया जा सकता है। हाँ यह मुम्किन है कि इक़तसाब से इस फितरी वसफ़ में अन्जुलाई कैफ़ियत तो आ जाये लेकिन अज़ सरे नो इस का इक़तसाब मुम्किन नहीं है। आइये और ताजुशरीआ की शाइरी में रफअत ख़याल की तलाश व जिस्तजु करें आप लिखते हैं।

वही जो रहमतुल्लिल आलमीन है जाने आलम है

बड़ा भाई कहे उनको कोई अंधा बसीरत का

हमारे शाइर को यह मालूम था कि सरकार अबदे करार सारी दुनिया की रहमत है और आलम की जान है गोया वह आलम और सारी काइनात को मर्कज़ है क्योंकि सारा आलम उन्हें के तुर्फ़ल में पैदा वार है। इस मालूमात में जदीद तरतीब दे कर यह ख़याल पेश किया है कि इस हैसियत को तरलीम कर लेने के बाद उन्हें भाई कहना किसी तरह जाइज़ नहीं क्यों कि यह एक नुस्ख़लमा उसूल है कि उन दो के मा बैन अख़वत का रिशता होता है जब वह दोनों एक ही हैसियत रखते हों और यहाँ ऐसा नहीं है एक को तो मर्कज़ी हैसियत हासिल है और दूसरे को नहीं। जो भाई है वह मर्कज़ नहीं बन सकता और जो मरकज़ है वह भाई नहीं उनके दोनों के मा बैन तज़ाद की निस्वत से इस के बावजूद उन्हें भाई कहना अंधी बसीरत का नतीजा तो हो सकता है लेकिन बसीरत नहीं यह ख़याल किसी कद बुलन्द है और बुलन्द होने के साथ साथ इस में जो

लताफत, पाकीजगी है वह बयान से बाहर है।

झुके न बार सदा हस्तों से क्यों बनाये फलक

तुम्हारे ज़र्र के पर तो सितार हाये फलक

यह खाक कोचा-ए-जाना है जिस के बुसा को

न जाने कब से तरस्ते हैं दीदा हाये फलक

इन अशआर को पढ़िये और बार बार पढ़िये, इन में खियाल की जो रिफअत है, जो बलन्दी है वह काबिल सद रश्क है। आम तौर पर यह खियाल किया जाता है कि आस्माँ सिर्फ इस लिए झुका हुआ मालूम होता है कि वह करवी शक्ल का है लेकिन हमारा महदूब शाइर उसकी तौजीह आम खियाल से हट कर कर रहे हैं फलक इसलिए झुका हुआ है कि उस पर मेरे सरकार के एक दो नहीं बल्कि सद एहसानात हैं। वह एहसान यह हैं कि सितार हाये फलक किया हैं। उनके जरी के पर तू हैं। गोया ज़र्र असल हैं और सितारे साया हैं। और एक तस्लीम शुदा हकीकत है कि साया उधर ही झुकता है जिधर को उसकी असल शाय होती है। फलक के सितारे इसलिए जमीन की तरफ झुके हुये हैं कि वह खाक कोचा जानों का बोसा लेना चाहते हैं और न मालूम वह कब से उस बुसा के लिए तर्स रहे हैं। उसकी कोई इब्तिदा नहीं बे ऐनेही उस खियाल को इमाम अहमद रज़ा ने इस तरह पेश किया है।

वही तो अब तक छलक रहा है वही तो जोबन टपक रहा है

नहाने में जो गिरा था पानी कटोरे तारों ने भर लिए थे

ज़र्र झड़कर तेरी पैजारों के

ताज सर बनते हैं सय्यारों के

बतौर नमूना मैंने चन्द अशआर पेश कर दिये हैं।

ताजुशरीआ साहिब के दीवान में ऐसे बहुत से अशआर हैं जिन में बुलन्द से बुलन्द खियालात पेश की गये हैं, इन

अशआर को इस दीवान में तलाश कीजिए उसका बखूबी अन्दाज़ा हो जायेगा।

2- मुताला काइनात:

बकौल जामी शाइरी की तीन शर्तें हैं। तखील, मुताला काइनात और सादगी उन में से पहली शर्त का तजकरी कदरे तफसील के साथ हो चुका है। अब रही बात मुताला काइनात की। इस मैदान में भी वह किसी से कम नहीं। उन का जहिन निहायत ही वसीअ और खिला हुआ है। मौसूफ ने काइनात के एक एक ज़र्र, गुल व बुलबुल, सद्, कमरी तबस्सुम, लताफत और पाकीजगी का मुताला किया है। फिर खियाल की आमीजिश से उस में मन्तकी तरतीब दी है जो निहायत ही फरहत अंगेज़ है और दिल में उतर जाने वाली है। नीज़ इस मुताला काइनात से जाना का जो तसव्वुर, जो खियाल पेश किया गया है वह बिल्कुल लतीफ़ तर है। आइये उसका भी जलवा देखते जायें।

वही तबस्सुम वही तरन्नुम वही निजाकत वही लताफत

वही हैं दजदीदा सी निगाहें कि जिन से शौखी टपक रही है

गुलों की खुशबू महर रही है दिलों की कलियाँ चटक रही हैं

निगाहे उठ उठ के झुक रही हैं एक विजली चमक रही है

इन अशआर में मुताला काइनात की जो जलवा नुमाई है। उसे फरामूश नहीं किया जा सकता। इन मख्तलिफ़ औसाफ़ से जो रुख जेबा तैयार हो रहा है हुसन शौख या सूरत का रम्ज़ बयान किया गया है वह निहायत ही खूब सूरत का रम्ज़ बयान किया गया है। वह निहायत ही खूब सूरत और अच्छता है जो दिल को भा जाने वाला है।

3- सादगी

कलाम में शाइरी में सादगी का होना कोई ऐब नहीं है बल्कि यह भी एक किस्म की परकारी है और हजार तस्नअ व बनावट से बेहतर है। अल्फाज की तराश खराश में मजामीन को पैचीदा दर पैचीदा बना देना कोई दानिशमन्दी नहीं है। कभी कभी सादगी भी जैवर का काम देती है।

तकल्लुफ से बुरी है हुस्न जाती

कबाये गुल में गुल बोटा कहीं है

ताजुशरीआ ने कभी भी जज्बात के बयान में खियालात के पेश करने में किसी किस्म की बनावट और तस्नअ से काम नहीं लिया है बल्कि हलके फुलके अल्फाज में उन जज्बात व खियालात को पेश कर दिया है। जिस से उनकी शाइरी में जज्ब व कशिश लफ्ज व रअनाई, शौखी बांकीन पैदा हो गया है। वह सादगी की जिस राह से गुजरते हैं तो फितरी तौर पर लोग एहसास करने लगते हैं कि इस जमीन में और हलके फुलके अल्फाज में शाइरी कोई मुश्किल नहीं मगर जब मैदान में उतरते हैं तो महसूस होता है वह सहल मुम्तनअ के मुमताज शाइर हैं कि उन की तकलीद उन के लब व लहजा की पैरवी और जौक व शौक का हुसूल इतना आसान नहीं है जितना कि वह समझते हैं।

तख्त जरी है न ताज शाह है

किया फकीराना बादशाही है

फकीर पर शान यह कि जेरे नगी
माह से ले कर करता बमाही है

इक निगाह करम से भिट जाये
दिल पर अखतर के जो सियाही है

शहिन्शाह दो आलम का करम है
मेरे दिल को मयस्सर उन का गम है

यहाँ काबू में दिल को अखतर

यह दरबार शाह उम्म है

अहले दिल ही यहाँ नहीं कोई

किया करें हाल जार की बातें

पी के जाम मोहब्बत जा नौ

अल्ताह अल्ताह खुमार की बातें

हर घड़ी वजद में रहे अखतर

कीजिए इस दिया र की बातें

वाह किया सादगी है, किया खुलूस व पैयारा है।

अल्फाज हैं कि जो निहायत ही सहल और आसान हैं जिस से दिल बाग बाग हो रहा है। जहिन व दिमाग में कैफ व सरवर का आलम है। मैंने जिन उसूल तन्कीद के तहत इस मजमूआ नअत का जाइजा लिया है इस से यह अन्दाजा हो गया होगा कि ताजुशरीआ एक फन कार शाइर हैं। एक कामयाब और फिलबदीह गो शाइर हैं। लेकिन इस हकीकत का इन्किशाफ भी जरूरी है ताजुशरीआ ऐसे शाइरों और अदीबों में नहीं हैं जो शाइरी तो करते हैं अदबी तखलीक में हिस्सा लेते हैं मगर समाज मुआशिरा और इर्द गिर्द के हालात से नावाकिफ हैं लेकिन हमारे महबूब शाइर की समाजी हालात और इर्द गिर्द के माहोल से ला तअल्लुक नहीं। बल्कि अपनी तखलीक में वह ऐसा नुस्खा कीमया पेश करते हैं जिस से समाज की इस्लाह हो सकती है। वह समाज के उयूब पर तन्ज भी करते हैं लेकिन ऐसा तन्ज जो नशरत का भी काम करे और चुभने से दर्द का भी एहसास न हो। वह दुनिया के तौर तरीके पर जिस खुबसूरती से तन्ज करते हैं जिस अछूते पैराये में बयान करते हैं इस से

दिलकशी और रानाई का पहलू नुमाया होता है। वह फरमाते हैं।

कौन होता है मुसीबत में शरीक व हमदम
होश में आया नशा सा तुझे हर दम किया है

कैफ व मस्ती में यह मदहोश जमाना वाले

खाक जानें गुम व आलाम का आलाम किया है

इन से उम्मीद वफा हाये तेरी नादानी

किया खबर उन को यह किरदार मुअज्जम किया है

वह जो हैं हम से गुरेजा तो बला से अपनी

जब यही तौर जहाँ है तो भला गुम किया है

मीठी बातों पे न जा अहले जहाँ के अखतर

अकल को काम में ला मुफलत पैहम किया है।

शाइरी सिर्फ काफिया पैमाई का नाम नहीं है।

खुबसूरत अल्फाज और शौअला बदामों जुमलों के इस्तेमाल का नाम नहीं है। बल्कि इस में हुस्न सूरत के साथ साथ हुस्न मअना भी हो। ज़ियाये लफ्ज़ी के साथ साथ ज़ियाये मअनवी भी हो। बड़े बड़े दानिशमन्दों, फलसफियों, मुदव्वरों और मुफक्किरों ने शाइरी की अजमत का ऐतिराफ किया है और उन अस्वाब की तलाश की है जिस से शाइरी में अजमत बलन्दी और तरफअ पैदा होता है। मैं सिर्फ एक फलसफी का कौल नकल कर रहा हूँ। लान जाती नस जो एक बड़े फलसफी थे और उन्होंने अदब का खुले दिल से ऐतिराफ किया है। उनके नज़दीक पाँच ऐसे अस्वाब हैं जिन से शाइरी में अजमत और तर्फी आता है। वह यह हैं।

1- ख्याल बुलन्द हो

2- सनअतों का इस्तेमाल हो

3- मेहनत और तवज्जोह से अलफाज का इन्तिखाब किया गया हो

4- जज़बात में ऐसी शिद्दत हो कि पढ़ने वाले के दिल में उतर जायें

5- लफ्ज़ों की तरतीब से हम आहिंगी जाहिर हो और नगमगी पैदा हो जो न सिर्फ कानों को भाती हो बल्कि जज़बात को भी बेदार करती हो।

किया यह तमाम अस्वाब अल्लामा अज़हरी की शाइरी में पाये जाते हैं इस सवाल का जवाब अमली तौर पर ही दिया जा सकता है। मैं इस सवाल के जवाब में कहूँ। हाँ। इस से बेहतर है कि उसका एक सरसरी जाइज़ा लेते चलें। ताकि उनकी शाइरी में अजमत के जो राज़ हाये सर बस्ता हैं वह तशत अज़बाम हो जायें इन पाँचों में से अव्वल यानी "ख्याला बलन्द हो" उसकी वज़ाहत हो चुकी है। मज़ीद इस पर गुप्तगु करना सई ला हासिल होगी।

अरबाबे इल्म व दानिश की नज़र में

मौलाना अहमद अली कादरी रजवी, बांसा शरीफ जिला बाराबंकी

(1) हुज़ूर मुफ्ती आजम हिन्द: अखतर मियाँ अब घर में बैठने का वक़्त नहीं। यह लोग जिन की भीड़ लगी हुई है कभी सुकून से बैठने नहीं देते। अब तुम इस काम को आन्जाम दो। मैं तुम्हारे सुपुर्द करता हूँ।

लोगों से मुखातिब हो कर मुफ्ती आजम ने फरमाया:

“आप लोग अब अखतर मियाँ सल्लमहु से रज़ूअ करें। उन्हीं को मेरा काइम मकाम और जानशीन जानें” (मुफ्ती आजम और उन के खुलफा जि.1स:152)

(2) हुज़ूर कुतबे मदीना: हुज़ूर कुतबे मदीना अल्लामा मुफ्ती जियाउद्दीन रजवी अलैहिर्रहमा फरमाते हैं: मुझे मेरे मुरशिद हुज़ूर आला हज़रत रदियल्लाहु तआला अन्हु से जो कुछ मिला उन के खान्वादे के शहजादों मौलाना इब्राहीम रज़ा ख़ाँ, मौलाना रैहान रज़ा ख़ाँ और मौलाना अखतर रज़ा ख़ाँ को अता कर दिया। (सवानेह कुतब मदीना)

(3) हुज़ूर सय्यदुलउलमा: हुज़ूर सय्यदुल उलमा मुफ्ती सय्यद शाह आले मुस्तफा बरकाती मारहरवी अलैहिर्रहमा ने (हुज़ूर ताजुशरीआ को) जमीअे सलासुल की इजाज़त व ख़िलाफत अता फरमाई और दुआओं से नवाजा (मुफ्ती आजम और उन के खुलफा स:162)

(4) हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत: एक साहिब की वालिदा हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत से मुरीद होना चाही तो आप ने फरमाया:

मियाँ! सरकार आला हज़रत के शहजादे हज़रत अजहरी मियाँ की मौजूदगी में ऐसा कैसा हो सकता है कि मैं मुरीद करूँ, उन्हें से मुरीद करवाइये”

दूसरी रिवायत है कि “हज़रत ने फरमाया कि मैं हज़रत अजहरी मियाँ साहब के सामने से हो कर कैसे गुजर सकता हूँ आखीर कार उकुबा दरवाजे से हज़रत अन्दर तशरीफ ले गये और फरमाते कि कोई तेज़ आवाज़ में न बोले कि हज़रत अजहरी मियाँ तशरीफ फरमा हैं। आहिस्ता बोलो शहजादे कियाम फरमा हैं” (रावी मौलाना अब्दुलमुस्तफा हशमती, रदोली शरीफ)

(5) काज़ी शमसुलउलमा: एक दिन हम तमाम तालिब हज़रत काज़ी (काज़ी शमसुलउलमा अल्लामा शमसुद्दीन रजवी, जौनपुरी, तिलमीज़ हुज़ूर सदरुशरीअ अलैहिर्मुर्हमा) साहब के दर्स में मौजूद थे और हज़रत पढ़ा रहे थे। एक बुजुर्ग सिफत इंसान तशरीफ लाये। काज़ी साहब ने खड़े हो कर उन का इस्तिकबाल किया आने वाले को अपनी मसन्द पर बठाया और खुद मुअद्दब हो कर बैठ गये और तालिब इल्मों के ज़हिन व दिमाग में किया तास्सुर उभरा? उसको मैं नहीं बता सकता। अलबत्ता मैंने महसूस किया। काज़ी साहिब जैसी शख्सियत। अल्लाह अल्लाह उनकी इल्मी शान व शौकत का यह आलम था कि बड़े बड़े उन के सामने तफ़ील मकतब मालूम होते थे अपने असातिजा में से किसी से मैंने दरयाफ्त किया, हज़रत कौन हैं फरमाया यह हज़रत अजहरी मियाँ कबला हैं। (रावी मौलाना शमशाद हुसैन रजवी बदायूँ)

(6) हुजूर अहसनुल उलमा :14/15/नोम्बर 1984 ई. को मारहरा मुत्तहरा में उर्स कास्मी की तकरीब में हजरत अहसनुल उलमा मौलाना मुफ्ती सय्यद हसन हैदर मियाँ बरकाती सज्जादा नशीन,छान्काह बरकातिया मारहरा(अलैहिर्रहमा)ने जानशीन-ए-मुफ्ती आजम का इस्तिफ़ाल काइम मकाम मुफ्ती आजम अल्लामा अजहरी जिन्दाबाद के नअरा से किया और मजमा कसीर में उलमा व मशाइख और फुज़लाव दानिशवरों की मौजूदगी में जानशीन मुफ्ती-ए-आजम को यह कह कर।

“फकीर आस्ताना आलिया कादरिया बरकातिया नूरिया के सज्जादा की हैसियत से काइम मकाम मुफ्ती आजम अल्लामा अखतर रजा खों साहिब को सिलसिला-ए-कादरिया बरकातिया नूरिया की तमाम खिलाफत व इजाजत से माज़ून व मजाज़ करता हूँ। पूरा मजमा सुन ले तमाम बरकाती भाई सुन लें और यह उलमा-ए-किराम(जो उर्स में मौजूद हैं)इस बात के गवाह रहें।”(मुफ्ती आजम और उन के खुलफा अज़ मौलाना शहाबुद्दीन रज़वी)

(7) हुजूर मुफ़स्सिर-ए-आजम हिन्द डाक्टर अब्दुलनईम अज़ीजी लिखते हैं:“वालिद माजिद मुफ़स्सिर-ए-आजम हिन्द ने अपने फरजन्द अरज़मन्द को कबले फरागत इल्म आला हजरत इमाम अहमद रजा का जानशीन बनाया एक तहरीर भी ऐनायत फरमाई।”

हजरत रहमानी मिया अलैहिर्रहमा माहनामा आला हजरत में बेउनवान कवाइफ़ दारुलउलूम में तहरीर फरमाते

हैं“बवजहे अलालत(वालिद माजिद)यह तबवकअ नहीं कि अब ज़्यादा जिन्दगी हो बिना वरी ज़रूरत थी कि दूसरा काइम मकाम हो। लिहाज़ा अखतर रजा सल्लमहु को काइम मकाम,व जानशीन आला हजरत बना दिया गया,जानशीन का अमामा बांधा गया और अबा पहनाई गई।

(8) अल्लामा तहसीन रजा खान: अलहम्दु लिल्लाह कि हजरत अल्लामा अजहरी मियाँ सल्लामा ने बावजूद गोना गों मसरूफ़ियात और अलालत तबअ इस का तर्जमा (मोअतकिद) फरमाया ताकि उसका फाइदा आम हो जाये। उस का बिलइस्तिआब मुताला तो मैं न कर सका मगर जस्ता जस्ता जिन मकामात को मैंने देखा उन से बड़ी खुशी हुई कि बहुत सलीस और बिलमुहावरा तर्जमा किया है।(अल मोअतकिद स:38)

(9) शारेह बुखारी: हजरत मुफ्ती मुहम्मद शरीफ़ूल हक़ अमजदी साबिक सद्र शौअबा अलजामिआतुल अशरफ़िया मुबारक पुर जिला आजम गढ़ जो तकरीबन ग्यारह साल तक बरेली शरीफ़ में हुजूर मुफ्ती-ए-आजम हिन्द की सर परस्ती में फतावा लिखते रहे और जिन्हें मुफ्ती आजम की उम्र ही में नाइब मुफ्ती आजम कहा और लिखा जाता रहा उन की ज़बानी राकिमुस्सुतूर ने कई बार उन का यह तासिर सुना कि“हजरत मुफ्ती आजम हिन्द को अपनी जिन्दगी के आखिरी पच्चीस सालों में जो मकबूलियत व हर दिल अज़ीजी हासिल हुई वह आप के विसाल के बाद अजहरी मियाँ को बड़ी तेज़ी के साथ इब्तिदाई सालों ही में हासिल हो गई और बहुत जल्द लोगों के दिलों में अजहरी

मियों ने अपनी जगह बना ली (अल्लामा यासीन अखतर मिसबाही)

(10) अल्लामा अरशदुलकादरी: अल्लाह तआला ने हुजूर अजहरी मियों को जबर दस्त मकबूलियत दी है। ऐसी मकबूलियत तो देखने में न आई। देखो तो सही कि अजहरी मियों को मुख्तलिफ जगह प्रोग्राम में जाना था रॉंची ऐयरपोर्ट पर उतरे फिर बजरीआ कार फलों जगह पहुँचना था मगर रॉंची में उन से मिलने के लिए हजारों मुस्ताकों की भीड़ जमा हो गई थी। जब कि रान्ची में रुकना न था। सिर्फ वहाँ गुजरना था। मगर आनन फानन इतने लोगों का इकट्ठा हो जाना बड़ी बात है। मालूम होता है कि कोई दूसरी मखलूक लोगों के कानों तक बात पहुँचा देती है और आनन फानन सब जमा हो जाते हैं। (सवी मुफ्ती आबिद हुसैन नूरी-टाटा)

(11) अल्लामा मुहम्मद मुशाहिद रजा खौं हशमती: फकीर हकीर ने किताब बनाम "टाई का मसअला" (मुसन्निफा अल्लामा अखतर रजा खौं कादरी मद जुल्लाहुलआली) बगौर व खौज मुताला किया अपने दलाइल के लिहाज से वह फतवा (अल्लामा अजहरी मियों साहब किबला का फतवा "टाई का मसअला") किसी की तस्दीक का मोहताज नहीं है। फिर भी इम्तिस्ल अग्न के लिए फकीर तस्दीक करता है। (टाई का मसअला)

(12) अल्लामा ख्वाजा मुजफ्फर हुसैन रजवी: हजरत ताजुशरीआ ने उन अहम मुवाहिद का सलीस उर्दू ज़बान में ऐसा बर जस्ता तर्जमा (अलमोअतकिदुल मुन्ताकिद) करवाया

है कि तर्जमा ही से मफहूम वाजेह हो जाता है उसके बा वजूद जा बजा पेचीदा मसाइल की ऐसी अकदा कुशाई की है कि वे इख्तियार जुबान से निक्ल पड़ता है कि यह आला हजरत और मुफ्ती-ए-आजम के फ़ैज से ताजुशरीआ ही का खास्सा है। (अलमोअतकिद स.46)

(13) अल्लामा अब्दुलहकीम शर्फ कादरी: हुजूर ताजुशरीआ से हजरत के रवाबित बहुत गहरे थे सफर पाकिस्तान के मौका पर वालिद गिरामी अलैहिर्रहमा से मसाइल शरइया पर सन्जीदा माहोल में गुप्तगु हुआ करती थी हजरत वालिद माजिद कुददुस सिरुहु हुजूर ताजुशरीआ के इल्म व फज़ल, फिक्ही बसीरत और इदीस दानी के मोअतरिफ थे। (बरिवायत डाक्टर मुन्ताज़ सदीदी)

(14) मुफ्ती-ए-आजम राजिस्थान: अल्लाह रब्बुल इज्जत ने हजरत अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद अखतर रजा कादरी अजहरी मद जुल्लाहुल आली को बे शुमार फजाइल और मुनाफिब जलीला से नवाजा है मैं आप के इल्म व फज़ल हज्म व इत्का, तस्नीफी, फिक्ही तब्लीगी खिदमात से बहुत मुतास्सिर हूँ इस वक्त आप मरज-ए-उलमा व फुवहा व मुफितयाने ऐजाम हैं अरबी अदब में आप हुजूर हुज्जतुलइस्लाम हजरत अल्लामा अश्शाह मुफ्ती हामिद रजा कादरी अलैहिर्रहमा के परतू हैं नीज हुजूर सय्यदिना आला हजरत इमाम अहमद रजा कादरी बरेलवी का आप पर खुसूसी फ़ैजान है जिस की वाजेह नजीर यह है कि एशया यूरोप की बलन्द आहिंग चोटियों पर आप की अजमतों के

परचम लहरा रहे हैं। और आप की इल्मी जलालत व शख्सी वजाहत के आगे बड़े बड़ों के सरे खम नज़र आते हैं। (मुआरिफ़ मुपती आजम राजिस्थान स:383)

(15) अल्लामा फ़ैज़ अहमद वैसी:हज़रत ताजुशरीआ ने अलमोअतकद और अलमुस्तनद का तर्जमा फरमाया फकीर ने सआदत समझ कर किताब मज़कूर का मुताला किया। उस से फकीर इल्मी तौर पर खुब मुस्तफीद हुआ। फकीर यकीन और निहायत वसूक से अर्ज़ करता है कि अवाम के लिए तो अकाइद के मुआमलात में बिला शुबह यह तर्जमा शरीफ़ रहबर व हादी है लेकिन उलमा-ए-किराम के लिए भी बेहतरीन दस्तावीज़ है। (अलमोअतकिद स:52)

(16) मुपती अब्दुल्लतीफ़ गौजरानोला:फकीर ने किताब मुस्तताब का उर्दू तर्जमा कही कही से मुलाहिजा किया अलहन्दु लिल्लाह जानशीन मुपती आजम हिन्द ताजुशरीआ हज़रतुल अल्लाम मुपती मुहम्मद अख़तर रज़ा ख़ाँ कादरी मद जुल्लाहुल आली ने बड़ी अर्क रेज़ी से यह तर्जमा फरमाया है।

यकीनन हुज़ूर ताजुशरीआ मदजुल्लाहुलआली हर हवाले से अपने आबा व अजदाद के सच्चे जानशीन हैं। अल्लाह तआला उन का साया अहले सुन्नत पर दराज़ फरमाये। (अलमोअतकिद स:66)

(17) अल्लामा अब्दुल्लाह ख़ाँ अज़ीज़ी: हज़रत अल्लामा व मौलाना मुपती मुहम्मद अख़तर रज़ा ख़ाँ साहिब कबला मदजिल्लाहुलआली, जानशीन हुज़ूर मुपती-ए-आजम हिन्द

अलैहिर्रहमा वर्रिज़वान के रिसाले मुबारका मुस्तमात(टाई का मसअला)पाके मुताला का शर्फ़ हासिल हुआ। हुज़ूर मुपती आजम हिन्द के फतवा और हज़रत मुसन्नफ़ अल्लामा के दलाइल व बराहीन से अहक़र को इन्शिराह सद्र हासिल हुआ कि टाई का इस्तेमाल करना नाजाइज़ व हराम है। मुसलमानों को उस से एहतिराज़ करना चाहिए। (टाई का मसअला 41)

(18) मौलाना सय्यद वेवैस मुस्तफ़ा वास्ती: फकीर कादरी को जानशीन मुपती आजम हिन्द हज़रत ताजुशरीआ अल्लामा अजहरी मियाँ साहब से बारहा मुलाकात का शर्फ़ हासिल होता रहता है यह मुलाकात और राबते देरीना तअल्लकुस के बाइस हैं जो ख़ान्काह बलगिराम और ख़ान्काह बरेली में हमेशा से रहा है।

मौसूफ़ को ख़ानवादा-ए-रज़वियत में वह मक़ाम हासिल है कि ताजुशरीआ और कीज़ियुलकुज़ज़ात जैसे आला ख़िताब से याद किए जाते हैं। (अलमोअतकिद स:43)

(19) अल्लामा अबुन्नसर ख़लीफ़ा कुतब मदीना:हज़रत अल्लामा अख़तर रज़ा ख़ाँ साहिब ख़ान्दान आला हज़रत के फ़ाजिल मुहविकक हैं जिन के फ़ैज़ान से एक ज़माना मुस्तफीद व मुस्तफीज़ हो रहा है अब अहले सुन्नत का यह फरीज़ा है कि वह इस किताब(अलमोअतकद)का मुताला कर के उसे दूसरों तक पहुँचाने की कोशिश करें। (अलमोअतकद स:56)

(20) मुपती नईम अख़तर नक्शबन्दी लाहूरी: हुज़ूर मुपती अख़तर रज़ा साहब को इल्मी मक़ाम का किया कहना इस

किताब(अलमोअतकद)के बारे में सिर्फ इतना ही कहूंगा कि यह किताब हजरत के अर्बी अदब पर महारत की दलील है। और यह किताब साबित करती है कि आप वाकई जानशीन -ए-मुफ्ती-ए-आजम हिन्द हैं(अलमोअतकद स.58)

(21) अल्लामा सय्यद अलवी मालिकी: जानशीन-ए-मुफ्ती -ए-आजम अल्लामा मुहम्मद अखतर रजा खा अजहरी कादरी बरेलवी दामत बरकातुहुमुलकदरिया 1407 हिजरी 1988ई. में जब हज व जियारत के लिए तशरीफ ले गये तो अल्लामा सय्यद मुहम्मद अलवी मालिकी ने अपनी तस्नीफ कर्दा किताबें एनायत फरमाये और बहुत ही कद व मन्जिलत की नज़र से देखा इमाम अहमद रजा कादरी बरेलवी के पोते होने की हैसियत से और हुज़ूर मुफ्ती-ए-आजम कुददुस सिरुहु के जानशीन की वजह से बहुत इज्जत अफजाई फरमाई और दुआइया कलिमात से नवाजा (मुफ्ती आजम और उनके खुलफा स.17)

(22) प्रोफ़ीसर मसऊद अहमद मजहरी : (इमाम अहमद रजा)के जानशीन उन के पर पोते अल्लामा अखतर रजा खाँ अजहरी हैं, बड़े मुत्तकी और आलिमे वा अमल 1983 ई में पाकिस्तान तशरीफ लाये। अज़ राह करम गरीब खाने पर ठठ भी तशरीफ लाये, एक अरबी नअत की फरमाईश की। कलम बरदाशता उसी वक्त लिख दी, उस से अन्दाजा होता है अरबी ज़बान ने इमाम अहमद रजा के घराने में घर कर रखा है, यह उसी घराने का इम्तियाज़ खास है। (उजाला स.26)

(23) शैख अबूबक्र कादरी (केरला): समाहतुलमुफ्ती हजरत

अल्लामा शैख मुफ्ती मुहम्मद अखतर रजा खाँ कादरी अलअजहरी साहिब मुतअनल्लाह बतौल हयातिलमुबारका की शख्सियत आलमे इस्लाम में मरकज़ी हैसियत रखती है आप इमाम अहले सुन्नत मुजदिददे आजम की मसनद के सच्चे जानशीन और क़ाबिले एअतिमाद मुफ्ती हैं। आप ने जामिअतुर्रजा बरेली शरीफ काइम कर के अहले सुन्नत पर एहसाने आज़ीम फरमाया है। (इक़ितास तकरीर इमाम अहमद रजा काफ़ेस बमौका उर्स रजवी)

(24) अल्लामा मुहम्मद गुफ़रान सिद्दीकी (अमरीका): फकीर हकीर गफ़रलहु आज आस्ताना-ए-आलिया रजविया हाज़िर हुआ तो हुज़ूर जानशीन सरकार मुफ्ती आजम रदियल्लाहु तआला अन्हु हुज़ूर ताजुशरीआ काज़ियुक्ज़ात हजरत अल्लामा अजहरी मियाँ साहद दानत बरकातुहुमुलआलिया की कदम बोसी नसीब हुई। सरकार मददजुल्लाहुलआली ने फताया टाई के मुतअल्लिक अता फरमाया हकीकत यह है कि हजरत ने (GROLIER ENCYLPEDIA)की असल फोटो स्टेट कापी दे कर अहले इस्लाम पर हुज्जत काइम कर दी है और फिर शरई हैसियत से जो हुक्म फरमाया है वह आप का ही हिस्सा है। मौला करीम अहले इस्लाम को अपना जाहिर और बातिन अपनी सरोकारों की तरह बनाने की तौफ़ीक़ व हिम्मत अता फरमाय। (टाई का मसअला 36)

(25) मुफ्ती मुजीब अशरफ़ रज़वी: हजरत वाला मरतबत जानशीन हुज़ूर मुफ्ती आजम हिन्द ताजुशरीआ काज़ियुलकुज़्जात अल्लामा, मौलाना अखतर रजा साहिब क़िल्बा का तहकीकी जवाब टाई के अदम जवाज़ के बारे में नज़र से गुजरा जो बिला शुबह हक़ व सवाब और दलाइल शरइया से नुबरहन है। (टाई का मसअला स.42)

(26) अल्लामा बदरुल्लाह कादरी: हालैन्ड: हालैन्ड और बलीजीम के अन्दर सिलसिला रजविया की इशाअत हो रही है। कई खानवादों को बरेली शरीफ भेज कर दाखिल सिलसिला कराया गया है। बाज लोगों ने हरमैन तय्यबैन की सर जमीन पर जानशीन मुफ्ती आजम हजरत अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद अखतर रजा खाँ कादरी दामत बरकातुहुमुल आलिया के दामन से वाबस्तगी हासिल की है और एक बार के सफर हालैन्ड के दौरान हजरत जानशीन मुफ्ती-ए-आजम ने 'कादरियत रजवियत' के अन्वार से उस खित्ता तारीक को खुद रौनक भी बखशी है।

रहे यह जारी कियामत तक उन का फैज़ आम

जहाँ में फूले फले बाग रजवी नूरी (बदर)

(ताजदारे अहले सुन्नत स225)

अखतरे कामिल है दोस्तो

फल्के रजा अखतर कामिल है दोस्तो

किस दर्जा पुर जिया है अखतर रजा की जात

जिस तरह बे मिसाल है अखतर रजा की जात

इस तरह बा कमाल है अखतर रजा की बात

चुप रह रकीब रु सियाह बद ख्वाह बद नसीब

सोने के मोल तल्ली है आखिर कहीं यह धात

नगमा रजा का गोंजे क्योंकर न धर में

फिक्र रजा की वीन है अखतर रजा की बात

अदआ-ए-शेर न इरफान शाइरी

कहदी वफूरे इश्क में अखतर रजा की बात

अज : मौलाना इरफान मशहदी(इंगलैन्ड)

हैं वह शेर रजा शाह अखतर रजा

नाइवे मुस्तफा शाह अखतर रजा
जिल्ले गोसुलवरा शाह अखतर रजा
जिस से मिलती हमको बराबर जिया
है वह रौशन दिया शाह अखतर रजा
वारिस व आशना-ए-उलूमे रजा
रब ने तुमको किया शाह अखतर रजा

गुस्ले काबा में शिरकत हुई आप की
वाह वा मरहबा शाह अखतर रजा
देखते ही जिसे भागते हैं अदू
हैं वह शेर रजा शाह अखतर रजा

शर्क में गर्व में जिस तरफ देखिये
नाम है आपका शाह अखतर रजा
सब के दिल की कली खिल उठी
पहुँचे हैं जिस जगह शाह अखतर रजा

दरमियाने मशाइख हैं मिस्ले कमर
मेरे अखतर रजा शाह अखतर रजा

खाली कासा लिये कादरी हैं खड़ा

भीख कर दो अता शाह अखतर रजा

अजःअमीरे शरीअत मुफ्ती अशफाक हुसैन कादरी देहली

वह है ताजुशरीआ हमारा

अलहे सुन्नत का दुलारा आला हजरत का है प्यारा

मुफ्ती-ए-आजम ने जिसको संवारा वह है ताजुशरीआ हमारा

मिस्र में इनकी अजमत का डंका बजा फखरे अजहर का एवार्ड इनको मिला

अहले दानिश ने माना इन्हे पेहवा गोसे आजम के सदकें वह मनसब मिला

इनके दामन में आ जाआ गोसे आजम के हो जाओ

गोस व ख्वाजा रजा का प्यारा वह है ताजुशरीआ हमारा

नाम जिनका है अखतर रजा अजहरी देखकर इन को खिलती है दिल की कली

वह शरीअत की करते हैं बल पैरवी हिन्द में चौक जफिर की कुर्सी मिली

इनकी सूरत भी हंसी है इनकी सिरत भी हंसी है

जिनका फतवा शरीअत की धारा वह है ताजुशरीआ हमारा

जिसने काबे के अन्दर नमाज है पड़ी गुस्ले काबा की खिदमत भी अन्नाम दी

मेरे मुत्सिद की काबे से इज्जत बड़ी हासिदों के दिलों में मयी खलबली

इनकी अजमत को पहचानो इन के मनसब को भी जानो

अलहे सुन्नत का है जो सहारा वह है ताजुशरीआ हमारा

गुलशाने रजवियत का जो पैगान है इन पे कुरबान सुन्नी मुसलमान है

मदद खाह अपने मुत्सिद का नोअमान है मेरे मुत्सिद का हासिद परेमान है

इनका कहना दिल से मानो इनको अपना आका जानो

आला हजरत की आखों का तारा वह है ताजुशरीआ हमारा

अजःमौलाना अबूनोअमान इसाईल रजवी मिस्वाही बहैडी

चशम-ए-फैजे रजा

खुदा आगाह मर्दे बा खुदा अखतर रजा खौ हैं

हकीकत में आशना अखतर रजा खौ हैं

बदल देता है तकदीरें इशारा जिन निगाहों का

यह वह साहिबे नज़र, वह बा सफा अखतर रजा खौ हैं

रब की रमजे ज़िन्दगी से आशना-ए-अखतर रजा

सर ता पा इश्के मुहम्मद मुस्तफा अखतर रजा

मुफ्ती-ए-आज़म के हैं काइम मकाम वह जानशीन

चशम-ए-फैजे रजा बिलवस्ता अखतर रजा

दिल शिकस्ता दर्द से बीमारे गुम के वास्ते

आप का दर है दर दारुशिफा अखतर रजा

मेरी जानिब जब हवादिस का बड़ा सेले गिरौं

आ गया लब पर मेरे बे साख्ता अखतर रजा

अज: ज़की परवाज़ रिछा ज़िला बरेली

بانی و سرپرست: قاضی القضاۃ فی الہند تاج الشریعہ جانشین مفتی عظیم ہند حضرت علامہ مفتی الحاج محمد اختر رضا قادری زہری مظلہ العالی

مرکز الدراسات الاسلامیہ جامعۃ الرضا

CENTRE OF ISLAMIC STUDIES JAMIATUR-RAZA

Markaz Nagar, CB Ganj, Bareilly Sharif- 243502 U.P. (India)



تسانیفے ہجور تاجو شریا

ہجرات کی اردو اور اربی زبان میں لکھی ہوئی جملہ
تسانیف کی ترتیب کا کام بہت تہی سے ہو رہا ہے۔ انشا
اللہ کچھ ہی ماہ میں دیڈا جیب ڈاٹل، امداد کا گز اور
خوبسورت تاباوت کے ساتھ چپ کر منجرے اام پر آ رہی ہیں۔
خواہش مند ہجرات دیے गए پتے پر رابا کا یام کریں۔

Published by

ISLAMIC RESEARCH CENTRE

58, Kasgran, Sodagan, Bareilly Sharif U.P.

Mob.: 09837549282, 09897385339, 08923721109

Website: www.alahazratbooks.com • E-mail: mravvi.razvi@gmail.com









الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ
الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حَبِيبَ اللَّهِ





HAYAT-E-TAJUSHSHARIA PDF BOOK
 Created By: Sunni Shehzada Muhammad Ameen Al-Hussaini
 & Special Thanks 2
 GHULAM-E-TAJUSHSHARIA Sheikh Irshad Ahmed Azhari Qadri

For Compliments
Contact Here:

 +917415560601

 <https://twitter.com/AmeenAlHussaini>

 <https://www.facebook.com/muhammad.alhussaini.7>

Talib-e-Dua
Sunni Shehzada
محمد أمين الحسيني

* ALLAH TA'ALA Ka Bada Karam Hai ke ALLAH TA'ALA Ne Mujhe
 APNE PYARE HABEEB TAJDAR E MADINA ﷺ ki Ummat Me Paida Farmaya
 Aur Mujhe Uss Jama'at Me Rakha Jo AASHIQ-E-RASOOL ﷺ Hai,
 AASHIQ-E-SAHABA O AHLE BAIT Hai, AASHIQ-E-AWLIA Hai,
 Aur Yeh AALA HAZRAT Ka Faiz Hai Ke Maine

JANASHEEN-E-HUZUR MUFTI-E-AAZAM AALAM-E-ISLAM WA
 NAWASA-E- HUZUR MUFTI-E-AAZAM AALAM-E-ISLAM
 HUZUR TAJUSHSHARIA MUFTI MUHAMMAD AKHTAR RAZA KHAN QADRI AZHARI
 (AZHARI MIYAN) QAZI-UL-QAZZAT FIL HIND Ki Zindagi Par Likhi Kitab
 HAYAT-E-TAJUSHSHARIA Ko PDF BOOK Me Tabdeel Kiya Taake
 Wo Hazraat Internet Par Padh Saken Jin tak Yeh Kitab Nahi Pahunch Saki Hai,

Aur Main Sheikh Irshad Ahmed Qadri Bhai Ka Shukr Guzaar Hun
 Jinhone Mujhe Yeh Kitab Tohfe Me Di Aur Phir Mujhe Yeh
 Khayal Aaya Ke Main Iss Kitab Ko Internet Ke Zariye Tamam
 AASHIQ-E-TAJUSHSHARIA Tak Pahuncha Sakoon...!

For Compliments:
 My Whatsapp : +91 7415560601
<https://www.facebook.com/muhammad.alhussaini.7>
<https://twitter.com/AmeenAlHussaini>

Dua Ka Talabgaar : Shaykh Muhammad Ameen Al-Hussaini

